भूमिका

इतिहास की यह छोटी-सी पुस्तक मिडिल सेक्शन के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् १९२३ में प्रकाशित हुआ था। उस समय इतिहास की पाठ्य पुस्तकें अधिकांश अँगरेज़ विद्वानों की बनाई हुई थीं और उनमें नई खोज का सर्वथा अभाव था। अध्यापकों और विद्यार्थियों ने इस पुस्तक को पसन्द किया और शिक्षा-विभाग ने भी उनकी राय का अनुमोदन किया। गत सात वर्षों में ऐतिहासिक गवेषणाओं-द्वारा बहुत-सी नई सामग्री एकत्र हो गई है जिससे लाभ उठाना उचित समझा गया। अध्यापकों के अनुरोध से यह पुस्तक फिर नये सिरे से लिखी गई है और विषय को सरल और मनोरंजक बनाने की चेष्टा की गई है। व्यावहारिक अनुभव से जो त्रुटियाँ इसमें पाई गई थीं वे दूर कर दी गई हैं।

थोड़े-से स्थान में ऐतिहासिक घटनाओं का स्पष्टरूप से वर्णन करना कठिन कार्य है। परन्तु यथासम्भव इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि पुस्तक के पढ़ने से बालकों की इतिहास के प्रति रुचि बढ़े और वे इसके अध्ययन से लाभ उठावें। इतिहास का उद्देश्य सत्य की खोज करना और उसे प्रकाशित करना है। भारतीय इतिहास की सामग्री उत्तरोत्तर बढ़ रही है। आधुनिक अन्वेषण ने बहुत-सी प्राचीन घटनाओं पर नया प्रकाश डाला है और अनेक धारणाओं को निर्मूल सिद्ध कर दिया है। इन सब बातों का इस पुस्तक में समावेश है। भारत की प्राचीन सभ्यता का भी काफी वर्णन किया गया है जिससे हमारे बालकों को मालूम हो कि उनके पूर्वज कैसे थे और उनके क्या आदर्श थे। मुस्लिम और ब्रिटिश काल के इतिहास का वर्णन करने में सहिष्णुता और निष्पक्षता से काम लिया गया है।

यथासम्भव भाषा इस पुस्तक की सरल रक्खी गई है और विषय को ग्राह्य बनाने की चेष्टा की गई है। तब भी यह नहीं कहा जा सकता कि पुस्तक सर्वथा दोषरहित है। जो सज्जन त्रुटियों की ओर लेखक का ध्यान आकृष्ट करेंगे उनकी बड़ी कृपा होगी।

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी
ता० ८ मार्च सन् १९३३

ईश्वरीप्रसाद

प्रस्तावना

इतिहास का उद्देश्य—एक समय था जब कि हमारे स्कूलों में इतिहास की पढ़ाई पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था। इतिहास में न अध्यापकों की रुचि थी और न विद्यार्थियों की। इतिहास की पुस्तकें भी पुराने ढङ्ग की थी। उनमे न घटनाओं का वर्णन ही सही और न उनकी भाषा ही रोचक अथवा सरल थी। परन्तु अब लोग इतिहास के महत्त्व को समझने लग हैं और हमारे शिक्षा-विभाग ने भी ऐतिहासिक ज्ञान की आवश्यकता स्वीकार कर ली है। इतिहास मानव-जाति की कथा है। इसके पढ़ने से जान पड़ता है कि मनुष्य-जाति अपनी वर्तमान दशा को किस प्रकार पहुँची है। इतिहास का ज्ञान समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जाता है। इसकी सहायता से बड़े बड़े राजनीतिज्ञ कठिन परिस्थितियों मे गलतियां करने से बचते हैं और अपने लक्ष्य पर पहुँचने में सफल होते हैं। मानव-समाज और संस्थाओं का जो रूप इस समय दिखलाई देता है वह किस प्रकार उन्हें मिला है? कालान्तर मे क्या परिवर्तन हुए हैं और उनसे देशों और राष्ट्रों को क्या लाभ अथवा हानि हुई है? इतिहास के पढ़ने का क्या उद्देश्य है? इतिहास से हमे मालूम होता है कि हमारे समाज की जिसमें हम रहते हैं, किस प्रकार उत्पत्ति और विकास हुए हैं। वर्तमान की जड़ अतीत में है। अशोक और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समकालीन हिन्दुओं के विचार और काम कैसे थे—इसके जानने की हमें यों इच्छा होती है कि जो कुछ आजकल के हिन्दू सोचते और करते हैं उसकी जड़ प्राचीन भारत में है। समाज का विकास किस प्रकार हुआ है, इस बात को जानने की प्रत्येक बालक इच्छा रखता है। उदाहरण लीजिए। एक समय था जब कि न्यायाधीश रिश्वत लेते थे, कानून कठोर थे, छोटे-

छोटे अपराधों में हाथ, पैर, नाक काट डाले जाते थे, मुकदमे बरसों चलते रहते थे, जब मनुष्य मनुष्य में भेद किया जाता था। यह सब हाल पढ़ने से हमें वर्तमान की कद्र मालूम होती है। इनके ज्ञान से हम मालूम कर सकते हैं कि हमारे शासन और समाज के दोष किस तरह धीरे-धीरे दूर हुए हैं।

इतिहास से सदाचार की भी वृद्धि होती है, महान् पुरुषों का अनुकरण करने की इच्छा बालकों में पैदा होती है। बालक स्वभाव ही से वीरतापसंद होते हैं। बहादुरी अथवा दूसरी तरह के बड़े काम उन्हें अधिक रुचिकर होते हैं। आप जानते हैं कि प्रतापी वीरों अथवा साधु-सन्तों की जीवन-कथा सुनकर वे कितने प्रसन्न होते हैं। इतिहास-द्वारा वे उन महान् पुरुषों का हाल जान जाते हैं जिनसे उनकी भेंट होने की कोई सम्भावना नहीं। चन्द्रगुप्त, अशोक, अकबर से हमारी कहाँ भेंट हो सकती है परन्तु इतिहास-द्वारा हम उनके बारे में सब कुछ जान सकते हैं। बालक इस बात को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि ये बड़े लोग किस तरह जीवन व्यतीत करते थे, समाज में ऐसा यश उन्होंने किस तरह पैदा किया। बड़े-बड़े राज्य उन्होंने कैसे बनाये और उनके प्रबन्ध के लिए क्या किया। इतिहास-द्वारा हम बड़े से बड़े महापुरुष से भी भेंट कर सकते हैं और उनके जीवन से शिक्षा ले सकते हैं। विचार-शक्ति भी इतिहास पढ़ने से बढ़ती है। बालकों से अकसर पूछा जाता है— बताओ अमुक काम का क्या नतीजा हुआ? उनसे पूछा जाता है, बताओ औरङ्गज़ेब की नीति ने किस प्रकार मुग़ल-राज्य को नष्ट कर दिया? क्या अकबर के दीन-इलाही से मुग़ल साम्राज्य को लाभ हुआ? क्या वेलेज़ली की सहायक नीति ने देशी राज्यों को दुर्बल और निकम्मा बना दिया? ऐसे प्रश्नों से बालकों की उत्सुकता बढ़ती है। उनकी विचार-शक्ति का विकास होता है। वे यह सोचते हैं कि अमुक काम करने से अमुक फल होता है। वे समझने लगते हैं कि प्रजा को सताने से राजाओं की शक्ति नष्ट हो जाती है। जिन राज्यों

लेते हैं वे बहुत दिन तक नहीं चल सकते। दासता मे देश का आर्थिक ह्रास होता है और मानव-जीवन की शान में बट्टा लगता है। धीरे-धीरे बालक इस नतीजे पर पहुँचता है कि इन बुरी बातों से बचना ही समाज और शासन दोनों के लिए श्रेयस्कर है। कार्य और कारण का सम्बन्ध जानने में इतिहास हमारी बडी मदद करता है। ऐसा करने से ऐसा परिणाम होता है यह सोचते-सोचते मनुष्य की बुद्धि बढती है और वह समझ एव दूरदर्शिता से काम लेने लगता है।

इतिहास सच्ची घटनाओं का वर्णन कर सत्य में बालकों की रुचि बढाता है और उनकी देश-भक्ति को जाग्रत करता है। स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी, गोखले, रानाडे आदि महानुभावों की देश-सेवाओं का हाल पढ़कर बालक की अनुकरण-शक्ति प्रबल होती है और वह भी उन्ही के से काम करने की इच्छा करता है। जो अपने देश के बारे मे कुछ नही जानता वह देश से क्या प्रेम कर सकता है। जिसे अपने देश की महत्ता और उसकी सभ्यता के चमत्कार का ज्ञान नही वह उसके लिए किस तरह प्राण दे सकता है। भारतीय बालक के लिए तो इतिहास का जानना और भी आवश्यक है। उसके पढने से वह जानेगा कि भारत की प्राचीन सभ्यता कैसी बढी-चढी थी और उसे फिर उन्नत दशा पर पहुँचाने के लिए उसे क्या करना चाहिए। इसके अलावा बालकों की कल्पना-शक्ति की भी इतिहास-द्वारा वृद्धि होती है। जब बालक किसी भयङ्कर प्लेग अथवा अकाल का हाल पढते हैं तो वे अनुमान कर सकते हैं कि ऐसी दुर्घटनाओं से मनुष्य-जाति को कितना कष्ट पहुँचता है। इस कल्पना-शक्ति की मदद से वे दीन, असहाय और क्षुधा-पीड़ित लोगों का आर्तनाद सुन सकते हैं। इस तरह उनके हृदय में करुणा, दया और सहानुभूति के भाव उत्पन्न होते हैं।

इतिहास की शिक्षा किस तरह होनी चाहिए—इतिहास का विषय ऐसा रोचक, शिक्षाप्रद एव उपयोगी है परन्तु इसकी पढाई पर यथोचित ध्यान नहीं दिया जाता। बहुत-से अध्यापक तो बालकों से कह देते

छोटे अपराधों के लिए हाथ, पैर, नाक काट डाले जाते थे, मुकदमे बरसो चलते रहते थे, जब मनुष्य मनुष्य में भेद किया जाता था। यह सब हाल पढने मे हमे वर्तमान की कद्र मालूम होती है। इनके ज्ञान से हमें मालूम हो सकता है कि हमारे शासन और समाज के दोष किस तरह धीरे-धीरे दूर हुए है।

इतिहास से सदाचार की भी वृद्धि होती है, महान् पुरुषों का अनुकरण करने की इच्छा बालकों में पैदा होती है। बालक स्वभाव ही से वीरोपासक होते है। बहादुरी अथवा दूसरी तरह के बडे काम उन्हे अधिक रुचिकर होते है। आप जानते है कि प्रतापी वीरों अथवा साधु-सन्तों की जीवन-कथा सुनकर वे कितने प्रसन्न होते है। इतिहास-द्वारा वे ऐसे महान् पुरुषों का हाल जान जाते है जिनमे उनकी भेंट होने की कोई सम्भावना नही। गौतमबुद्ध, अशोक, अकबर से हमारी कहाँ भेंट हो सकती है परन्तु इतिहास-द्वारा हम उनके बारे मे सब कुछ जान सकते है। बालक इस बात को जानने के लिए उत्सुक रहते है कि ये बडे लोग किस तरह जीवन व्यतीत करते थे, ससार मे ऐसा यश उन्होंने किस तरह पैदा किया। बड़े-बडे राज्य उन्होंने कैसे बनाये और उनके प्रबन्ध के लिए क्या किया। इतिहास-द्वारा हम बडे से बडे महापुरुष से भी भेंट कर सकते है और उसके जीवन से शिक्षा ले सकते है। विचार-शक्ति भी इतिहास पढ़ने से बढती है। बालकोंसे अकसर पूछा जाता है—बताओ फ़लाँ काम का क्या नतीजा हुआ ? उनसे पूछा जाता है बताओ औरङ्गज़ेब की नीति ने किस प्रकार मुगल-राज्य को नष्ट कर दिया ? क्या अकबर के दीन-इलाही से मुगल-साम्राज्य को लाभ हुआ ? क्या वेलेज़ली की सहायक नीति ने देशी राज्यों को दुर्बल और निकम्मा बना दिया ? ऐसे प्रश्नों से बालकों की उत्सुकता बढती है। उनकी विचार-शक्ति का विकास होता है। वे यह सोचते है कि अमुक काम करने से अमुक फल होता है। वे समझने लगते है कि प्रजा को सताने से राजाओं की शक्ति नष्ट हो जाती है। जिन राज्यों के अफसर रिश्वत

लेते हैं वे बहुत दिन तक नही चल सकते। दासता से देश का आर्थिक ह्रास होता है और मानव-जीवन की शान में बट्टा लगता है। धीरे-धीरे बालक इस नतीजे पर पहुँचता है कि इन बुरी बातों से बचना ही समाज और शासन दोनों के लिए श्रेयस्कर है। कार्य और कारण का सम्बन्ध जानने में इतिहास हमारी बडी मदद करता है। ऐसा करने से ऐसा परिणाम होता है यह सोचते-सोचते मनुष्य की बुद्धि बढती है और वह समझ एव दूरदर्शिता से काम लेने लगता है।

इतिहास सच्ची घटनाओं का वर्णन कर सत्य मे बालकों की रुचि बढाता है और उनकी देश-भक्ति को जाग्रत करता है। स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी, गोखले, रानाडे आदि महानुभावों की देश-सेवाओं का हाल पढ़कर बालक की अनुकरण-शक्ति प्रबल होती है और वह भी उन्ही के से काम करने की इच्छा करता है। जो अपने देश के बारे मे कुछ नही जानता वह देश से क्या प्रेम कर सकता है। जिसे अपने देश की महत्ता और उसकी सभ्यता के चमत्कार का ज्ञान नही वह उसके लिए किस तरह प्राण दे सकता है। भारतीय बालक के लिए तो इतिहास का जानना और भी आवश्यक है। उसके पढने से वह जानेगा कि भारत की प्राचीन सभ्यता कैसी बढी-चढी थी और उसे फिर उन्नत दशा पर पहुँचाने के लिए उसे क्या करना चाहिए। इसके अलावा बालकों की कल्पना-शक्ति की भी इतिहास-द्वारा वृद्धि होती है। जब बालक किसी भयङ्कर प्लेग अथवा अकाल का हाल पढते हैं तो वे अनुमान कर सकते हैं कि ऐसी दुर्घटनाओं से मनुष्य-जाति को कितना कष्ट पहुँचता है। इस कल्पना-शक्ति की मदद से वे दीन, असहाय और क्षुधा-पीडित लोगों का आर्तनाद सुन सकते हैं। इस तरह उनके हृदय में करुणा, दया और सहानुभूति के भाव उत्पन्न होते हैं।

इतिहास की शिक्षा किस तरह होनी चाहिए---इतिहास का विषय ऐसा रोचक, शिक्षाप्रद एव उपयोगी है परन्तु इसकी पढाई पर यथोचित ध्यान नही दिया जाता। बहुत-से अध्यापक तो बालकों से कह देते

हैं कि अकबर का पाठ याद कर डालो और फिर उसे ज़बानी सुनते हैं। बहुत-से इतिहास की पाठ्य पुस्तक को लेकर साहित्यिक रीडर की तरह पढ़ाते हैं जिससे बालकों पर ज़रा भी प्रभाव नहीं पड़ता। कुछ ऐसे भी हैं जो पुस्तक की भाषा को भी रटवाते हैं जिससे स्मरणशक्ति भी ख़राब हो जाती है और इतिहास का ज्ञान भी नहीं होता। अध्यापक को पढ़ाने के पहले पाठ को स्वयं ख़ूब तैयार कर लेना चाहिए। उसको स्वाध्याय-द्वारा अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए। जो अध्यापक स्वयं पूरा ज्ञान नहीं रखता वह दूसरों को क्या पढ़ा सकेगा। अध्यापक कहानी कहने में भी कुशल होना चाहिए। उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि बालक कितना समझ सकते हैं। किन बातों पर ज़ोर देने की ज़रूरत है और कौन-सी बातें ऐसी हैं जिन्हें संक्षेप से वर्णन करना चाहिए? यदि अध्यापक इस बात को नहीं जानता तो वह पढ़ाने में कभी सफल नहीं हो सकता। भाषा पर भी उसका अधिकार अच्छा होना चाहिए। जिस भाषा में वह शिक्षा देता है उसे वह अच्छी तरह लिख और बोल सकता हो। अध्यापक का काम नाटक खेलनेवालों का-सा है। जिस तरह नाटक खेलनेवाले उपस्थित जनता पर प्रभाव डालते हैं उसी प्रकार अनुभवी अध्यापक को अपने विद्यार्थियों पर प्रभाव डालना चाहिए। नये अध्यापकों को पहले-पहल बड़ी कठिनाई होती है क्योंकि वे क्लास में जाते समय अपना अधिक ख़याल रखते हैं। शिक्षक को चाहिए कि क्लास में जाकर अपने को बिलकुल भूल जाय और यह तभी हो सकता है जब उसने पाठ को ख़ूब तैयार कर लिया हो। बालकों से कभी कभी प्रश्न भी पूछने चाहिएँ जिससे पता लग जाय कि वे पाठ को समझते हैं या नहीं। इतिहास का पाठ कहानी के रूप में सरल भाषा में कहा जाय और फिर कभी कभी बालकों से प्रश्न भी पूछे जायँ। इससे उन्हें विषय पर ध्यान देना पड़ेगा। विद्यार्थियों के पास नोटबुक हों तो अच्छा है। मिडिल क्लास के लड़के नोटबुक का उपयोग कर सकते हैं। नोटबुक में नक़शे, चार्ट, तारीख़ें और लड़ाइयों

के नाम आदि होने चाहिएँ। कभी-कमी प्रश्नों के उत्तर भी [illegible]
जायँ तो लाभकारी होंगे।

तारीखें याद करनी चाहिएँ या नहीं—[illegible] अध्यापक [illegible]
कि तारीखें याद करना जरूरी है या नहीं। ऐसा देखा [illegible] पूछते हैं
कही तो बिलकुल तारीखे याद कराई ही नही जातीं और [illegible]
दो शताब्दी के अन्तर को कुछ भी नही समझते। बाज लिख [illegible]
प्लासी की लडाई १६५७ मे हुई बाज लिखते हैं १८५७ मे। कहीं-कहीं
पर तारीखें इतनी रटाई जाती हैं कि बालकों का नाक मे दम हो जाता
हैं। दोनों ही तरीके ग़लत और हानिकारी हैं। इतिहास मे मुख्य चीज़
तारीखे नही हैं, देश, जाति अथवा राष्ट्र का विकास है। इस पर
विशेष ध्यान देना चाहिए। तारीखों मे केवल बडी-बडी ही स्मरणीय
हैं। अध्यापकों को चाहिए कि ऐसा नकशा बना दे जिसमे प्रसिद्ध
तारीखे घटनाओ के साथ दर्ज हो। सही तारीखों का जानना ज़रूरी है।
कुछ लोग कहते हैं बालकों को तारीखे बताने से क्या लाभ। उनमें काल की
अनुमान-शक्ति है ही नही। यह ठीक है बालक सन् १५२६ का आज
अन्दाज़ा नही लगा सकता। परन्तु इसके साथ दूसरी तारीखों का
मुकाबिला करना सीखेगा। जब वह पानीपत की सन् १७६१ की लडाई
का हाल पढेगा तब उसे मालूम हो जायगा कि १५२६ और १७६१ मे
क्या भेद है। इतने समय मे युद्ध-कला मे क्या अदल-बदल हुआ है?
क्या नये हथियार बने? किस प्रकार सेनाओं की रणक्षेत्र में व्यवस्था
हुई और क्योंकर मराठों और देशी मुसलमानों की पराजय हुई?
तारीखों का क्रम ऊँचे दर्जों के बालकों को अवश्य जानना चाहिए।

ज़बानी पाठ की व्यवस्था—अध्यापक को अपने पाठ की इस प्रकार
व्यवस्था करनी चाहिए। मान लीजिए आज हमे बालकों को अकबर
की राजपूत-नीति बतलानी है। पाठ के विविध अंशों की इस प्रकार
व्यवस्था होनी चाहिए।

१ राजपूतों के गुण—उनकी वीरता, साहस और रण-कौशल—...

मुग़लों के पहले जो बादशाह हुए उनका राजपूतों के साथ बर्ताव—इस बर्ताव का परिणाम—देश में अशान्ति और राजविद्रोह।

२ अकबर का हिन्दुओं के साथ स्वाभाविक प्रेम और उसका पक्षपात-रहित होना—अकबर का यह समझना कि मुग़लों के राज्य की जड़ राजपूतों की मदद के बिना मज़बूत नहीं हो सकती।

३ आमेर-नरेश भारमल की बेटी के साथ अकबर का विवाह होना—इसके परिणाम—राजा भगवानदास और मानसिंह का राज्य में बड़े ओहदे पाना—अन्य राजपूतों का आमेर का अनुकरण करना— बीकानेर, जोधपुर की अकबर से साथ मित्रता—बादशाह का बराबरी का बर्ताव करना।

४ अकबर की नीति के परिणाम—राजपूतों की मित्रता और उनके द्वारा हिन्दू-जाति का राज-भक्त बन जाना—साम्राज्य की मज़बूती—राजपूतों का उसकी शान के लिए अनेक युद्धों में ख़ून बहाना—राजा मानसिंह का काबुल को जीतना—राजपूतों के साथ सम्बन्ध होने से अकबर के धार्मिक विचारों में परिवर्तन होना।

चित्र, नकशे, सिक्के और ऐतिहासिक भ्रमण—अध्यापकों को चाहिए क्लास के कमरे में ऐतिहासिक चित्र और नकशे रक्खें जिससे पाठ के समझाने में सुविधा हो। ऐसे चित्रों से बालकों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। ब्लैक-बोर्ड की भी सहायता काफ़ी लेनी चाहिए। कभी-कभी अध्यापक स्वयं भी खड़िया से चित्र बना सकते हैं। इतिहास की पढ़ाई के लिए भू-चित्रावली अर्थात् एटलस का पास रखना ज़रूरी है। विशेषतः युद्धों, किलों और शहरों के मुहासिरों को समझाने के लिए नकशों से काम लेना चाहिए। क्लास में बड़े नकशे भी मौजूद हों और कभी-कभी अध्यापकों को ख़ुद भी बोर्ड पर नकशे खींचकर पाठ की व्याख्या करनी चाहिए। सिक्के भी ऐतिहासिक घटनाओं पर अच्छा प्रभाव डालते हैं। इनके अलावा इतिहास को पाठ के अनुसार विभाजित करके चार्ट बना

देना भी लाभकारी है। ऐतिहासिक स्थानों में वालकों को प्राचीन इमारतें देखने ले जाना अच्छा है। हमारे प्रान्त मे आगरा, इलाहाबाद, कन्नौज, वनारस, इटावा, मथुरा आदि कई ऐसे शहर हैं जहाँ इतिहास की सामग्री चारों तरफ फैली हुई है। इमारतों, किलों और महलो के देखने से उस समय की कारीगरी का हाल मालूम होता है और उनके वनानेवालों की शान-शौकत का भी पता लगता है। आगरे का किला, ताजबीबी का रौजा, फतेहपुर सीकरी के महल—इनको देखकर कौन ऐसा है जो मुगलों की महत्ता को न समझे?

इतिहास की आवश्यकता—किसी भी देश की उन्नति के लिए उसके वालको की ऐतिहासिक शिक्षा का सँभालना जरूरी है। वडे-वडे विद्यार्थियो की अपेक्षा छोटे वालकों का पढाना कठिन है। यथा-सम्भव एक अध्यापक को कई विषय न पढाना चाहिए क्योंकि इससे उसकी किसी विषय मे रुचि नहीं रहती। सबके सब उसके लिए नीरस हो जाते हैं और पढाई भी उसी तरह होने लगती है जैसे मशीन का काम होता है। जब काम मे हृदय नही तो वह नीरस और निरर्थक हो जाता है। खेद है कि यूरोप के देशों की तरह हमारे देश मे भी हेड मास्टर महोदय इतिहास की शिक्षा पर यथोचित ध्यान नहीं देते। उनका ध्यान अँगरेजी भाषा और गणित-शास्त्र की ओर ही अधिक रहता है। २३-२४ वर्ष पहले जब यह लेखक स्कूल मे पढता था तब भी यही हाल था और आज भी वही है। इतिहास की बाजार मे वह कीमत नहीं हो सकती जो वैज्ञानिक अथवा उद्योग-शिक्षा की है। इतिहास एक प्रकार का साहित्य है। इसके पढने से मनुष्य व्यापारिक कौशल नहीं प्राप्त कर सकता। जिस खेत मे चार मन गेहूँ पैदा होते हैं उसमे आठ मन नहीं पैदा कर सकता परन्तु अपने सामाजिक कर्त्तव्यों को भलीभाँति जान सकता है। इसके द्वारा उसका अनुभव बढता है और उसके विचार उत्कृष्ट होते हैं। यही कारण है कि इतिहास को स्कूली शिक्षा में ऊँचा स्थान मिलना चाहिए।

विषय-सूची

विषय-सूची

भारतवर्ष का इतिहास

अध्याय १

भूगोल और इतिहास का सम्बन्ध

भारतवर्ष—हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। यह पृथ्वी के प्राचीन देशों मे से है। अन्य प्राचीन देश कभी के इस संसार से लुप्त हो गये परन्तु यह अभी तक जीवित है। प्राचीन काल मे इसका नाम आर्यावर्त अथवा आर्यों का निवासस्थान था। पुराणो के पढ़ने से पता लगता है कि प्राचीन मनुष्यों का ख़याल था कि पृथ्वी पर सात द्वीप हैं। उनमे से एक का नाम जम्बूद्वीप है। द्वीप के भिन्न भिन्न भाग 'वर्ष' कहलाते थे। हमारा देश इसी जम्बूद्वीप का एक वर्ष था। राजा भरत यहाँ राज्य करते थे। इसलिए इसका नाम भारतवर्ष हुआ। जब मुसलमान इस देश मे आये तो वे सिन्धु नदी के इस पार के देश को हिन्दुस्तान कहने लगे। सिन्धु शब्द बिगड़कर हिन्दु हो गया और हिन्दू लोगो के रहने की जगह हिन्दुस्तान अथवा हिन्द कहलाने लगा। अंगरेजी भाषा मे हिन्द का बिगड़कर 'इण्ड' हो गया और यूरोप की जातियाँ इण्ड देश को 'इण्डिया' के नाम से पुकारने लगी। मुसलमानों ने इसका नाम अपनी पुस्तकों में

हिन्दुस्तान ही लिखा है। परन्तु हिन्दुस्तान का प्रयोग उन्होंने केवल उस देश के लिए किया है जो हिमालय से विन्ध्याचल तक और पूर्व मे बङ्गाल, आसाम से लेकर पश्चिम मे सिन्ध और मुल्तान तक विस्तृत है।

जल वायु का मनुष्य पर प्रभाव—मनुष्य पर देश की आबहवा का बड़ा असर पड़ता है। ठंढे देशो के रहनेवालों की रहन-सहन, चाल-ढाल गर्म देशो के लोगो से भिन्न होती है। ठंढे देशवाले परिश्रमी, मजबूत, फुर्तीले होते है। उनका खाना पीना वेष-भूषा बिलकुल जुदी होती है। शीतकाल मे उन्हे मोटे ऊनी कपड़े पहनने पड़ते है और मांस-मदिरा का भी इस्तेमाल करना पड़ता है। गर्म देश में रहनेवालो को अधिक कपडो की जरूरत नही पड़ती और न उन्हें अपने स्वास्थ्य के लिए गर्म चीजे खानी पड़ती हैं। भारतवर्ष एक गर्म देश है। यहाँ साल में जाडे के चार महीनो को छोड़कर गर्मी पड़ती है। परन्तु यहाँ भी अनेक स्थान ऐसे है जहाँ न अधिक गर्मी पड़ती है न सर्दी—जैसे बंगाल, मध्यप्रदेश, मालवा, बम्बई और मद्रास के सूबे। पंजाब, संयुक्तप्रान्त और राजपूताना में मई और जून के महीनों में ऐसी लू चलती है कि शरीर झुलस जाता है और जाड़े में ऐसी सर्दी पड़ती है कि कभी-कभी पानी जम जाता है।

पहाडी देशों में जमीन पथरीली होने के कारण खेती-बारी की इतनी सुविधा नहीं होती जितनी मैदानों मे। परन्तु वहाँ लकड़ी, जड़ी-बूटी, जन्तु आदि बहुतायत से पाए जाते हैं और इन्हीं के द्वारा लोग अपनी जीविका चलाते हैं। पहाड़ों पर रहनेवाले मजबू

होते हैं। परन्तु ज़रा-सी भी गर्मी मे घबरा जाते है और काम नहीं कर सकते। यह कहना अनुचित न होगा कि भारत मे सब प्रकार की आबहवा पाइ जाती है। यदि एक तरफ बर्फ से ढका हुआ हिमालय पहाड़ है तो दूसरी तरफ सिन्ध का रेगिस्तान है जहाँ पानी का नाम तक नहीं। जहाँ आसाम की खासी पहाड़ियाँ है जिनमे ४०० से ५०० इञ्च तक पानी बरसता है वहाँ थार के मैदान भी हैं जिनमे वर्षा बहुत कम होती है।

सीमा—भारतवर्ष के उत्तर मे हिमालय पर्वत है जो लगभग १,४०० मील लम्बा और १९,००० फ़ुट ऊँचा है। इसकी चोटियाँ २५ से २९ हजार फुट तक ऊँची हैं। उत्तर-पश्चिम के कोने में सुलमान और हाला पहाड़ो की श्रेणियाँ हैं और उत्तर-पूर्व की तरफ भी पर्वतो की श्रेणियाँ और घने जगल हैं। पश्चिम मे अरब सागर, पूर्व मे बगाल की खाडी और दक्षिण में हिन्द महासागर है। इन समुद्रो ने भारत की बहुत काल तक रक्षा की। परन्तु जब यूरोप की समुद्री जातियाँ यहाँ आई तब यह सीमा टूट गई। इसी सीमा को तोडकर अँगरेजो ने भारत मे अपना राज्य स्थापित किया है।

हिमालय पर्वत—हिमालय पर्वत हमारे देश के उत्तर में एक पत्थर की विशाल दीवार की तरह खड़ा हुआ है। इसकी कई श्रेणियाँ हैं जो सैकड़ो मील तक चली गई हैं। इन श्रेणियो के बीच मे गहरी घाटियाँ हैं जिनमे बर्फ की नदियाँ बडे वेग से बहती हैं। इन पहाड़ो मे होकर निकलना कठिन है। सड़के न होने के कारण व्यापार भी कम होता है। व्यापारी अपना माल घोड़ो या खच्चरो पर लादकर ले जाते है। जब जाडा जोर का पड़ता है तब तो ये मार्ग

बिलकुल बन्द हो जाते है। कहा जाता है कि यही कारण है कि हिन्दुस्तान के लोग दुनिया के दूसरे देशो से अलग हो गये। भारत वासी चीन, तिब्बत, रूस आदि देशो के लोगो के साथ मेलजोल न कर सके। इसी लिए उनके आचार-विचार, व्यवहार, रीति-रवाज में इतना अन्तर हो गया है। अपने ही देश मे रहने के कारण जाति-पाँति का भेद-भाव बढ़ गया और छूत-छात के विचारो ने देश को जकड़ लिया।

इस कथन मे बहुत कुछ सचाई है। परन्तु तो भी यह नहीं समझना चाहिए कि भारत का बाहरी देशों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहा है। उत्तर की तरफ़ हिमालय पहाड मे ही कई रास्ते है जिनमे होकर मनुष्य बराबर भारत में आते-जाते रहते हैं। पामीर की श्रेणियो से गिलगिट होकर, तिब्बत से लेह होकर और पूर्व की तरफ शिकम होकर रास्ते हैं। परन्तु ये रास्ते ऐसे नहीं है कि जिनमे होकर बड़ी सेनायें आ-जा सकें अथवा मनुष्य ज्यादा तादाद मे निकल सकें। पूर्वी सीमा हमेशा सुरक्षित रही क्योंकि उधर से आने का ऐसा सुभीता नहीं था। उस रास्ते से कभी हमारे देश पर हमला नहीं हुआ।

परन्तु उत्तर-पश्चिम के कोने की पर्वत-श्रेणियो मे ऐसे दर्रे हैं जिनमे होकर प्राचीन काल से लोगों का आना-जाना हुआ है। ये हैं खैबर, कुर्रम और बोलान के दर्रे। इन्हीं दर्रों मे होकर प्राचीन काल से भारत के आक्रमणकारी आये हैं। आर्य्य, यूनानी, हूण, सिथियन, मंगोल, तुर्क, अफ़गान, सबने इन्हीं रास्तो से होकर भारत पर हमले किये और देश मे अपने राज्य स्थापित किये। इन्हीं के द्वारा हमारी प्राचीन सभ्यता का स्रोत बराबर बहता रहा और दूर-दूर देशो में उसका प्रचार

हुआ। सच तो यह है कि हिमालय पर्वत हमारे बड़े काम का है। यह बाहरी शत्रुओ से हमारी रक्षा करता है। इससे कइ बड़ी-बड़ी नदियाँ निकलती हैं जो देश को उपजाऊ बनाती हैं। बंगाल की खाड़ी से उठनेवाले बादल हिमालय से टकराकर दोआब मे जल बरसाते हैं जिससे खेती फलती-फूलती है। इसके अलावा हिमालय प्रदेश मे अनेक ऐसे शीतल स्थान हैं जहाँ लोग अपनी स्वास्थ्य-रक्षा के लिए जाते है।

क्षेत्रफल-जन-संख्या—भारतवर्ष विस्तार में रूस को छोड़कर सारे यूरोप के बराबर है। इसका क्षेत्रफल १८ लाख २ हजार वर्गमील है जिसमे ७ लाख ९ हजार वर्गमील मे देशी रियासतें आबाद हैं। भारत की जन-संख्या सन् १९३१ ई० की मर्दुमशुमारी के अनुसार लगभग ३५ करोड है जिसमें लगभग २७ करोड़ हिन्दू और ८ करोड़ मुसलमान हैं। शेष अन्य धर्मों के माननेवाले सिक्ख, जैन, यहूदी, ईसाई आदि है। संयुक्त-प्रान्त की जन संख्या सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार ४,९६,१४.८३३ है।

भारतवर्ष के तीन प्राकृतिक भाग—भारत के तीन प्राकृतिक भाग हैं।—(१) हिमालय का पहाड़ी प्रदेश। (२) आर्य्यावर्त। (३) दक्षिण।

(१) हिमालय का पहाडी प्रदेश—पहला भाग 'हिमालय प्रदेश' है। इसमें काश्मीर, नैपाल, भूटान, सिकम आदि पहाड़ी राज्य हैं। अफ़गानिस्तान की घाटियाँ और बिलोचिस्तान का रेगिस्तान भी इसमें शामिल हैं। यह प्रदेश अफ़गानिस्तान, काश्मीर से आसाम तक फैला हुआ है। इसमे अनेक ऊँची-ऊँची श्रेणियाँ हैं जो हमेशा बर्फ

स ढकी रहती है। इन्हीं पहाड़ों से भारत की बड़ी बड़ी नदियाँ निकलती हैं जो दोआब के मैदान को मालामाल बनाती हैं।

(२) आर्यावर्त—आर्यावर्त हमारे देश के उस भाग का नाम है जो हिमालय और विन्ध्याचल पर्वत के बीच में है। आर्यों का निवासस्थान होने के कारण यह आर्यावर्त कहलाता है। इसकी ज़मीन समतल और उपजाऊ है। सिन्धु, गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र और उनकी अनेक सहायक नदियाँ इसी विस्तृत क्षेत्र में बहती हैं। सिन्धु नदी १,५०० मील बहकर, सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और झेलम का पानी लेती हुई अरब सागर में गिरती है। गंगा भी १,५०० मील बहकर जमुना, चम्बल, घाघरा, गण्डक, सरयू, रामगंगा आदि नदियों का पानी लेकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसी तरह ब्रह्मपुत्र भी १,८०० मील बहकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। इन नदियों की मदद से प्राचीन समय में खेती ही नहीं व्यापार भी खूब होता था। पानी से लबालब भरी रहने के कारण इनमें नावें चल सकती थीं। इन्हीं के द्वारा माल एक सूबे से दूसरे सूबे में पहुँचता था और ज़रूरत के वक्त सेना भी पहुँचाई जाती थी।

यही कारण है कि उत्तरी भारत के बड़े-बड़े नगर सब इन्हीं नदियों के किनारों पर बसे हुए हैं। यदि कोई यात्री ईस्ट इंडिया रेलवे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सफ़र करे तो उसे सुन्दर घने आमों के बाग और अन्न से लदे हुए खेत दिखलाई देंगे। रेगिस्तान अथवा जंगल का कहीं नाम-निशान नहीं दिखाई देगा। खेती और व्यापार की सुविधा होने से इस देश में दौलत की कमी नहीं रही। जितने हमले करनेवाले भारत में आये—उन्होंने यहाँ लूटमार की और अपने

राज्य स्थापित किये। मुसलमानों ने इसी देश में पहले लूटमार की और अपना राज्य स्थापित किया।

भारत की सभ्यता को बढाने में गङ्गा नदी से बड़ी मदद मिली है। हिन्दू इसे हमेशा से पवित्र मानते आये हैं। संसार की कोई नदी इसकी बराबरी नहीं कर सकती। अधिकांश हिन्दुओं के लिए गङ्गा में स्नान करना पापों से छुटकारा पाना और उसका नाम लेना एक बड़े पुण्य का काय है। इसका कारण यही है कि गङ्गा के जल से देश की अनुपम शोभा है; अन्न पैदा होता है जिससे मनुष्यों के प्राणों की रक्षा होती है।

राजपूताना—आर्यावर्त में राजपूताना भी शामिल है। यहाँ क्षत्रियों के राज्य अब तक मौजूद हैं। यह देश रेगिस्तान है। पानी की यहाँ कमी है। रेगिस्तान ने बाहरी हमला करनेवालों से राजपूतों की रक्षा की है। मुसलमान बादशाहों ने कई बार राजपूत-राज्यों पर चढ़ाई की। परन्तु उनका आधिपत्य केवल नाम-मात्र के लिए ही रहा।

(३) दक्षिण—दक्षिण एक त्रिभुज की शकल का प्लेटो है जो विन्ध्याचल पर्वत से कुमारी अन्तरीप तक फैला हुआ है। इसके तीन तरफ़ पहाड़ हैं। पश्चिम में पश्चिमी घाट, पूर्व में पूर्वीय घाट और उत्तर में विन्ध्या और सतपुड़ा पर्वत और नर्मदा नदी। पहले वह सारा देश जो विन्ध्याचल और कुमारी अन्तरीप के बीच में है दक्षिण कहलाता था। परन्तु आजकल दक्षिण इस प्लेटो के केवल पश्चिमी भाग को कहते हैं, जिसमें निजाम का राज्य और बम्बई का अहाता शामिल है। नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, तुङ्गभद्रा आदि नदियाँ

इसमें बहती है। परन्तु गङ्गा, जमुना के साथ उनकी तुलना नहीं की जा सकती। शेष भाग तुंगभद्रा नदी से कुमारी अन्तरीप तक सुदूर दक्षिण या तामिल प्रदेश कहलाता है। अधिकांश मद्रास अहाता और मैसूर, कोचीन, ट्रावनकोर आदि रियासतें इसी के अन्तर्गत हैं। दक्षिण को विन्ध्याचल पर्वत और नर्मदा नदी उत्तरी भारत से अलग करते हैं। इसलिए वहाँ आर्य्य-सभ्यता का प्रचार होने में कठिनाई हुई। परन्तु तो भी आर्य्यों के रीति-रवाज, खान पान, आचार-विचार बहुत कुछ दक्षिण में फैल गये। मुसलमान भी दक्षिण को आसानी से न जीत सके। उनका आधिपत्य वहाँ कभी पूर्णरीति से स्थापित नहीं हुआ। इसी लिए दक्षिण पर मुसलमानों के रीति-रवाज, आचार-विचार का बहुत कम प्रभाव पड़ा।

दक्षिण में उत्तरी भारत की तरह विस्तीर्ण, समतल मैदान नहीं हैं। ज़मीन ऊँची-नीची है। विशेषकर महाराष्ट्र में जहाँ मराठे रहते हैं ज़मीन पहाड़ी है और जङ्गलों से ढकी हुई है। इन पहाड़ों में क़िले बनाना आसान था, इसी लिए १७ वीं और १८ वीं शताब्दी में मराठों ने मुगलों का खूब मुक़ाबिला किया। जलवायु का प्रभाव भी लोगों की रहन-सहन पर काफी पड़ा है। वे कष्ट से नहीं डरते और परिश्रम करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। यही कारण

तरफ से कोई भारत पर हमला नहीं हुआ था। इसलिए भारतीय शासको ने कभी इस बात का खयाल नहीं किया कि समुद्रतट की रक्षा करना भी जरूरी है। परन्तु जब अरब के मुसलमान और यूरोप के व्यापारियो ने समुद्र के रास्ते से भारत पर हमला किया तब उनको पता लगा कि केवल स्थल की लड़ाई से राज्य की रक्षा नहीं हो सकती। मुग़ल-राज्य के नष्ट-भ्रष्ट होने पर यूरोप के लोग समुद्र के मार्ग से हमारे देश मे घुस आये और उन्होने अपनी बस्तियाँ बना लीं। देश की दुर्दशा देख उन्हे राज्य बनाने की इच्छा हुई और इस प्रयत्न मे वे सफल हुए। अँगरेजो ने अपनी समुद्री शक्ति के जोर से ही पूर्वीतट पर अपना अधिकार जमाया और बंगाल को अपने क़ब्ज़े मे किया।

आज भी समुद्र के द्वारा भारत का ससार से सम्बन्ध है। विदेशो के साथ व्यापार होता है और लोग आसानी से बाहर आ-जा सकते है। जैसा पहले कह चुके है दक्षिण के दोनों ओर दो पहाड़ों की श्रेणियाँ है। इनके नाम है--पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट। पश्चिमी किनारा मलाबार और पूर्वी किनारा कारोमंडल कहलाता है। समुद्र के किनारो पर ऐसे बन्दरगाह बहुत कम है जहाँ बड़े-बड़े जहाज़ ठहर सकते है। यही कारण है कि यहाँ के निवासी यूरोप के लोगो की तरह कभी बड़े मल्लाह नहीं हुए।

भारत का ऐश्वर्य—भारत बड़ा रमणीक देश है। इसके प्राकृतिक सौन्दर्य का हम पहले वर्णन कर चुके है। इसमे अनेक पहाडों की श्रेणियाँ, नदी-नद, धन-धान्य से भरे हुए मैदान अथाह समुद्र और मरुस्थल है। यदि एक तरफ़ रेगिस्तान है जहाँ गर्मी के

इसमें बहती है। परन्तु गङ्गा, जमुना के साथ उनकी तुलना नहीं की जा सकती। शेष भाग तुंगभद्रा नदी से कुमारी अन्तरीप तक सुदूर दक्षिण या तामिल प्रदेश कहलाता है। अधिकांश मद्रास अहाता और मैसूर, कोचीन, ट्रावनकोर आदि रियासतें इन्हीं के अन्तर्गत हैं। दक्षिण को विन्ध्याचल पर्वत और नर्मदा नदी उत्तरी भारत से अलग करते हैं। इसलिए वहाँ आर्य्य-सभ्यता का प्रचार होने में कठिनाई हुई। परन्तु तो भी आर्य्यों के रीति-रवाज, खान-पान, आचार-विचार बहुत कुछ दक्षिण में फैल गये। मुसलमान भी दक्षिण को आसानी से न जीत सके। उनका आधिपत्य वहाँ कभी पूर्णरीति से स्थापित नहीं हुआ। इसी लिए दक्षिण पर मुसलमानों के रीति-रवाज, आचार-विचार का बहुत कम प्रभाव पड़ा।

दक्षिण में उत्तरी भारत की तरह विस्तीर्ण, समतल मैदान नहीं है। जमीन ऊँची-नीची है। विशेषकर महाराष्ट्र में जहाँ मराठे रहते हैं जमीन पहाड़ी है और जङ्गलों से ढकी हुई है। इन पहाड़ों में किले बनाना आसान था, इसी लिए १७ वीं और १८ वीं शताब्दी में मराठों ने मुगलों का खूब मुकाबिला किया। जलवायु का प्रभाव भी लोगों की रहन-सहन पर काफी पड़ा है। वे कष्ट से नहीं घबराते और परिश्रम करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। यही कारण है कि छोटे-छोटे टट्टुओं पर चढ़नेवाले, रूखा-सूखा भोजन करनेवाले मराठों ने मुगलों की विशाल सेना को नाकों चने चबवा दिये।

भारत का समुद्री तट—जिस तरह भारत उत्तरी सीमा में सुरक्षित है उसी तरह दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और पश्चिम की तरफ गहरे, चौड़े समुद्र उसकी रक्षा करते हैं। अँगरेजों के आने तक समुद्र की

तरफ से कोई भारत पर हमला नहीं हुआ था। इसलिए भारतीय शासकों ने कभी इस बात का खयाल नहीं किया कि समुद्रतट की रक्षा करना भी जरूरी है। परन्तु जब अरब के मुसलमान और यूरोप के व्यापारियो ने समुद्र के रास्ते से भारत पर हमला किया तब उनको पता लगा कि केवल स्थल की लडाई से राज्य की रक्षा नहीं हो सकती। मुग़ल-राज्य के नष्ट-भ्रष्ट होने पर यूरोप के लोग समुद्र के मार्ग से हमारे देश मे घुस आये और उन्होने अपनी बस्तियाँ बना ली। देश की दुर्दशा देख उन्हे राज्य बनाने की इच्छा हुई और इस प्रयत्न मे वे सफल हुए। अँगरेजो ने अपनी समुद्री शक्ति के जोर से ही पूर्वीतट पर अपना अधिकार जमाया और बंगाल को अपने कब्जे मे किया।

आज भी समुद्र के द्वारा भारत का ससार से सम्बन्ध है। विदेशो के साथ व्यापार होता है और लोग आसानी से बाहर आ-जा सकते हैं। जैसा पहले कह चुके है दक्षिण के दोनों ओर दो पहाड़ों की श्रेणियाँ है। इनके नाम है--पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट। पश्चिमी किनारा मलाबार और पूर्वी किनारा कारोमंडल कहलाता है। समुद्र के किनारो पर ऐसे बन्दरगाह बहुत कम हैं जहाँ बड़े-बड़े जहाज़ ठहर सकते हैं। यही कारण है कि यहाँ के निवासी यूरोप के लोगो की तरह कभी बडे मल्लाह नहीं हुए।

भारत का ऐश्वर्य—भारत बड़ा रमणीक देश है। इसके प्राकृतिक सौन्दर्य का हम पहले वर्णन कर चुके है। इसमे अनेक पहाडों की श्रेणियाँ, नदी-नद, धन-धान्य से भरे हुए मैदान, अथाह समुद्र और मरुस्थल है। यदि एक तरफ रेगिस्तान है जहाँ गर्मी के

मारे शरीर झुलस जाता है तो दूसरी तरफ ऐसे भी स्थान हैं ज
मनुष्य को अनुपम शीतलता और शान्ति मिलती है। शिमला, दार्
लिङ्ग, नैनीताल, आबू के पहाड़ बड़े सुन्दर हैं। यहाँ लोग हवा ख
जाते हैं। इन स्थानो मे वनस्पति तथा अद्भुत फल-फूल मिलते हैं
इनकी शोभा को बढ़ाते हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य के अलावा इस देश मे धन-दौलत की क
कमी नहीं रही। इसकी जमीन स्वाभाविक रीति से ही उपजाऊ
भारत-भूमि रत्नो का खजाना है। यहाँ धान, जूट, चाय, गेहूँ, कपा
टसर, ऊन बहुतायत से पैदा होते हैं। हीरा, सोना, चाँदी, लो
कोयला, ताँबा इत्यादि की भी खान पाई जाती हैं। और भी अ
प्रकार के कीमती पत्थर और मोती आदि मिलते है। इसी दौलत
वजह से किसी समय भारतवर्ष संसार के बड़े देशों मे गिना जाता
इसी के लालच से विदेशियों ने भारत पर बार-बार हमले किये अ
लूट-मार की। खाने-पीने की चीजो की यहाँ हमेशा सुविधा थी। इ
लिए लोगों ने धर्म, ज्ञान, शिल्प और वाणिज्य की बड़ी उन्नति क
यही कारण है कि भारत को संसार के देशों मे श्रेष्ठ स्थान मिला है

कुछ लोगो का कहना है कि अनायास जीविका मिलने के का
भारतवासी आलसी और दुर्बल हो गये और इसी लिए उन्हे
शियों ने जीत लिया। परन्तु यह बात ठीक नहीं। भारतीय सि
लड़ने में संसार की किसी जाति से कम न थे। परन्तु उनमें एकत
थी। इसी लिए वे देश की स्वाधीनता की रक्षा न कर सके।

भारत की एकता—यह सच है कि भारतवर्ष मे अ
धर्म, जाति, मत और सम्प्रदायों के लोग रहते है और जुदी-

भाषायें बोलते हैं। परन्तु तब भी इस भेद-भाव के होते हुए भारत के लोगो मे एकता मौजूद है। हिन्दुओ के प्राचीन धर्म-ग्रन्थो में भारत एक ही देश माना गया है। वेद, पुराण देश भर मे धार्मिक ग्रन्थ माने जाते है और श्रद्धा-भक्ति से पढ़े जाते है। हिन्दुओ के तीर्थ सभी प्रान्तो मे मिलते है। बदरिकाश्रम, रुद्रप्रयाग, हरिद्वार, जगन्नाथ, द्वारिका, रामेश्वरम आदि तीर्थ देश भर मे फैले हुए हैं और प्राचीन समय मे आज तक हिन्दू इनके दर्शन के लिए जाते हैं। गङ्गा, गोदावरी, हिमालय का सब जगह नाम लिया जाता है। जिन देवी-देवताओ की उत्तर मे पूजा होती है उनका दक्षिण मे भी बड़ा मान है। दिवाली, होली, जन्माष्टमी और दूसरे हिन्दुओ के त्योहार देश भिन्न-भिन्न भागो मे एक ही तरह मनाये जाते है। गृहस्थो के रिवाज, आचार-विचार मे भी अधिक भेद नही है। दक्षिण मे इतनी जातियाँ नहीं हैं जितनी उत्तरी भारत मे, परन्तु तब भी यह मानना पड़ेगा कि वर्णाश्रम धर्म का प्रचार वहाँ भी काफी है।

शासन-प्रबन्ध के लिए भी प्राचीन समय मे देश एक ही माना गया है। चन्द्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त आदि राजाओ को इतिहास में सम्राट् की उपाधि दी गई है। इनके राज्य मे भारत का बहुत-सा भाग शामिल था और अनेक राजा इन्हे अपना अधीश्वर मानते थे। मुग़ल बादशाहो के समय मे भी एकता का बिलकुल अभाव न था। अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ को भारत के अधिकांश लोग अपना सम्राट् मानते थे। आजकल यह एकता का भाव पहले से अधिक है। शिक्षा, रेल, तार और अँगरेजी शासन ने इसके बढ़ाने में बड़ी मदद की है।

अभ्यास

१—हमारे देश का नाम भारतवर्ष क्यों पड़ा ? भारतवासी हिन्दू क्यों कहलाते हैं ?

२—आबहवा का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

३—भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति का इतिहास पर प्रभाव बताओ।

४—भारत के तीन प्राकृतिक भाग कौन-कौन से हैं ?

५—क्या कारण है कि जितने बाहरी हमले हिन्दुस्तान पर हुए वे सब दोआब मे ही हुए ?

६—दक्षिण में आर्य्य-सभ्यता का उतना प्रचार क्यों नहीं हुआ जितना उत्तर में ?

७—हमारे इतिहास पर समुद्र का क्या प्रभाव पड़ा है ?

८—भारतवर्ष में मौलिक एकता पाई जाती है। इस कथन की उदाहरण देकर व्याख्या करो।

अध्याय २

भारत के प्राचीन निवासी

प्राचीन इतिहास—भारत का प्राचीन इतिहास आर्य्यों के आने से आरम्भ होता है। परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि आर्य्यों के पहले यहाँ कोई रहता ही न था और न कोई सभ्यता थी। आजकल पुरानी चीजो की खोज हो रही है, जिससे लगता है कि आर्य्यों के आने से पहले भी हमारे देश में द्रविड़ जाति के लोग रहते थे। वे सभ्य थे और उनका जीवन इतिहास में वर्णन करने के योग्य है। उनका हाल हम तुम्हे आगे चलकर बतायेंगे।

पाषाण-काल—मनुष्य एकदम सभ्य नहीं हो गया है। वह अपनी वर्तमान दशा को धीरे-धीरे पहुँचा है। द्रविड़ भारत के आदि-निवासी नहीं थे। उनके पहले भी यहाँ ऐसे लोग रहते थे, जो सभ्य नहीं थे। ये मनुष्य पाषाण (पत्थर) काल के मनुष्य कहलाते है। इनका रंग काला, कद छोटा, शरीर पर ऊन जैसे बाल थे। ये जङ्गलो में कन्द, मूल, फल खाकर रहते थे और मछली आदि दूसरे जानवरों का शिकार कर जीवन-निर्वाह करते थे। खेती-बारी का उन्हें ज्ञान नहीं था। धातु का प्रयोग वे नहीं जानते थे। उनके औजार पत्थर के होते थे। इसलिए उन्हे पाषाण-युग के मनुष्य कहते हैं। वे आग पैदा करना भी नहीं जानते थे।

जाति के हैं। कालान्तर मे बहुत-सी जातियाँ हिन्दुस्तान मे आईं और मिल-जुलकर एक हो गईं। साधारण तौर पर हम हिन्दुस्तान के लोगों को तीन जातियो मे विभाजित कर सकते हैं। एक तो वे लम्बे, गोरे, सुडौल लोग जो आर्य्यों के नाम से प्रसिद्ध हैं और जिनके वंशज उच्च श्रेणी के हिन्दुओ मे काश्मीर, पंजाब आदि देशों मे पाये जाते है। दूसरे वे काले, कुरूप, चपटी नाकवाले जो द्रविड़ों की सन्तान हैं और जंगल मे पाये जाते है। बंगाल, दक्षिण, छोटा नागपुर आदि प्रदेशा मे अब भी बहुत-से ऐसे लोग हैं जो द्र... की सन्तान है। तीसरे पीले रंग के लोग जो ब्रह्मा, तिब्बत, भूटान, नैपाल और हिमालय की तराइ मे पाये जाते है। ये मंगोल जाति के वंशज हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया ये जातियाँ एक दूसरी से मिल गईं। आर्य्यों का द्रविड़ो के साथ सम्पर्क होने पर आर्य्य-सभ्यता का भी उन लोगो पर प्रभाव पड़ा। परन्तु दक्षिण में द्रविड़ों का प्रभाव बहुत रहा। अब भी उत्तरी भारत और दक्षिण के लोगों के रीति-रवाज में बहुत बड़ा अन्तर दिखाइ देता है।

हिन्दुस्तान में आर्य्यों के बाद और भी अनेक जातियाँ बाहर से आईं। जैसे शक, कुशान, श्वेतहूण आदि, जो आर्य्यों मे खप गईं और जिन्होने हिन्दू-धर्म स्वीकार कर लिया। मुसलमान ... जाति के थे। परन्तु भारत मे आने पर उनका भी अन्य जातियों के साथ बहुत कुछ सम्मिश्रण हो गया।

हरप्पा और मोहिनजोदड़ो की खोज—हरप्पा और मोहिन-जोदड़ो में जो खुदाई हुई है उसने हमारे इतिहास पर एक प्रकाश डाला है। हरप्पा पंजाब के मांटगोमरी ज़िले में लाहौर

मोहिंजोदड़ो के खँडहर

मुलतान के बीच रेलवे लाइन के पास एक गाँव है। मोहिन्जोदड़ो सिन्ध में लारकाना जिले मे एक स्थान है। यह हरप्पा से ४५० मील के लगभग है। सिन्धी भाषा मे इसका अर्थ है "मोहिन का टीला"। इन दोनो स्थानो पर थोडे दिन हुए कइ नगर खोदकर निकाले गये हैं। इस खुदाई मे जो चीज मिली है उनसे अनुमान किया जाता है कि आज से ५ हजार वर्ष पहले भी मुलतान और सिन्ध मे सभ्य मनुष्य बडे-बडे नगर, सुन्दर मकान, तालाब, सड़कें, मन्दिर बनाकर रहते थे और सुख से अपना जीवन व्यतीत करते थे। यूरोप के विद्वानो की राय है कि ऐसे नगर प्राचीन मिस्र और बाबुल (बेबीलन) देशो मे भी न थे।

मोहिन्जोदड़ो में जो नगर खोदने से मिले हैं उनमें पक्की ईंटो के मकान बने हुए हैं। मन्दिरो के चिह्न भी पाये जाते हैं। ढकी हुई नालियाँ मिलती हैं जिनके जरिये से शहर का पानी बाहर निकाला जाता होगा। एक तालाब मिला है जो ३९ फ़ुट लम्बा और २३ फ़ुट चौड़ा है। उसके चारो तरफ़ दालान हैं और नीचे उतरने के लिए सीढियाँ हैं। मकानो और दूकानो के भी काफ़ी निशान मौजूद हैं, जिनसे अनुमान होता है कि इन नगरो मे रहनेवाले धनी थे।

हरप्पा मे भी ऐसी ही चीजे देखने मे आती हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि यहाँ जो लोग रहते थे उनकी पोशाक सादी थी। उच्च श्रेणी के मनुष्य केवल दो कपड़े पहनते थे। एक धोती और दूसरा दुशाला जिसे वे सीधी बाँह के नीचे होकर बायें कन्धे पर डालते थे, छोटी जातियो के लोग क़रीब-क़रीब नंगे रहते थे। स्त्रियाँ एक छोटी-सी धोती पहनती थीं। आदमी छोटी दाढ़ी रखते थे और कभी-कभी

मुलतान के बीच रेलवे लाइन के पास एक गाँव है। मोहिनजोदड़ो सिन्ध मे लारकाना जिले में एक स्थान है। यह हरप्पा से ४५० मील के लगभग है। सिन्धी भाषा मे इसका अर्थ है "मोहिन का टीला"। इन दोनो स्थानो पर थोडे दिन हुए कइ नगर खोदकर निकाले गये हैं। इस खुदाइ मे जो चीज मिली है उनसे अनुमान किया जाता है कि आज से ५ हजार वर्ष पहले भी मुलतान और सिन्ध में सभ्य मनुष्य बडे-बड़े नगर, सुन्दर मकान, तालाब, सड़कें, मन्दिर बनाकर रहते थे और सुख से अपना जीवन व्यतीत करते थे। यूरोप के विद्वानो की राय है कि ऐसे नगर प्राचीन मिस्र और बाबुल (बेबीलन) देशो मे भी न थे।

मोहिनजोदड़ो में जो नगर खोदने से मिले हैं उनमें पक्की ईंटो के मकान बने हुए हैं। मन्दिरो के चिह्न भी पाये जाते हैं। ढकी हुई नालियो मिलती हैं जिनके जरिये से शहर का पानी बाहर निकाला जाता होगा। एक तालाब मिला है जो ३९ फ़ुट लम्बा और २३ फ़ुट चौड़ा है। उसके चारो तरफ़ दालान हैं और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ है। मकानो और दूकानो के भी काफ़ी निशान मौजूद हैं, जिनसे अनुमान होता है कि इन नगरो मे रहनेवाले धनी थे।

हरप्पा मे भी ऐसी ही चीजे देखने में आती हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि यहाँ जो लोग रहते थे उनकी पोशाक सादी थी। उच्च श्रेणी के मनुष्य केवल दो कपड़े पहनते थे। एक धोती और दूसरा दुशाला जिसे वे सीधी बाँह के नीचे होकर बायें कन्धे पर डालते थे, छोटी जातियो के लोग क़रीब-क़रीब नंगे रहते थे। स्त्रियाँ एक छोटी-सी धोती पहनती थीं। आदमी छोटी दाढ़ी रखते थे और कभी-कभी

था। इसके बाद वानप्रस्थाश्रम आरम्भ होता था जिसमें घर-बार छो
कर वन में रहकर मनुष्य आत्मा की खोज में तत्पर हो जाता थ
इस आश्रम में जानेवाले कभी-कभी अपनी स्त्रियों को भी साथ
जाते थे। ये लोग कम बोलते थे, देश में घूमते थे और भिक्षा मां
कर जीवन-निर्वाह करते थे। चौथा आश्रम संन्यास का था। इस
मनुष्य वन में रहकर तपस्या करते थे। संन्यासियों को गांव
भीतर जाने की आज्ञा न थी। वे कपड़ों की जगह चमड़ा अथवा
की छाल से अपने शरीर को ढक लेते थे और कन्द मूल-फल ख
जीवन-निर्वाह करते थे।

ब्रह्मचर्य आश्रम के समाप्त होने पर मनुष्य को अधिकार था
वह चाहे जिस आश्रम में जाय परन्तु मनुष्य एक के बाद दूस
आश्रम में प्रवेश करते थे।

जातियों का विकास—पहले कह चुके हैं कि वैदिक काल
भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण थे। परन्तु उनमें विवाह अथ
खान-पान होता था। किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं थी। मनुष्य अप
वर्ण बदल भी सकते थे। परन्तु कुछ समय के बाद शूद्रों का दर्जा छो
हो गया। लोग उनसे घृणा करने लगे और विवाह आदि के कड़े नि
बनने लगे। यज्ञों में शामिल होने का उन्हें अधिकार नहीं रहा य
तक कि अग्नि पर चढ़ाने के लिए गाय का दूध दुहने की भी
आज्ञा न रही। वर्ण-भेद बढ़ने लगा और धीरे-धीरे रंग, रूप, व्य
साय के अनुसार बहुत-सी नई जातियाँ बन गईं। इनमें खान-पा
विवाह आदि का कुछ भी सम्बन्ध न रहा और एक जाति के
दूसरे जातिवालों से अपने को अलग समझने लगे। जाति की स

भारत मे एक विचित्र चीज़ है। इतनी जातियाँ दुनिया के किसी दूसरे देश मे नहीं पाई जातीं।

जाति-भेद ने हमारे देश की उन्नति में बड़ी बाधा डाली है। एकता का अभाव इसी का परिणाम है। लोग अपनी जाति के हित का ख्याल करते है; देश का नहीं। प्रत्येक जाति का पेशा अर्थात् कारबार नियत है। जो मनुष्य जिस जाति में पैदा हुआ है वह उसी के काम को करता है। यही कारण है कि बहुत-से योग्य मनुष्य जिस दशा में हैं उसी में रह जाते हैं और उन्नति नही कर पाते। जाति के बन्धन के कारण लोग व्यापार अथवा विद्या पढ़ने के लिए विदेशो में नहीं जा सकते और अपनी बुद्धि का जौहर नहीं दिखा सकते।

समाज की दशा—जैसा पहले कह चुके हैं आर्यों के धर्म में अदल-बदल हो गया था। कई नये देवताओं की पूजा होने लगी थी। जातियो की संख्या बढने लगी और उनका बन्धन भी कठिन हो गया। वेदों का पढ़ना ब्राह्मणों के ही हाथ मे था इसलिए वे ही समाज मे बड़े समझे जाने लगे। शूद्रो की दशा पहले से खराब हो गई। वे नीचे समझे जाने लगे।

स्त्रियो का दर्जा पहले से ऊँचा हो गया। शिक्षा का भी उनमे खूब प्रचार था। गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियाँ ऋषियों के साथ सभा में बैठकर शास्त्रार्थ करती थीं और उनके गूढ प्रश्नो का उत्तर देती थीं।

आर्यों ने खेती मे भी उन्नति की। वे अनेक प्रकार के अनाज पैदा करने लगे और दस्तकारी की तरफ भी उन्होंने ध्यान दिया। सोने-चांदी के जेवर, मिट्टी के बर्तन, रथ, नाव, रङ्ग, कपड़े तरह-तरह

के बनने लगे और लोगों ने जीविका कमाने के लिए बहुत-से नये रोज़गार निकाल लिये। गोश्त खाना और शराब पीना बुरा समझा जाने लगा।

राजाओं की शक्ति इस काल में अधिक हो गई। वे बड़े-बड़े साम्राज्य बनाने की इच्छा करने लगे जैसा कि राजसूय और अश्वमेध यज्ञों से प्रकट होता है।

विद्या की उन्नति—इस काल में विद्या की बड़ी उन्नति हुई। सूत्र इसी समय बने। पाणिनि ने व्याकरण का अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ बनाया जो आज तक हमारी संस्कृत की पाठशालाओं में पढ़ाया जाता है। रामायण और महाभारत के मूल ग्रन्थ भी इसी काल में रचे गये। गणित में शून्य का आविष्कार आर्य्यों ने किया और उनसे अरबवालों ने सीखा। यज्ञ की वेदियाँ बनाते-बनाते आर्य्यों को वर्ग-क्षेत्र, वृत्त, त्रिभुज आदि का भी ज्ञान हुआ।

रोगों की उत्पत्ति पर भी उन्होंने विचार किया और चिकित्सा के उपाय निकाले। गाने-बजाने में वे पहले ही से निपुण थे। सामवेद के मंत्र यज्ञ के समय गाये जाते थे और साथ-साथ बाजा भी बजाया जाता था।

अभ्यास

१—उत्तर वैदिक काल किसे कहते हैं?
२—इस काल में वैदिक धर्म में क्या अन्तर हो गया था?
३—राजसूय और अश्वमेध यज्ञों के करने का क्या अभिप्राय था?
४—आर्य्यों के चार आश्रम कौन-कौन से हैं? उनका वर्णन करो।
५—भारतवर्ष में इतनी जातियाँ कैसे बनीं? इनके बढ़ने से क्या हानि हुई है?
६—उत्तर वैदिक काल में समाज की क्या दशा थी?
७—इस काल में आर्य्यों ने विद्या में क्या उन्नति की? उनके बनाये हुए प्रसिद्ध ग्रन्थों के नाम बताओ।

कुरुक्षेत्र की लड़ाई

वेद कहते है। इसके बनानेवाले वेदव्यास मुनि कहे जाते है। म
भारत के मूल ग्रन्थ मे तो २४ हजार श्लोक थे परन्तु कालान्त
विद्वान् इनकी संख्या बढ़ाते गये यहाँ तक कि अब उसमे १०
श्लोक से भी अधिक हैं। यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि
दोनो ग्रन्थ कब बने। परन्तु हिन्दू लोग यह मानते हैं कि रामाय
महाभारत से पहले का है। यूरोप के विद्वानो का कहना है कि
महाभारत का मूल ग्रन्थ ईसा के ५०० वर्ष पहले रचा गया होगा और
ईसा की मृत्यु के ४००-५०० वर्ष बाद तक विद्वान् इसे बराबर बढ़ा
रहे। महाभारत मे कौरव और पाण्डवो के महायुद्ध का वर्णन है।

रामायण भी हिन्दुओं का एक आदरणीय ग्रन्थ है। इसके
रचयिता वाल्मीकि ऋषि कहे जाते है। इसमे प्राचीन आर्यों के
आदर्श का वर्णन है। इसका रचना-काल भी यूरोप के विद्वान् ईसा
के ५०० वर्ष पहले से सन् ५०० ईसवी तक मानते हैं। रामायण में
जिस समाज का चित्र है वह महाभारत के समाज से कहीं अच्छा है।
यदि रामायण मे धर्म, कर्त्तव्यपालन और भक्ति का वर्णन है तो
महाभारत मे ईर्ष्या, द्वेष, कलह, कपट और भीषण युद्ध का। रामायण
की एक पुस्तक हिन्दी मे भी है जिसे रामचरितमानस कहते हैं। इसको
गोस्वामी तुलसीदास जी ने अकबर बादशाह के समय में बनाया था।

महाभारत की कथा—आधुनिक दिल्ली के पास प्राचीन
समय मे हस्तिनापुर नाम का राज्य था। यहाँ चन्द्रवंशीय क्षत्रिय
राजा राज्य करते थे। इन्हीं मे एक राजा विचित्रवीर्य हुए जिनके दो
पुत्र थे—धृतराष्ट्र और पाण्डु। धृतराष्ट्र बड़े और जन्म के अन्धे थे,
इसलिए पाण्डु ही हस्तिनापुर के राजा बनाये गये। पाण्डु के पाँच

पुत्र थे—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। युधिष्ठिर सबसे बड़े थे और सत्यवादी थे। भीम और अर्जुन अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। दुर्योधन सबसे बड़ा था। पाण्डु के बेटे पाण्डव और धृतराष्ट्र के कौरव कहलाते थे। बचपन में सब भाइयो ने साथ-साथ शिक्षा पाई, परन्तु आपस में ईर्ष्या-द्वेष का भी आरम्भ हो गया।

धृतराष्ट्र का बड़ा लड़का दुर्योधन पाण्डवो से द्वेप रखता था और सदा उन्हें नीचा दिखाने का उपाय सोचा करता था। उसने एक बार पाण्डवो को लाख के मकान मे ठहराकर जला देने की कोशिश की परन्तु उन्हे पहले ही से इसका पता लग गया और वे बाहर निकल कर चले गये।

जब पाण्डव जंगल में घूम रहे थे उन्हे खबर मिली कि पांचाल देश के राजा द्रुपद की बेटी द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है। राजा द्रुपद ने प्रण किया था कि जो बाँस के ऊपर नाचती हुई मछली को नीचे तेल मे परछाईं देखकर मारेगा उसी के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दूंगा। अर्जुन ने निशाना मार दिया और द्रौपदी के साथ उसका विवाह हो गया। जब पाण्डव घर लौटे तो धृतराष्ट्र ने उन्हें आधा राज्य दे दिया और वे इन्द्रप्रस्थ मे रहने लगे।

युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया परन्तु दुर्योधन यह सब कैसे सह सकता था। उसने अपने मामा शकुनि की सलाह से युधिष्ठर को जुआ खेलने के लिए बुलाया। जुए में युधिष्ठिर अपना राज-पाट, धन-धाम सब कुछ हार गये। शर्त के अनुसार उन्हे भाइयों के साथ १३ वर्ष वन मे रहना पड़ा।

तेरह वर्ष बीतने पर जब घर लौटे तो पाण्डवों ने दुर्योधन से अपना राज्य माँगा। परन्तु उसने उत्तर दिया कि युद्ध किये बिना तो सुई की नोक के बराबर भी ज़मीन नहीं दूँगा। श्रीकृष्ण ने उसे बहुत समझाया परन्तु उसने एक न सुनी। अन्त में थानेश्वर के पास कुरुक्षेत्र के मैदान में १८ दिन तक भीषण संग्राम हुआ जिसमें सारे भारतवर्ष के राजा सम्मिलित हुए। कौरवों के लाखों योद्धा मारे गये और उनका सर्वनाश हो गया।

युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा हो गये परन्तु थोड़े दिन बाद वे भी अपने भाइयों के साथ हिमालय की तरफ़ बर्फ़ में गलने चले गये।

भगवद्गीता—भगवद्गीता का तुमने ज़रूर नाम सुना होगा। जब कौरवों-पाण्डवों में युद्ध शुरू होनेवाला था, तब अर्जुन को एका-एक मोह उत्पन्न हुआ और उसने श्रीकृष्ण से कहा कि अपने कुटुम्बियों को मारकर राज्य लेने से तो भिक्षा करना अच्छा है। मैं नहीं लड़ सकता। इस पर कृष्ण ने उसे समझाया कि आत्मा अजर-अमर है। इसके लिए सोच करना वृथा है। धर्म के लिए युद्ध करना पाप नहीं है। गीता में यही सब उपदेश हैं।

रामायण की कथा—तुम पहले पढ़ चुके हो कि आर्यों के प्राचीन राज्यों में एक कोशल राज्य था। यह राज्य सरयू नदी के आस-पास के देश में था और अयोध्या नगर इसकी राजधानी थी। यहाँ इक्ष्वाकु वंश के राजा राज्य करते थे। इसी वंश में एक दशरथ नाम के राजा हुए। उनके तीन रानियाँ थीं—कौशिल्या, सुमित्रा, कैकेयी। इन तीन रानियों में चार पुत्र उत्पन्न हुए—कौशिल्या के गर्भ से रामचन्द्रजी,

सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेयी के गर्भ से भरत।

रामचन्द्रजी बड़े धर्मात्मा और बुद्धिमान् थे। उनका मिथिला के राजा जनक की बेटी सीताजी के साथ विवाह हुआ था। जब राजा दशरथ ने वृद्धावस्था के कारण रामचन्द्रजी को युवराज बनाना चाहा तब कैकेयी ने बड़ा विघ्न डाला। उसने किसी समय राजा से दो वर देने का वादा करा लिया था। अब उसने दोनों वर माँगे—एक वर से अपने बेटे भरत के लिए राजगद्दी और दूसरे वर से रामचन्द्र के लिए १४ वर्ष का वनवास।

राजा दशरथ सत्यवादी थे। वे अपनी बात किस प्रकार लौट सकते थे। इधर रामचन्द्रजी भी इस बात को सहन नहीं कर सकते थे कि पिता का वचन झूठ हो। राज-पाट को तिलाञ्जलि दे वे अपने भाई लक्ष्मण और सीताजी के साथ वन को चले गये।

वन में लङ्का का राजा रावण जबर्दस्ती सीताजी को हर ले गया। इस पर लड़ाई छिड़ गई। रामचन्द्रजी ने लङ्का पर चढ़ाई की और वानरों की सहायता से राक्षसों को युद्ध में पराजित किया। रावण और उसकी सेना का नाश हो गया। रामचन्द्रजी उसके भाई विभीषण को लङ्का का राज्य देकर अयोध्या लौटे।

इधर भरतजी राज्य का काम चलाते रहे थे। उन्होंने बड़े प्रेम से रामचन्द्रजी का स्वागत किया और उनका राज्य उन्हें सौंप दिया। रामचन्द्रजी ने बहुत काल तक सुख से राज्य किया। उनके राज्य में प्रजा ऐसी सुखी थी कि लोग राम-राज्य की अब तक प्रशंसा करते हैं।

रामायण से पता लगता है कि आर्य्य-सभ्यता किस प्रकार दक्षि
मे फैली । इसमे हिन्दू-जाति के उच्च आदर्शों का वर्णन है । पितृ-
भ्रातृस्नेह, दम्पति-प्रेम, स्वामि-भक्ति के इसमें अनेक उत्तम दृष्टान्त

महाकाव्यों का समाज—रामायण, महाभारत के पढ़
हमे हिन्दू-समाज का बहुत कुछ हाल मालूम होता है। आर्य्यों
रहन-सहन, रीति-रवाज अब वैदिक काल के-से न थे। जाति का
पहले से मजबूत हो गया। ब्राह्मणों का सम्मान अधिक होने लग
परन्तु महाभारत मे ऐसा भी लिखा है कि यदि ब्राह्मण अपने धर्म
पालन न करे तो उसकी गिनती शूद्रों मे होनी चाहिए। जाति
परस्पर विवाह बिलकुल बन्द न था, परन्तु अपनी जाति मे विवाह
अच्छा समझा जाता था। शूद्रों के साथ विवाह करना लोग बुरा
समझते थे। यदि कोई बडी जाति का मनुष्य शूद्र स्त्री के साथ वि
करता तो उसकी सन्तान छोटे दर्जे की समझी जाती थी। पहले
शूद्रों का बनाया भोजन खाते थे परन्तु अब यह रवाज कम होने ल
चाण्डाल नगर अथवा गाँव के बाहर रहते थे और उन्हें छूना तो
रहा उनकी छाया पडना भी बुरा समझा जाता था। बहु-विवाह
प्रथा थी। परन्तु बाल-विवाह नहीं होता था। स्वयंवर का रवाज
जैसा कि रामचन्द्रजी और अर्जुन के विवाह मे प्रकट होता है। स्त्रि
पतिव्रता होती थीं और उन्हे शिक्षा भी दी जाती थी। परन्तु
मालूम होता है कि सती का रवाज था और पर्दे का आरम्भ
रहा था।

धर्म मे भी बहुत कुछ अन्तर पाया जाता है। वैदिक काल
तरह लोग प्रकृति की उपासना नहीं करते थे। अब ब्रह्मा, विष्णु, शि

की पूजा होने लगी। यज्ञ करने की प्रथा जारी थी। रामायण, महाभारत में अश्वमेध और राजसूय यज्ञों का वर्णन है। महाभारत के समय के लोगों के आदर्श कुछ बिगड़ रहे थे। भरत ने रामचन्द्रजी के वन चले जाने पर राजगद्दी नहीं स्वीकार की परन्तु दुर्योधन ने पाण्डवों को बिना युद्ध के एक सुई की नोक के बराबर भी जमीन देने से इनकार कर दिया। भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि ने भी उसी के पक्ष का समर्थन किया और धर्म तथा न्याय की कुछ भी पर्वाह न की। जुआ खेलने की प्रथा और द्रौपदी के साथ जो अत्याचार हुआ था उससे प्रकट होता है कि समाज की दशा अच्छी न थी। परन्तु महाभारत के काल में कला-कौशल की अच्छी उन्नति हुई। अनेक प्रकार के सुन्दर आभूषण बनने लगे। व्यापार भी उन्नत हुआ और लोग विदेशों में जाने लगे। युद्ध-विद्या का ज्ञान बढ़ा। सेना में हाथी, घोड़े, रथ लड़ाई के समय काम आने लगे। सेना के सङ्गठन पर विशेष ध्यान दिया गया। नये-नये अस्त्र-शस्त्र चल गये और युद्ध करने के नये तरीके निकल आये।

अभ्यास

१—आर्यों के प्राचीन राज्यों के नाम बताओ। ये राज्य कहाँ पर थे?

२—महाभारत और रामायण कब बने? इस विषय में हिन्दुओं की क्या धारणा है?

३—महाभारत की कथा का संक्षेप में वर्णन करो।

४—भगवद्गीता में क्या उपदेश है?

५—रामायण को हिन्दू क्यों एक पवित्र ग्रन्थ समझते हैं? रामराज्य की क्यों अब तक प्रशंसा होती है?

६—रामायण-महाभारत के समय के और वैदिक काल के धर्म में क्या अन्तर है?

७—इन ग्रन्थों में जिस हिन्दू-समाज का वर्णन है वह कैसा है? संक्षेप से बताओ।

हो चुके हैं। २३ वें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथजी थे जिनका देहान्त महावीर स्वामी से दो सौ-ढाई सौ वर्ष पहले हुआ था। महावीर स्वामी का जन्म लिच्छवि-वंश के क्षत्रिय राजकुल में वैशाली* नगर में हुआ था। उनका बचपन का नाम वर्धमान था। तीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने घर-बार छोड़कर सन्यास ले लिया और अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। १२ वर्ष तक उन्होंने बड़ी कड़ी तपस्या की। तब उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और वे अरहत् अथवा जिन (इन्द्रियों का जीतनेवाला) हो गये। इसके बाद उन्होंने विहार में भ्रमण किया और लोगों को उपदेश किया। मगध का राजा बिम्बिसार और उसका बेटा अजातशत्रु दोनों उनसे मिले और उनका बड़ा सम्मान किया। ७२ वर्ष की अवस्था में पावा नामक स्थान में ईसा के ४६८ वर्ष पहले उनका देहान्त हो गया।

महावीर स्वामी की शिक्षा—महावीर स्वामी की शिक्षा थी कि (१) सच बोलो। (२) किसी जीव को न सताओ। (३) चोरी न करो। (४) धन-दौलत जमा न करो। (५) ब्रह्म-चर्य-व्रत का पालन करो। उनका कहना था कि तप, दया, ज्ञान और सदाचार से मोक्ष मिल सकता है। कर्म के फल से मनुष्य नहीं बच सकता, इसलिए सत्कर्म करना आवश्यक है। बहुत-से लोग महावीर स्वामी के अनुयायी हो गये। उनकी मृत्यु के बाद जैनों में दो दल हो गये—दिगम्बर और श्वेताम्बर। महावीर स्वामी ने अपने

---

*वैशाली बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में पटना से २७ मील उत्तर की ओर है। महावीर स्वामी की जन्म-तिथि ईसा के ५४० वर्ष पहले और मृत्यु की तिथि ईसा के ४६८ वर्ष पूर्व कही जाती है।

अध्याय ६

जैन और बौद्ध-धर्म

नये धर्मों की उत्पत्ति—यद्यपि वैदिक धर्म उत्तरी भारत में फैल गया था परन्तु तो भी कुछ लोग अभी ऐसे थे जो इस धर्म को नहीं मानते थे। कहीं-कहीं पर अभी तक द्रविड़ों का धर्म माना जाता था। वैदिक धर्म का प्रचार करनेवाले अधिकतर ब्राह्मण थे जो विद्या पढ़ते-पढ़ाते, यज्ञ करते और वर्णाश्रम धर्म को मानते थे। ये ही लोग समाज में सबसे श्रेष्ठ समझे जाते थे। परन्तु अब कुछ लोग ऐसे हुए जो इनका विरोध करने लगे। ये वन में रहकर भजन-ध्यान में मग्न रहते और अपने शिष्यों को धर्म का उपदेश करते थे। इनमें कुछ ऐसे भी थे जो नगर-नगर घूमकर जनता को शिक्षा देते थे और प्रचलित वैदिक धर्म का विरोध करते थे। इनका न वेदों पर विश्वास था और न यज्ञों में और न ये जाति-पाँति के भेद को मानते थे। ऐसे ही महात्माओं में महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध की गिनती है। इनके चलाये हुए धर्म अभी तक भारत में मौजूद हैं। अब हम तुम्हें इनका हाल बतलायेंगे।

महावीर स्वामी—जैन-धर्म—जैनों के धर्म-ग्रन्थों में लिखा है कि जैन-धर्म बौद्ध-धर्म से प्राचीन है और यूरोप के विद्वान भी अब इस बात को मानते हैं। जैन लोगों का कहना है कि महावीर स्वामी इनके २४ वें तीर्थङ्कर थे और इनसे पहले २३ तीर्थङ्कर और

हो चुके हैं। २३ वें तीर्थंङ्कर पार्श्वनाथजी थे जिनका देहान्त महावीर स्वामी से दो सौ-ढाई सौ वर्ष पहले हुआ था। महावीर स्वामी का जन्म लिच्छवि-वंश के क्षत्रिय राजकुल मे वैशाली* नगर मे हुआ था। उनका बचपन का नाम वर्धमान था। तीस वर्ष की अवस्था मे उन्होंने घर-बार छोड़कर सन्यास ले लिया और अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। १२ वर्ष तक उन्होंने बडी कड़ी तपस्या की। तब उन्हे ज्ञान प्राप्त हुआ और वे अरहत् अथवा जिन (इन्द्रियों का जीतनेवाला) हो गये। इसके बाद उन्होंने बिहार मे भ्रमण किया और लोगो को उपदेश किया। मगध का राजा बिम्बिसार और उसका बेटा अजातशत्रु दोनो उनसे मिले और उनका बड़ा सम्मान किया। ७२ वर्ष की अवस्था मे पावा नामक स्थान मे ईसा के ४६८ वर्ष पहले उनका देहान्त हो गया।

महावीर स्वामी की शिक्षा—महावीर स्वामी की शिक्षा थी कि (१) सच बोलो। (२) किसी जीव को न सताओ। (३) चोरी न करो। (४) धन-दौलत जमा न करो। (५) ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करो। उनका कहना था कि तप, दया, ज्ञान और सदाचार से मोक्ष मिल सकता है। कर्म के फल से मनुष्य नहीं बच सकता, इसलिए सत्कर्म करना आवश्यक है। बहुत-से लोग महावीर स्वामी के अनुयायी हो गये। उनकी मृत्यु के बाद जैनो मे दो दल हो गये—दिगम्बर और श्वेताम्बर। महावीर स्वामी ने अपने

---

*वैशाली बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में पटना से २७ मील उत्तर की ओर है। महावीर स्वामी की जन्म-तिथि ईसा के ५४० वर्ष पहले और मृत्यु की तिथि ईसा के ४६८ वर्ष पूर्व कही जाती है।

प्राचीन भारत वर्ष
गान्धार
कोशल
मत्स्य
अवान्ती
मगध
अ र ब
सा ग र
ब गा ल की
खा ड़ी
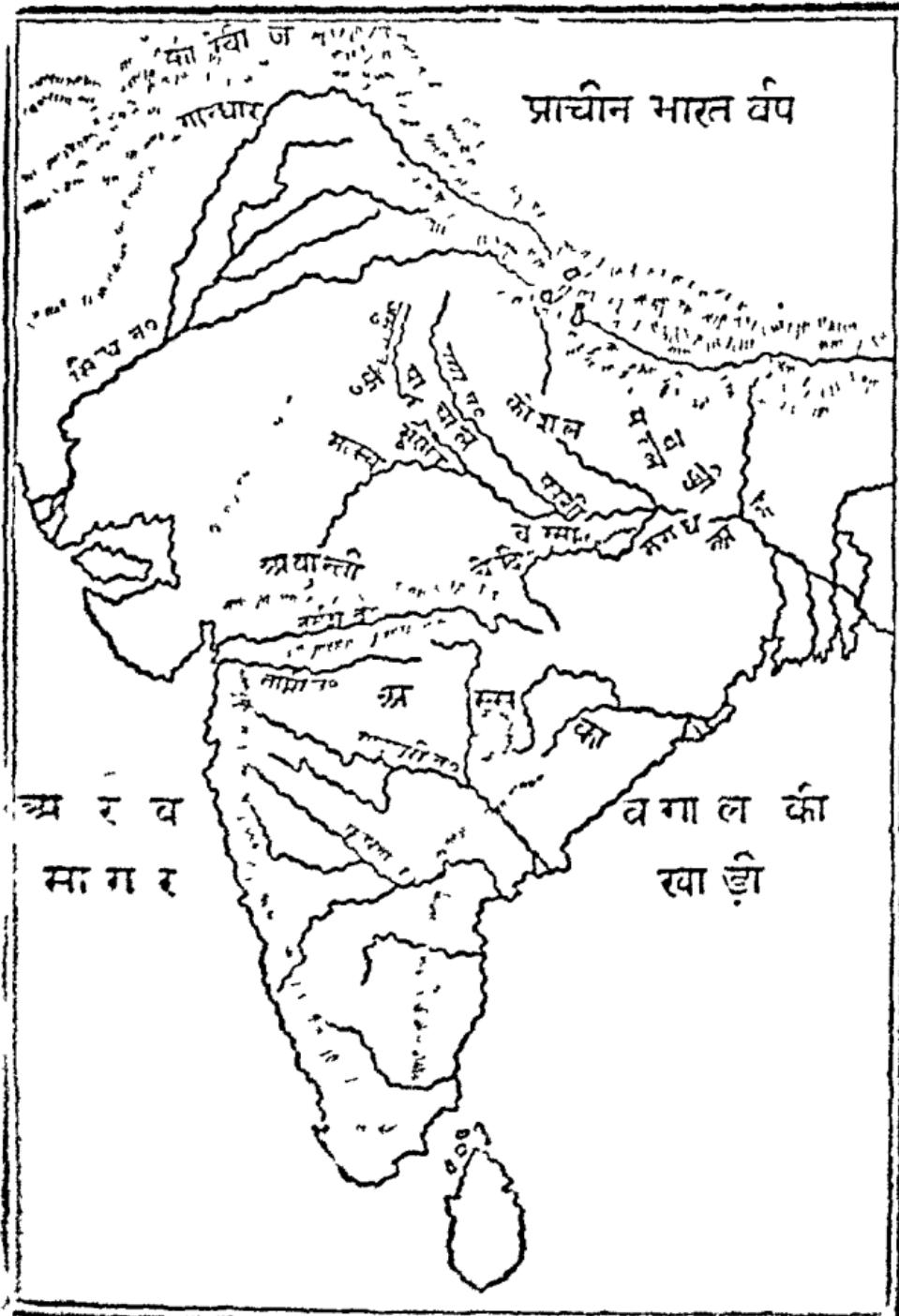
शिष्यों को नग्न रहने की आज्ञा दी थी, इसलिए वे दिगम्बर कहलाने लगे और दूसरे दल के लोग सफ़ेद कपड़े पहनने के कारण श्वेताम्बर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

जैन-धर्म का प्रभाव—जैन लोग जीवों पर बड़ी दया करते है। अहिंसा उनके धर्म का मूल मन्त्र है। वे छोटे-छोटे जीवों को मारना भी पाप समझते हैं। वे रात में भोजन नहीं करते और पानी तक छानकर पीते हैं। जैन साधु कठिन तप करते हैं, जीवों पर दया करते हैं और अधिकाश उनमें ऐसे है जो किसी प्रकार की सवारी मे नहीं बैठते। पैदल ही यात्रा करते हैं। मनुष्यों की चिकित्सा और जानवरों की रक्षा के लिए उनके प्रयत्न से देश मे अनेक औषधालय खुल गये हैं जहाँ दवा मुफ्त दी जाती है। जैन लोग बहुधा धनी व्यापारी हैं। उन्होंने जनता के उपकार के लिए बड़े-बड़े नगरों और तीर्थस्थानो मे मन्दिर और धर्मशालायें बना दी हैं। आजकल जैनों की संख्या भारतवर्ष मे लगभग १५ लाख है।

जैन-धर्म को प्राचीन काल मे कई राजाओं ने स्वीकार किया था। उनके राज्य मे प्रजा सुख और शान्ति से रही। दक्षिण और गुजरात मे कई प्रसिद्ध जैन राजा हुए जिन्होंने खूब युद्ध किये, विद्वानों को आश्रय दिया और बड़ी सुन्दर इमारतें बनवाईं। आबू के पहाड़ का जैन-मन्दिर भारतवर्ष की प्रसिद्ध इमारतों मे से है।

गौतम बुद्ध—जैन-धर्म से मिलता-जुलता बौद्ध-धर्म है। इस धर्म के माननेवाले अब भी लंका, चीन, जापान, ब्रह्मा आदि देशों मे पाये जाते हैं। गौतम बुद्ध इस धर्म की नींव डालनेवाले थे।

गौतम का जन्म कपिलवस्तु* में शाक्यवंश के क्षत्रिय राजा शुद्धोदन के यहाँ हुआ था। पैदा होने के सात दिन बाद ही उनकी माता का देहान्त हो गया। बालक का नाम गौतम सिद्धार्थ रक्खा गया। पिता ने बालक को उत्तम शिक्षा दी और १६ वर्ष की अवस्था में यशोधरा नाम की एक रूपवती कन्या के साथ विवाह कर दिया। राजकुमार महल में रहने लगे। कुछ समय के बाद उनके एक पुत्र हुआ जिसका नाम राहुल रक्खा गया।

गौतम के लिए उनके पिता ने सुख का सारा सामान एकत्र कर दिया था परन्तु उन्हें कुछ भी अच्छा न लगता था। वे बहुधा एकान्त में बैठकर यही सोचा करते थे कि संसार का दुख किस प्रकार दूर हो सकता है। जब वे शिकार को जाते तो भोले-भाले निर्दोष हिरणों को देखकर उन्हें दया आ जाती और तरकस में तीर रखकर घर लौट आते। एक बार वसन्त-ऋतु में पिता पुत्र दोनों सैर के लिए बाहर निकले परन्तु गौतम की दृष्टि एक मनुष्य पर पड़ी जो अपने बूढ़े बैल को मार रहा था। यह देखकर गौतम को बड़ा दुख हुआ। कुछ समय के बाद उन्होंने एक वृद्ध मनुष्य को देखा जिसकी खाल सिकुड़ गई थी, कमर झुकी हुई थी और आँखों से भी कम दिखाई देता था। उसको ऐसी दशा में देखकर कुमार ने कहा धिक्कार है इस यौवन को जिसे थोड़े दिन में बुढ़ापा आ दबावेगा। मनुष्य का शरीर अनित्य है। आज है कल नहीं।

---

* कपिलवस्तु [illegible] है। गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से ५६[illegible] [illegible] और मृत्यु लगभग ४८० वर्ष पूर्व में हुई।
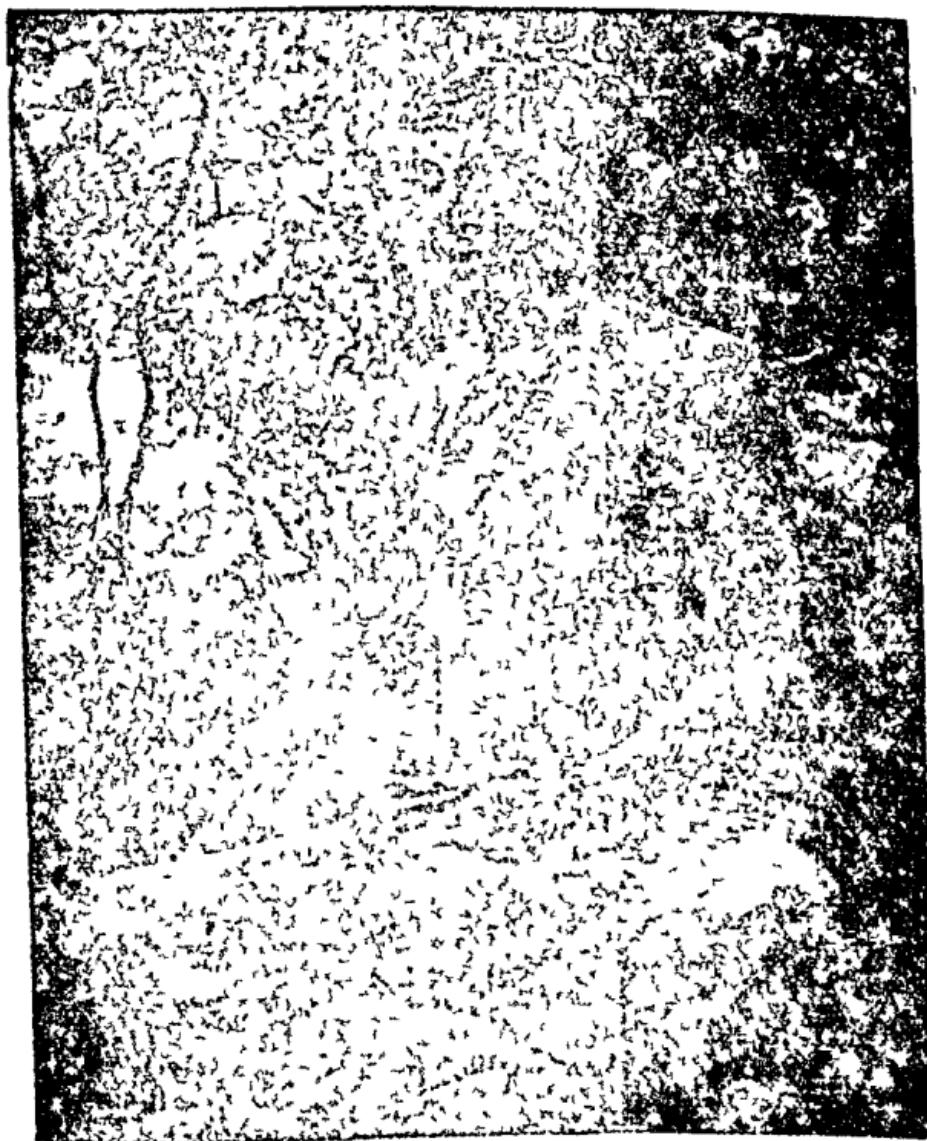
बोधि वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध
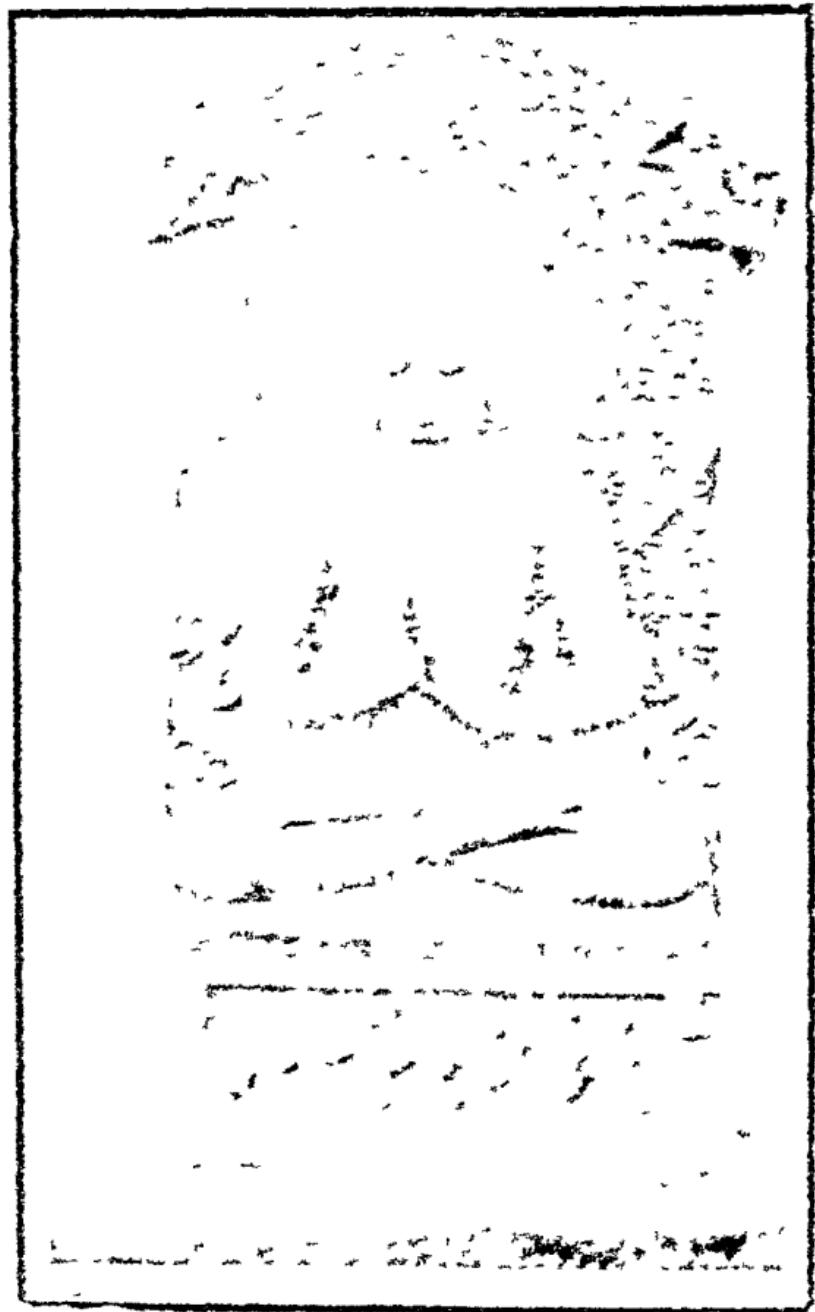
अब उन्हें यही चिन्ता रहने लगी कि रोग, शोक, बुढ़ापा, मृत्यु से बचने का क्या उपाय हो सकता है।

गौतम की अवस्था इस समय ३० वर्ष की थी। उन्हें संसार छोड़ने की प्रबल इच्छा होने लगी। एक दिन रात को जब सब लोग सो रहे थे वे चुपके से उठे और उस कमरे में गये जहाँ उनकी स्त्री अपने बच्चे के साथ सो रही थी। यह देखकर कि इसके जगाने से जाने में बाधा पड़ेगी उन्होंने उसे नहीं जगाया और देखकर लौट आये। फिर घोड़े पर चढ़कर कपिलवस्तु के बाहर निकल गये और संन्यास ले लिया। घूमते-फिरते वे मगध की राजधानी राजगृह में पहुँचे। राजा बिम्बिसार ने उनका स्वागत किया और सारा राज्य भेंट करने को कहा। परन्तु गौतम ने उत्तर दिया कि मैं ज्ञान चाहता हूँ राज्य नहीं। यहीं पर उन्होंने ब्राह्मणों से शास्त्र पढ़े परन्तु मुक्ति का मार्ग न मिला। फिर बड़ी घोर तपस्या की, शरीर को कष्ट दिया परन्तु तब भी शान्ति न प्राप्त हुई। इसके बाद वे गया के पास पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर बैठ गये। यहीं पर उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और वे बुद्ध अर्थात् ज्ञानी कहलाने लगे। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान-लाभ हुआ था उसका नाम बोधि-वृक्ष पड़ा। बहुत-से लोग अब गौतम बुद्ध का उपदेश सुनने लगे और उनके शिष्य हो गये।

इसी प्रकार धर्म का प्रचार करते-करते ८० वर्ष की अवस्था में कुशीनारा नामक स्थान में बुद्धदेव का देहान्त हो गया।

बौद्ध-धर्म की शिक्षा—बुद्धदेव की शिक्षा थी कि यदि मनुष्य अच्छे मार्ग पर चले, जीवों पर दया करे और हिंसा न करे तो उसे

सुख मिल सकता है। अहिंसा सब धर्मों का सार है। यज्ञ, जप, तप सब निष्फल हैं जब तक मन शुद्ध न हो। कर्म बलवान् है। मनुष्य कर्म के फल से नहीं बच सकता। जो जैसा बोयेगा वैसा काटेगा। मोक्ष अर्थात् "निर्वाण" मनुष्य के कर्म पर निर्भर है। मनुष्य बार-बार जन्म लेता और मरता है। केवल सत्कर्म-द्वारा ही वह इस आवागमन के बन्धन से मुक्त हो सकता है।

यही नहीं बुद्ध भगवान् ने सदाचार पर बड़ा जोर दिया। वे कहते थे कि मनुष्य को मन, वाणी, कर्म से पवित्र होना चाहिए, झूठ न बोलना चाहिए और ईर्ष्या, द्वेष, चोरी, व्यभिचार आदि पापों से बचना चाहिए। बुद्ध जी के शिष्य दो प्रकार के थे—एक तो उपासक जो गृहस्थ बनकर रहते थे, दूसरे भिक्षु जो संन्यास ले लेते थे। कुछ समय के बाद स्त्रियों को भी संन्यास लेने की आज्ञा मिल गई थी और वे भिक्षुणी कहलाती थीं।

गौतम बुद्ध की सफलता—बुद्धदेव को अपने धर्म का प्रचार करने में बड़ी सफलता हुई। इसके कई कारण हैं। उन्होंने बताया कि जाति-पाँति का भेद व्यर्थ है। जाति मनुष्य को मोक्ष मिलने में बाधक नहीं हो सकती। इसका उन जातियों पर बहुत प्रभाव पड़ा जिन्हें ब्राह्मणों ने अपने धर्म से अलग रक्खा था। दूसरे महात्मा बुद्ध ने अपना उपदेश साधारण लोगों की भाषा में दिया जिसे सब कोई समझ सकता था। तीसरे, बौद्धधर्म में अधिक आडम्बर नहीं था। इसकी सरलता ने इसके प्रचार में बहुत मदद की, चौथे भिक्षु-भिक्षुणी बड़े उत्साह और भक्ति के साथ धर्म-प्रचार का काम करते थे।

जैन और बौद्ध-धर्म एक नहीं है—जैन और बौद्ध-धर्म की बहुत-सी बातें एक-सी हैं। इसलिए देखने में दो धर्म एक ही मालूम होते हैं। परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं है। दोनो धर्मों में अहिंसा, कर्म, सदाचार पर ज़ोर दिया गया है और वैराग्य का उपदेश है। दोनो धर्मों की शिक्षा साधारण मनुष्यो की भाषा मे हुई है और दोनो ने जाति-भेद को व्यर्थ बताया है। दोनों यज्ञ करना व्यर्थ समझते है और वेदों के महत्त्व को नहीं स्वीकार करते। दोनो धर्मों ने भिक्षु-भिक्षुणियों के संघ बनाये जिन्होंने धर्म का प्रचार किया।

परन्तु स[illegible]व होते हुए भी जैन और बौद्ध-धर्मों में भेद हैं। दोनो मे मोक्ष प्राप्त करने के साधन अलग-अलग हैं। जैन-धर्म तप, वैराग्य और शरीर को कष्ट देने का आदेश करता है; परन्तु बौद्ध-धर्म इन्हे इतना आवश्यक नहीं समझता। जैन-धर्म अहिंसा पर अधिक ज़ोर देता है, यहाँ तक कि इस धर्म के माननेवाले छोटे-छोटे कीड़ों को मारना भी पाप समझते हैं। बौद्ध-धर्म मे ऐसा नही है। चीन, जापान, ब्रह्मा आदि देशों के बौद्ध तो मांस खाना भी बुरा नहीं समझते।

बौद्ध-धर्म का प्रचार—बौद्ध-धर्म का हमारे देश मे ख़ूब प्रचार हुआ। बुद्ध की मृत्यु के समय उनके अनुयायियो की संख्या अधिक न थी परन्तु अशोक और कनिष्क आदि राजाओ ने इसकी उन्नति के लिए बड़ा प्रयत्न किया। इसका हम आगे चलकर वर्णन करेंगे। इन्हीं के प्रयत्न से बौद्ध-धर्म लङ्का, तिब्बत, चीन, ब्रह्मा, हिन्द-चीन, अफ़ग़ानिस्तान आदि देशों मे फैला। भारतवर्ष में तो एक समय

ऐसा जोर बँधा कि हिमालय से कुमारी अन्तरीप तक बौद्ध-धर्म की ही तूती बोलने लगी। किन्तु आश्चर्य की बात है कि ऐसा विश्वव्यापी धर्म जिसकी बडे-बडे राजा, महाराजा, आचार्य मदद करने वाले थे, कई शताब्दियों के बाद इस देश से करीब-करीब लुप्त हो गया। आजकल लङ्का और ब्रह्मा को छोड़कर भारत मे बौद्ध-धर्म के माननेवाले कहीं नहीं पाये जाते। इस पतन का कारण हम आगे चलकर बतलायेंगे।

जिस समय देश मे बौद्ध-धर्म का दौरदौरा था, वैदिक धर्म कुछ ढीला पड़ गया था। परन्तु समय के हेर-फेर से जब बौद्ध-धर्म की शक्ति कुछ कम हुई तो हिन्दू-धर्म ने फिर अपनी धाक जमा ली। ब्राह्मणों का फिर गौरव बढ़ा परन्तु उन्हे भी बौद्ध-धर्म की कई बातें माननी पडी। जाति-पाँति का भेद पहले से कम हो गया। यज्ञों की प्रथा जाती रही। अहिंसा के सिद्धान्त को भी हिन्दू-धर्म ने अपना लिया और मांस खाने का प्रचार कम होने लगा। ब्राह्मणों ने गौतम बुद्ध को भी अपने २४ अवतारों मे शामिल कर लिया। वैदिक धर्म के माननेवाले संन्यासी, महात्मा बौद्ध भिक्षुओं की तरह मठों में रह कर धर्म का प्रचार करने लगे।

बुद्ध के समय का राजनैतिक भारत—जिस समय गौतम बुद्ध जीवित थे भारत में मगध, कोशल, अवन्ति, कौशाम्बी आदि बड़े बड़े राज्य थे*। इन राज्यों में शक्तिशाली राजा राज्य करते

---

* मगध (बिहार), कोशल (अवध), अवन्ति (मालवा) कौशाम्बी (इलाहाबाद)।

थे। परन्तु इनके अलावा कई छोटे-छोटे स्वाधीन प्रजातंत्र राज्य भी थे, जिनका प्रबन्ध प्रजा के चुने हुए सभासद् ही करते थे। इन राज्यों में शाक्य, कुशीनारा, मल्ल, मोरिय, लिच्छवि, विदेह अधिक प्रसिद्ध हैं। कपिलवस्तु जहाँ गौतम बुद्ध पैदा हुए थे कोई बड़ा राज्य नहीं था। वह भी एक छोटा-सा स्वाधीन प्रजातंत्र राज्य था। इन राज्यों में राजा नहीं होते थे। प्रजागण अपनी सभा मे एक मनुष्य को मुखिया चुन लेते थे। वही सभा की मदद से शासन करता था। शहरो में सभागृह बने हुए थे जहाँ बैठकर राज्य का काम होता था। लोगो की जीविका धान की खेती से चलती थी। गाँव झोपड़ों के बने होते थे और एक दूसरे से अलग होते थे। गाँवो में जीवन शान्तिमय था और लोग जुर्म बहुत कम करते थे।

अभ्यास

१—जैन और बौद्ध-धर्मो की किस प्रकार उत्पत्ति हुई ?
२—जैन और बौद्ध-धर्मो में कौन-सा प्राचीन है ?
३—महावीर स्वामी के जीवन-चरित्र का संक्षेप से वर्णन करो।
४—जैन-धर्म के मुख्य सिद्धान्त क्या हैं ? जैनों के दो सम्प्रदाय कौन-से हैं ? उनकी विशेषता का वर्णन करो।
५—जैन-धर्म के अनुयायियों के आचार-विचार के विषय में क्या जानते हो ?
६—गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र का संक्षेप से वर्णन करो।
७—गौतम बुद्ध को वैराग्य कैसे हुआ ? वे बुद्ध क्यों कहलाये ?
८—बौद्ध-धर्म का सिद्धान्त क्या है ? बौद्ध और जैन-धर्मो के सिद्धान्तों में क्या अन्तर है ?

९—गौतम बुद्ध की सफलता के क्या कारण थे

१०—"जैन और बौद्ध-धर्म देखने में एक मालूम होते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है।" इस कथन की व्याख्या करो।

११—बौद्ध-धर्म का संसार में इतना प्रचार क्यों हुआ ? कारण बताओ।

१२—गौतम बुद्ध के समय में भारत में दो प्रकार के कौन-से राष्ट्र थे ? उनके नाम बताओ।

इन राज्यों का शासन-प्रबन्ध किस प्रकार होता था ?

अध्याय ७

मगध-राज्य—सिकन्दर का आक्रमण

मगध-राज्य—ईसा से ६०० वर्ष पहले से हमें भारतीय इतिहास का हाल अधिक व्यवस्थित रूप में मिलता है। जैसा पहले कह चुके है इस समय हमारे देश में कई राज्य थे। इन राज्यो में मगध (आधुनिक बिहार) शक्तिशाली राज्य था। यहाँ शिशुनाग-वंश के लोग राज्य करते थे। बिम्बिसार और अजातशत्रु का हाल तुम पहले पढ़ चुके हो। ये मगध के प्रभावशाली राजाओ मे गिने जाते हैं। ये दोनों महात्मा गौतम बुद्ध के समय मे मौजूद थे। जब बिम्बिसार वृद्ध हो गया तब उसने राजकार्य अपने बेटे अजातशत्रु को सौंप दिया। परन्तु वह ठहर न सका। उसने पिता को मार डाला और स्वय राजा बन बैठा। अजातशत्रु वीर राजा था। उसने कोशल-राज्य पर चढ़ाई की। कोशल-नरेश ने विवश होकर अपनी बेटी का उसके साथ विवाह कर दिया और काशी-राज्य दहेज मे दे दिया। अजातशत्रु ने गगा और सोन के संगम पर पाटली नामक नगर बसाया जिसका नाम पीछे से पाटलिपुत्र हुआ और वह आज-कल पटना कहलाता है। अजातशत्रु की मृत्यु के बाद शिशुनाग-वंश के कई राजाओं ने राज्य किया। परन्तु उनकी शक्ति दिन पर दिन घटने लगी। इस वंश का अन्तिम राजा महानन्दिन् था। उसने एक शूद्र स्त्री से विवाह किया जिसके गर्भ से एक बालक उत्पन्न हुआ जो महापद्मनन्द के नाम से मगध का राजा हुआ। नन्दवंश का

वह पहला राजा था। इसने कोशल, कौशाम्बी, अवन्ति आदि देशों के राजाओं को युद्ध में हराकर एक बड़ा राज्य बनाया जिसमें काश्मीर, पंजाब, सिन्ध को छोड़कर सारा उत्तरी भारत शामिल था। महापद्मनन्द के पास एक बड़ी सेना थी। दूर-दूर के राजा उसका रोब मानते थे। उसी के समय में सिकन्दर ने हमारे देश पर आक्रमण किया और कहते हैं कि महापद्मनन्द के भय से ही उसने पंजाब से आगे बढ़ने का साहस न किया। यह सिकन्दर कौन था और किस प्रकार हिन्दुस्तान में आया?

सिकन्दर का आक्रमण (३२६ ई० पू०*)—यूरोप के दक्षिण में यूनान (ग्रीस) नामक एक देश है। यहाँ मेसीडन नाम का एक छोटा-सा राज्य था। वहाँ का राजा फ़िलिप बड़ा प्रतापी था। दूर-दूर के राजा उसका प्रभुत्व मानते थे। उसका बेटा सिकन्दर (अलेक्जेंडर) उससे बढ़कर वीर और प्रतापी हुआ। उसने अपने पराक्रम से अनेक देश जीते और एक विशाल साम्राज्य बनाया। जिस समय सिकन्दर मेसीडन में राज्य करता था एशिया में फारस नाम का एक बड़ा शक्तिशाली राज्य था। हिन्दुस्तान के उत्तर-पश्चिम के सरहदी सूबे फारस का आधिपत्य मानते थे। फारस और यूनान में हमेशा लड़ाई रहती थी। एक दूसरे को हड़प कर जाना चाहता था। जब सिकन्दर ने अपनी शक्ति खूब बढ़ा ली तब उसने फारस पर आक्रमण किया और वहाँ के सम्राट् दारा तृतीय को लड़ाई में हराया। इसके बाद वह अफगानिस्तान की तरफ बढ़ा। कई सरदारों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसके लिए आगे

* ई० पू० का अर्थ है ईसा मसीह से पहले।

पाटलिपुत्र के खँडहर

सिकन्दर

झांसी का महल
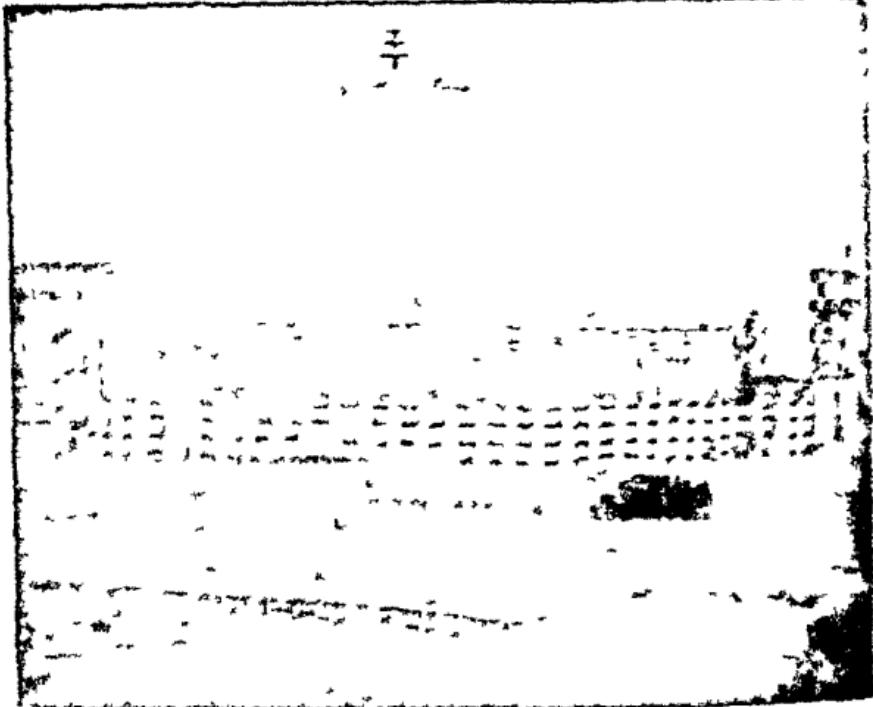
बढ़ना कठिन था। परन्तु पंजाब की दशा इस समय अच्छी न थी वहाँ छोटे-छोटे कई राज्य थे जो आपस में हमेशा लड़ा करते थे। किसी में इतना बल न था कि सिकन्दर का सामना करता। ईसा से ३२७ वर्ष पहले सिकन्दर ने खैबर की घाटी में होकर पंजाब में प्रवेश किया। पंजाब के पश्चिमी भाग में इस समय दो राज्य थे—एक तो तक्षशिला और दूसरा पुरुराज्य। तक्षशिला के राजा ने सिकन्दर का स्वागत किया और उसको अपना सम्राट् मान लिया। परन्तु राजा पुरु ने यूनानियों से खूब लोहा लिया। वह ३०,००० पैदल, ४,००० सवार, ३०० रथ और २०० हाथी लेकर झेलम नदी के किनारे आ डटा। घमासान युद्ध के बाद पुरु की हार हुई। बहुत-से योद्धा घायल हुए और मारे गये। पुरु बड़े डील-डौलवाला और योद्धा था। उसके नौ घाव लगे परन्तु तो भी उसने लड़ाई के मैदान से भागने की कोशिश नहीं की। जब सिपाही उसे पकड़कर सिकन्दर के सामने ले गये तो उससे पूछा गया कि तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव होना चाहिए। वीर पुरु ने शीघ्र उत्तर दिया कि जैसा राजा राजाओं के साथ करते हैं। सिकन्दर इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने पुरु का राज्य उसे वापस लौटा दिया। पुरु के युद्ध में हारने के तीन कारण थे—एक तो आपस की फूट। भारत के दूसरे राजाओं ने विदेशी आक्रमण को रोकने में पुरु की मदद नहीं की। तक्षशिला का राजा तो पुरु के विरुद्ध यूनानियों के साथ लड़ रहा था। दूसरे लड़ाई के समय पुरु के हाथी बिगड़ गये और भागने लगे। तीसरे, सिकन्दर स्वयं बड़ा वीर था। उसके सवार लड़ने में बहुत चतुर थे। उसके घोड़े भारतीय घोड़ों से

ठहरना कठिन था। सिकन्दर और पुरु की लड़ाई ईसा से ३२६ वर्ष पहले हुई थी।

सिकन्दर का लौटना—इस विजय के बाद सिकन्दर व्यास नदी के किनारे तक पहुँचा। परन्तु उसके यूनानी सिपाही लड़ते-लड़ते थक गये थे और घर जाने के इच्छुक थे। उन्होने आगे जाने से इनकार कर दिया। पुरु की लड़ाई को देखकर उन्होने यह भी समझ लिया था कि हिन्दुस्तान को जीतना कोई खेल नहीं है। सिकन्दर को उनकी बात माननी पड़ी। झेलम नदी के मार्ग से वह चला परन्तु यहाँ भी उसे कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। एक बार तो वह स्वयं मरते-मरते बचा। अन्त मे सन् ३२५ ई० पू० मे उसने अपनी सेना को जहाजों मे बिठलाकर वापस भेजा और स्वयं बिलोचिस्तान के रेगिस्तान मे होकर चल दिया। परन्तु दुर्भाग्यवश स्वदेश मे न पहुँचने पाया। ३२३ ई० पू० मे बेबिलन नामक नगर मे केवल ३३ वर्ष की अवस्था मे उसकी मृत्यु हो गई।

आक्रमण का परिणाम—सिकन्दर के आक्रमण के समय देश मे बड़ा अत्याचार हुआ। यूनानियो ने लोगो के साथ निर्दयता का बर्ताव किया। हज़ारो स्त्री पुरुष मार डाले गये, हज़ारों क़ैद हुए और ग़ुलाम बना दिये गये। जिस जगह सिकन्दर घायल हुआ था वहाँ के सब लोगों को उसने मरवा डाला। जहाँ-जहाँ होकर यूनानी सेना निकली थी वहाँ लोगो को घोर कष्ट हुआ। उनका माल लूटा गया और प्राण भी गये। यह सब होते हुए भी सिकन्दर का आक्रमण भारत की किसी स्थायी चीज़ का नाश न कर सका। एक वर्ष के भीतर आक्रमण का चिह्न भी न रहा। सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके

सेनापतियों ने राज्य आपस में बाँट लिया। पश्चिमोत्तर प्रदेश का राज्य उसके एक फौजी अफसर सिल्यूकस को मिला। परन्तु इतना मानना पड़ेगा कि इस आक्रमण की बदौलत संसार की दो सभ्य जातियाँ एक दूसरे से मिलीं। आइन्दा के हेल मेल के लिए मार्ग खुल गया। उत्तर-पश्चिम में यूनानी राज्य स्थापित होने के कारण यह परस्पर का सम्बन्ध आगे चलकर अधिक हो गया। भारतवर्ष उस समय भी अपनी विद्या के लिए प्रसिद्ध था। यूनानियों ने बहुत-सी बातें भारतवासियों से सीखीं। इधर भारतीय निर्माण-कला पर यूनानी विचारों का बड़ा प्रभाव पड़ा। सिकन्दर के आक्रमण का एक और परिणाम हुआ। वह यह कि उत्तरी भारत के छोटे-छोटे राज्य बहुत कमज़ोर हो गये थे जिससे चन्द्रगुप्त मौर्य को अपना साम्राज्य बनाने में अधिक कठिनाई न हुई। बहुत-से राज्यों की जगह एक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया जिसके द्वारा देश में एकता का भाव पैदा हुआ।

अभ्यास

१—मगध का राज्य कहाँ था? बुद्धदेव के समय में वहाँ कौन राजा था?

२—नन्दवंश का राज्य किस प्रकार स्थापित हुआ? इस वंश में सबसे प्रतापी राजा कौन हुआ उसके विषय में क्या जानते हो?

३—सिकन्दर का हमला पंजाब पर कब हुआ? राजा पुरु की लड़ाई का वर्णन करो।

४—सिकन्दर की विजय के क्या कारण थे।

५—राजा पुरु के अलावा और किसने उसका सामना किया था?

६—सिकन्दर झेलम की लड़ाई के बाद आगे क्यों नहीं बढ़ा। एक नक्शा खींचकर उसके आने और लौटने का मार्ग दिखाओ।

७—सिकन्दर निर्दयता में तैमूर और नादिरशाह से कम न था। इस पर बहस करो।

८—सिकन्दर के हमले का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

९—सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके भारतीय राज्य का क्या हुआ?

अध्याय ८

मौर्य्य-साम्राज्य का उत्कर्ष और पतन

नन्दवंश का नाश और चन्द्रगुप्त का मगध का राजा होना (३२२ ई० पू०)—तुम पिछले अध्याय मे पढ़ चुके हो कि जिस समय सिकन्दर ने भारत पर हमला किया था नन्दवंश का राजा महापद्मनन्द मगध मे राज्य करता था। नन्दवंश के राजा अत्याचारी शासक थे, इसलिए उनकी प्रजा अप्रसन्न हो गई और अन्त मे विष्णुगुप्त (चाणक्य) नामक ब्राह्मण की सहायता से इस वंश के अन्तिम राजा को उसके सेनापति चन्द्रगुप्त मौर्य्य ने ३२२ ई० पू० मे गद्दी से उतार दिया और स्वयं राजा बन बैठा। कहते हैं चन्द्रगुप्त की माता मुरा नाम की एक शूद्रा स्त्री थी। इसलिए वह मौर्य्य कहलाया। परन्तु अब विद्वान् लोग इस बात को नहीं मानते। चन्द्रगुप्त मोरिय नामक क्षत्रिय-वंश मे से था। इस वंश के लोग हिमालय के आस-पास के देश मे राज्य करते थे और शाक्यो के सम्बन्धी थे। मोरिय क्षत्रिय होने के कारण चन्द्रगुप्त मौर्य्य कहलाया और इसी लिए उसका साम्राज्य मौर्य्य साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। चन्द्रगुप्त बडा वीर और प्रतापी राजा था। थोडे ही दिनो मे उत्तरी भारत मे उसकी धाक बैठ गई।

सिल्यूकस के साथ युद्ध—सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके राज्य के हिन्दुस्तानी सूबे पर उसके सेनापति सिल्यूकस

ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। सिल्यूकस सिकन्दर के बाप के एक वीर योद्धा का लड़का था। वह पञ्जाब को जीतने की इच्छा से ३०४ ई० पू० में आगे बढ़ा परन्तु यहाँ चन्द्रगुप्त की सेना से उसकी मुठभेड़ हुई। यूनानी युद्ध में हार गये और अन्त में दोनों दलों में सन्धि हो गई। सिल्यूकस ने अपने राज्य का पूर्वी भाग चन्द्रगुप्त को दे दिया जिसमें हिरात, कन्धार, काबुल, बिलोचिस्तान शामिल थे। कहते हैं कि सिल्यूकस ने सन्धि को मजबूत करने के लिये अपनी बेटी का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया। चन्द्रगुप्त ने भी ५०० हाथी यूनानी नरेश को भेंट किये। कुछ भी हो इस विजय से चन्द्रगुप्त को बड़ा लाभ हुआ। अब वह भारतवर्ष का सम्राट हो गया। सिल्यूकस ने अपने राजदूत मेगास्थनीज को मगध के दरबार में रहने को भेजा। उसने मगध-साम्राज्य और भारत का बहुत-सा हाल लिखा है जिसका आगे चलकर वर्णन करेंगे।

साम्राज्य का विस्तार—चन्द्रगुप्त के राज्य का विस्तार उत्तर में हिन्दूकुश पर्वत तक था। अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान मकरान आदि प्रदेश इसमें शामिल थे। उत्तरी भारत का बहुत-सा भाग सिन्धु नदी से लेकर पूर्व में बङ्गाल तक और दक्षिण में उज्जैन और गिरि [illegible] तक उसके अधिकार में था। पश्चिमी तट का भी थोड़ा-सा भाग जो आजकल बम्बई प्रान्त में सम्मिलित है साम्राज्य के अन्दर था।

चन्द्रगुप्त का राज्य-प्रबन्ध—चन्द्रगुप्त बड़ा बुद्धिमान शासक था। [illegible] से स्पष्ट होता है कि उसका राज्य-प्रबन्ध [illegible] था। [illegible] देख-भाल करता था और [illegible] करते थे। अधिकांश मनुष्य आनन्द

की तरह खेती करते थे। खेतो की सिंचाई के लिए नहर और तालाब बने हुए थे। कानून कठोर था। छोटे-छोटे अपराधो के लिए भी कडी सजा दी जाती थी। यदि कोई किसी कारीगर अथवा दस्तकार का हाथ तोड़ देता या आँख फोड देता, तो उसे फाँसी का दण्ड दिया जाता था। राजा को सदा बगावत का डर रहता था। इसलिए गुप्तचरो की संख्या अधिक थी। यदि कोई राज्य का अफ़सर अन्याय अथवा अत्याचार करता तो वे उसकी भी खबर राजा को देते थे।

चन्द्रगुप्त के पास एक बड़ी सेना थी। इसके चार भाग थे—(१) हाथी, (२) रथ, (३) घोड़े, (४) पैदल। हाथियो की संख्या ९,०००, रथो की ८,०००, घोडो की ३०,००० और पैदलों की ६ लाख थी। सेना की संख्या लगभग ७ लाख थी। इतनी बडी सेना का प्रबन्ध करना कठिन काम था। इसलिए इसका प्रबन्ध एक मण्डल यानी कमेटी के अधिकार मे था। इस कमेटी के नीचे ६ और छोटी कमेटियाँ थी जो सेना के भिन्न-भिन्न भागो की देख-रेख करती थी। स्थल-सेना के अलावा जल-सेना भी थी। युद्ध के समय शत्रु के साथ भी अनुचित बर्ताव नहीं किया जाता था।

स्थानीय स्वराज्य—शहरों और देहात का प्रबन्ध— पाटलिपुत्र भारत का सबसे बड़ा नगर था। यह ९ मील लम्बा और १½ मील चौडा था। इसके चारो तरफ लकडी की दीवार थी जिसमे ६४ फाटक थे और ५७० बुर्जियाँ थी। इस नगर का प्रबन्ध ६ कमेटियों-द्वारा होता था। एक कमेटी दस्तकारी, उद्योग-धन्धों, और कारीगरो की देख-भाल करती थी। दूसरी विदेशियों की देख-रेख

मेगास्थनीज़ का लेख है कि देश मे धन-दौलत की कमी नहीं है। व्यापार खूब होता है। दस्तकारी भी उन्नत दशा मे है। चाँदी, सोने की चीजें और मसाले देश के दूसरे भागो से यहाँ आते है। विदेशो के साथ भी व्यापार होता है। विधवा और अनाथ स्त्रियो के लिए राज्य की ओर से आश्रम बने है जहाँ वे सूत कातकर अपनी जीविका कमाती हैं। बाजार-प्रबन्ध भी अच्छा है। व्यापारी अपने इच्छानुसार चीजो का निर्ख घटा-बढ़ा नही सकते। मामूली चीजो का भाव नियत है। बाटों की जाँच राज्य के अफसर करते है। यदि कोई इन नियमों को तोड़ता है तो उसे दण्ड दिया जाता है।

चन्द्रगुप्त की मृत्यु—२४ वर्ष तक राज्य करने के बाद २९८-९७ ई० पू० मे चन्द्रगुप्त का देहान्त हो गया। कहते है चन्द्रगुप्त पहले शैव था परन्तु बुढ़ापे में उसने जैन-धर्म स्वीकार कर लिया था। कुछ भी हो जब तक वह जीवित रहा, उसने शान-शौकत से राज्य किया। यूनानियो को उसने देश के बाहर भगा दिया और उनके राज्य का कुछ भाग भी ले लिया। अपनी बुद्धिमत्ता और पराक्रम से ही उसने उत्तरी भारत को अपने अधिकार मे कर एक विशाल साम्राज्य बनाया और उसका उत्तम प्रबन्ध किया। उसकी धाक ऐसी बैठ गई थी कि दो पीढ़ी तक कोई भीतरी या बाहरी शत्रु मौर्य्य राज्य को हिला न सका।

बिन्दुसार—(२९७-२७२ ई० पू०) चन्द्रगुप्त की मृत्यु के बाद उसका बेटा बिन्दुसार गद्दी पर बैठा। उसने २४ वर्ष तक शान्तिपूर्वक राज्य किया। उसके तीन लड़के थे। परन्तु इनमे मँझला लड़का अशोक जो उज्जयिनी (उज्जैन) का हाकिम था सबसे

में इन्हीं लोगो ने भारतीय सभ्यता फैलाइ थी, अशोक ने इनके राज्य को जीतने की इच्छा की। बड़ा घोर संग्राम हुआ, खून की नदियाँ बहने लगीं। कलिङ्गवासियो ने अपूर्व देशभक्ति तथा वीरता दिखलाई परन्तु उनकी हार हुइ। एक लाख स्त्री-पुरुष, बच्चे मारे गये और लगभग डेढ़ लाख कैद हुए। कलिङ्ग देश तो अशोक ने जीत लिया परन्तु उसके हृदय को गहरी चोट लगी। उसने सोचा कि अपने लाभ के लिए निर्दोष मनुष्यों की हत्या करना महापाप है। वह बड़ा लज्जित हुआ। उसने प्रतिज्ञा की कि अब राज्य को बढ़ाने की इच्छा से कभी युद्ध न करूँगा।

अशोक के राज्य का विस्तार—अशोक के समय मे साम्राज्य का विस्तार पहले से अधिक हो गया। राज्य की उत्तरी सीमा हिन्दुकुश पवत तक थी जिसमे काश्मीर, नैपाल, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान आदि देश शामिल थे। पूर्वी सीमा, कलिङ्ग और बङ्गाल तक और पश्चिमी सीमा सौराष्ट्र, काठियावाड़ तक थी। चोल, पाण्ड्य, केरल आदि प्रदेशों को छोडकर दक्षिण का बहुत-सा भाग अशोक के अधीन था।

अशोक का बौद्ध-धर्म स्वीकार करना—कलिंग की विजय के बाद अशोक ने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर लिया, परन्तु यह कहना ठीक न होगा कि वह इस युद्ध के कारण ही बौद्ध हो गया। दया की लहर उसके हृदय में पहले ही से उमड़ रही थी और बौद्ध-धर्म की तरफ उसका ध्यान आकृष्ट हो चुका था। कलिंग-युद्ध की मारकाट को देखकर उसे बड़ा दु:ख हुआ और बौद्ध-धर्म मे उसकी श्रद्धा बढ़ने लगी। उपगुप्त नामक बौद्ध-भिक्षु के उपदेश का भी

अशोक का साम्राज
इन्द्रप्रस्थ
मथुरा
उज्जैन
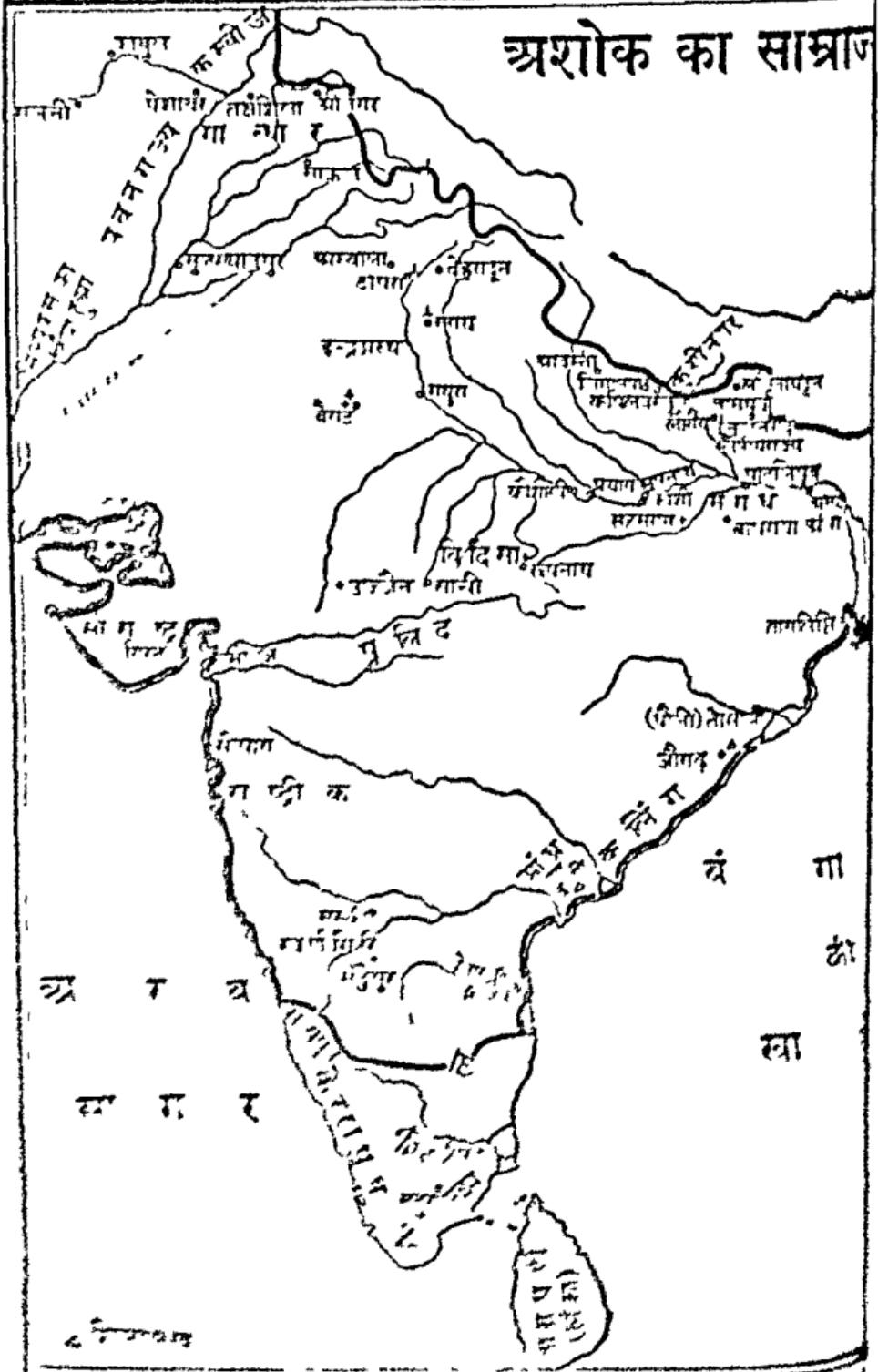
उस पर बहुत प्रभाव पड़ा। बौद्ध होने के बाद अशोक ने कई नियम जारी किये। पहले महल मे हजारो जानवर मारे जाते थे। अब उसने हुक्म दिया कि रसोईघर में हत्या न की जाय और न राजधानी में पशुओं का बलिदान हो। शराब पीना और मांस खाना भी बन्द हो गया। प्रजा को उपदेश करने के लिए उसने स्वय राज्य मे दौरा करना आरम्भ किया, बौद्ध-तीर्थों के दर्शन किये, और बहुत-से मठ, मन्दिर और स्तूप बनवाये। ऐसे खेल-तमाशे जिनमे जीव-हत्या होती थी बिलकुल बन्द करा दिये।

अशोक की शिक्षा (धम्म)—अशोक यो तो बौद्ध था, परन्तु वह सब धर्मों का आदर करता था। विद्वान् ब्राह्मणो का भी वह उतना ही सम्मान करता था जितना बौद्ध-भिक्षुओ का। वह कहता था कि जो दूसरो के धर्म की निन्दा करता है, वह अपने धर्म को बड़ी हानि पहुँचाता है और धर्म के असली तत्त्व को नहीं समझता। धर्म के मुख्य अंग चार हैं—(१) दया, (२) दान, (३) सत्य, (४) शौच। इन्हीं पर उसने जोर दिया और लोगो को सचरित्र बनाने का प्रयत्न किया। उसका उपदेश था—जीवो पर दया करो, माता-पिता की आज्ञा मानो, बड़ों की सेवा और भाई-बन्धुओं के प्रति प्रेम करो।

इन उपदेशो को अशोक ने शिलाओ और स्तम्भो पर खुदवाया जिससे लोग उन्हे पढ़ सके। ये शिलाएँ और स्तम्भ भारतवर्ष के प्रत्येक भाग में पाये जाते है। हमारे प्रान्त मे इलाहाबाद के क़िले में अशोक का ऐसा ही एक स्तम्भ है जिस पर उसका लेख खुदा हुआ है।

धर्म-प्रचार—अशोक ने बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए बड़ा प्रयत्न किया। उसने यश की इच्छा से ऐसा नहीं किया, वरन् प्रजा के हित के लिए। बौद्धों के भेद-भाव को मिटाने के लिए उसने पाटलिपुत्र में एक सभा की जिसमें अनेक विद्वान उपस्थित हुए। लोगों को यह बतलाने के लिए कि धम्म (धर्म) क्या चीज़ है उसने शिलाओं और स्तम्भों पर बहुत-से लेख खुदवाये जो अब तक मौजूद हैं। इसके अलावा उसने एक प्रकार के अफसर नियत किये जिन्हें धर्ममहामात्र कहते हैं। इनका कर्त्तव्य प्रजा को धर्म की शिक्षा देना था। यदि कोई मनुष्य धर्म के विरुद्ध आचरण करता तो ये लोग उसे रोकते थे।

इतना ही नहीं अशोक ने अपने बेटे महेन्द्र और बेटी संघमित्रा को लङ्का में धर्म का प्रचार करने भेजा। उसका कहना था कि धर्म की विजय सबसे बड़ी है। इसी लिए उसने चीन, तिब्बत, स्याम, मिस्र, मेसीडन, अफ्रीका आदि देशों में अपने उपदेशक भेजे। बुढ़ापे में अशोक स्वयं संन्यासी हो गया और जङ्गल में रहकर भजन, ध्यान में अपना समय व्यतीत करने लगा। अशोक की बदौलत ही बौद्ध-धर्म सारे संसार में फैल गया।

अशोक का शासन-प्रबन्ध—अशोक का शासन-प्रबन्ध एक नई ढङ्ग का था। वह फौज, पुलिस कानून की अपेक्षा प्रेम, दया, धर्म पर अधिक भरोसा करता था। उसका कहना था कि प्रजा मेरे बेटे के समान है। जिस प्रकार मैं चाहता हूँ कि मेरे बेटे सुखी और सन्तुष्ट रहें उसी तरह मेरी इच्छा है कि मेरी प्रजा भी सुखी रहे। अशोक ने हमेशा इसी आदर्श को अपने सामने रक्खा। उसने

हुक्म दिया कि लोग बिना कारण जेल न भेजे जायँ, राजकार्य शीघ्रता से किया जाय, और दीन, अनाथ और विधवाओं पर दया की जाय।

अशोक का राज्य धर्म-राज्य था। प्रजा के हित के लिए उसने सड़कों पर आध-आध कोस के फासले पर आम के वृक्ष लगवाये, कुएँ खुदवाये, धर्मशालाएं बनवाई और मनुष्यों तथा जानवरों के लिए प्याऊ बिठला दी। मनुष्यों और जानवरों की चिकित्सा के लिए अस्पताल खोल दिये और हिंसा करनेवालों को दण्ड देने के लिए क़ानून बना दिये।

प्रजा का दुःख-दर्द सुनने के लिए अशोक हमेशा तैयार रहता था। उसका हुक्म था कि चाहे मैं व्यायामशाला में रहूँ, बगीचे में, पलटन के मैदान या रनिवास में, प्रजा के दुख-सुख की खबर मुझे शीघ्र मिलनी चाहिए।

हमारे समय का एक अंगरेज़ विद्वान् लिखता है कि हज़ारों बाद-शाहों में जिनके नाम इतिहास मे पाये जाते हैं केवल अशोक का नाम ही एक उज्ज्वल तारे की तरह अब तक जगमगा रहा है।

अशोक के समय का समाज—कहावत है यथा राजा तथा प्रजा। धर्मात्मा अशोक की प्रजा भी धर्मात्मा हो गई। लोग शान्ति-प्रिय हो गये और उनकी धार्मिक कट्टरता जाती रही। कुछ यवन (यूनानी) भी ऐसे थे जो हिन्दू-धर्म को मानने लगे थे और ऐसा लेख है कि एक यवन तो हिन्दू हो गया था। शिक्षा का प्रचार किसी किसी सूबे में आज-कल से भी अधिक था जैसा कि अशोक के लेखों से प्रकट होता है। मास खाने का रवाज बराबर कम हो रहा था। यज्ञ बन्द

ही हो चुके थे। अधिकांश मनुष्य गृहस्थी के जंजाल को छोड़ सन्यास लेकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे।

मौर्य्यकाल का कला कौशल—मौर्य्यकाल सुख और शान्ति का समय था। इसलिए कला-कौशल की भी अच्छी उन्नति हुई। अशोक की बनाई हुई बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गई हैं परन्तु जो कुछ मौजूद हैं हम उनसे उस समय की कारीगरी का अनुमान कर सकते हैं। साँची और भारहुत के स्तूप ईंट-पत्थर के बने हुए अभी तक प्रसिद्ध हैं। साँची के स्तूप के चारों तरफ पत्थर का घेरा है जो बिलकुल लकड़ी के घेरे की तरह मालूम होता है जिस पर सुन्दर काम बना है।

इसके अलावा पहाड़ों और चट्टानों में गुफायें बनी हुई हैं जिनसे मौर्य्यकाल की शिल्पकला का हाल मालूम होता है। इन गुफाओं के भीतर बड़े-बड़े कमरे हैं जिनमें साधुओं, भिक्षुओं की सभायें हुआ करती थीं। इस समय का संगतराशी का काम भी ऊँचे दर्जे का है। पत्थर को चिकना, साफ़ कर ऊँचे-ऊँचे सुन्दर स्तम्भ खड़े करना मामूली बात न थी। इन स्तम्भों को देखकर आज-कल के इञ्जीनियर भी चकित रह जाते हैं। अशोक के समय की और भी पत्थर की चीज़ें मिलती हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है। सारनाथ में पत्थर के सिंहों की जो मूर्ति मिली है वह विचित्र है। इससे प्रकट होता है कि पत्थर की गढ़ाई उस समय के कारीगर खूब जानते थे।

अशोक के महल का बयान करता हुआ चीनी यात्री फाहियान लिखता है कि वह ऐसा सुन्दर और विशाल था मानो देवों ने बनाया हो। मनुष्य के लिए ऐसी कारीगरी दिखाना असम्भव है।

मौर्य्य-साम्राज्य का पतन—ईसा से २३२ वर्ष पहले ४१ वर्ष राज्य करने के बाद अशोक की मृत्यु हो गई। उसके मरते ही मौर्य्य-साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया। इसके कई कारण हैं। अशोक के उत्तराधिकारियो में कोई ऐसा वीर अथवा प्रतापी नहीं था जो विदेशी आक्रमणो से राज्य को बचाता। अशोक की नीति ने भी साम्राज्य को हानि पहुँचाई। उसने तलवार उठाकर रख दी और युद्ध बिलकुल बन्द कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि सेना निकम्मी हो गई और लोग लड़ने-भिड़ने से दूर भागने लगे। जब बाहरी आक्रमण हुए और देश मे विद्रोह हुआ तब उसके बेटे, पोते कुछ न कर सके। प्रान्तो मे शासको के अत्याचार के कारण विद्रोह खडा हो गया। विन्ध्याचल के दक्षिण का सारा देश साम्राज्य से अलग हो गया और उत्तरी सीमा के आस-पास के सूबे यूनानी राजा ने हड़प लिये। ऐसी दशा मे मौर्य्य-वंश के अन्तिम सम्राट् बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र ने (१८४ ई० पू०) मार डाला और राज्य पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उसने एक नये वंश की नींव डाली जिसे शुंग-वंश कहते हैं।

अभ्यास

१—चन्द्रगुप्त को मौर्य्य क्यों कहते हैं? उसने मगध का राज्य किस प्रकार पाया था?

२—सिल्यूकस के साथ चन्द्रगुप्त की क्यों लड़ाई हुई और उसका क्या नतीजा हुआ?

३—चन्द्रगुप्त के राज्य की सीमा कहाँ तक थी? नक्शा खींचकर दिखलाओ।

ही हो चुके थे। अधिकांश मनुष्य गृहस्थी के जंजाल को छोड़ संन्यास लेकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे।

मौर्य्यकाल का कला-कौशल—मौर्य्यकाल सुख और शान्ति का समय था। इसलिए कला-कौशल की भी अच्छी उन्नति हुई। अशोक की बनाई हुई बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गई हैं परन्तु जो कुछ मौजूद हैं हम उनसे उस समय की कारीगरी का अनुमान कर सकते हैं। सांची और भारहुत के स्तूप ईंट-पत्थर के बने हुए अभी तक प्रसिद्ध हैं। सांची के स्तूप के चारों तरफ पत्थर का घेरा है जो बिलकुल लकड़ी के घेरे की तरह मालूम होता है जिस पर सुन्दर काम बना है।

इनके अलावा पहाड़ों और चट्टानों में गुफायें बनी हुई हैं जिनसे मौर्य्यकाल की शिल्पकला का हाल मालूम होता है। इन गुफाओं के भीतर बड़े बड़े कमरे हैं जिनमें साधुओं, भिक्षुओं की सभायें हुआ करती थीं। इस समय का संगतराशी का काम भी ऊँचे दर्जे का है। पत्थर को चिकना, साफ कर ऊँचे-ऊँचे सुन्दर स्तम्भ खड़े करना मामूली बात न थी। इन स्तम्भों को देखकर आजकल के इञ्जीनियर भी चकित रह जाते हैं। अशोक के समय की और भी पत्थर की चीजें मिलती हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है। सारनाथ में पत्थर के सिंहों की जो मूर्ति मिली है वह विचित्र है। इससे प्रकट होता है कि पत्थर की गढ़ाई उस समय के कारीगर खूब जानते थे।

अशोक के महल का वर्णन करता हुआ चीनी यात्री फाहियान लिखता है कि यह महल सुन्दर और विशाल था मानों देवों ने बनाया हो। मनुष्य के लिए ऐसी कारीगरी दिखाना [illegible] है।

मौर्य्य-साम्राज्य का पतन—ईसा से २३२ वर्ष पहले ४१ वर्ष राज्य करने के बाद अशोक की मृत्यु हो गई। उसके मरते ही मौर्य्य-साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया। इसके कई कारण हैं। अशोक के उत्तराधिकारियों में कोई ऐसा वीर अथवा प्रतापी नहीं था जो विदेशी आक्रमणों से राज्य को बचाता। अशोक की नीति ने भी साम्राज्य को हानि पहुँचाई। उसने तलवार उठाकर रख दी और युद्ध बिलकुल बन्द कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि सेना निकम्मी हो गई और लोग लड़ने-भिड़ने से दूर भागने लगे। जब बाहरी आक्रमण हुए और देश मे विद्रोह हुआ तब उसके बेटे, पोते कुछ न कर सके। प्रान्तो मे शासकों के अत्याचार के कारण विद्रोह खड़ा हो गया। विन्ध्याचल के दक्षिण का सारा देश साम्राज्य से अलग हो गया और उत्तरी सीमा के आस-पास के सूबे यूनानी राजा ने हड़प लिये। ऐसी दशा मे मौर्य्य-वंश के अन्तिम सम्राट् बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र ने (१८४ ई० पू०) मार डाला और राज्य पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उसने एक नये वंश की नींव डाली जिसे शुंग-वंश कहते है।

अभ्यास

१—चन्द्रगुप्त को मौर्य्य क्यों कहते हैं? उसने मगध का राज्य किस प्रकार पाया था?

२—सिल्यूकस के साथ चन्द्रगुप्त की क्यों लड़ाई हुई और उसका क्या नतीजा हुआ?

३—चन्द्रगुप्त के राज्य की सीमा कहाँ तक थी? नकशा खींचकर दिखलाओ।

४—मौर्य-साम्राज्य मे सेना का सगठन किस प्रकार हुआ था ?

५—चन्द्रगुप्त के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो।

६—मेगास्थनीज ने भारतीय समाज के विषय मे क्या लिखा है ?

७—अशोक की क्या विलक्षणता है ? उसके चरित्र की चन्द्रगुप्त के साथ तुलना करो।

८—कलिङ्ग देश कहाँ है ? अशोक के कलिङ्ग-युद्ध का वर्णन करो।

९—अशोक ने बौद्ध-धर्म क्यो स्वीकार किया ? बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए उसने क्या किया ?

१०—'अशोक का राज्य धर्म-राज्य था'। इस कथन की पुष्टि करो।

११—अशोक के सिद्धान्तो का समाज पर क्या प्रभाव पडा ?

१२—मौर्यकाल मे शिल्प-कला की बडी उन्नति हुई। इस कथन की प्रमाण देकर व्याख्या करो।

१३—मौर्य-साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे ?

१४—अशोक के राज्य का विस्तार नकशा खीचकर दिखाओ।

अध्याय ६

शुंग, कान्व, शातवाहनवंशों के राज्य और विदेशी आक्रमण

शुंग-वंश—ब्राह्मण-साम्राज्य—तुम पहले पढ़ चुके हो कि मगध के अन्तिम राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र ने कत्ल कर राज्य पर अपना अधिकार कर लिया था। पुष्यमित्र ब्राह्मण था। उसके समय में कलिङ्ग के राजा खारवेल ने मगध पर आक्रमण किया और पुष्यमित्र को पाटलिपुत्र से भगा दिया। बैक्ट्रिया के यूनानी राजा डिमीट्रिअस और मैनेण्डर (मिलिन्द) ने भी हमले किये। बड़े जोर की लड़ाई हुई जिसमें पुष्यमित्र की विजय हुई। पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया और वैदिक धर्म को अपनाया। यज्ञ होने लगे, संस्कृत भाषा का प्रचार हुआ। सुप्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि के ग्रंथ का भाष्य पतञ्जलि ने इसी समय लिखा।

यह सब होते हुए भी साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा और नये नये स्वाधीन राज्य बनने लगे। मगध का पहला-सा दबदबा न रहा। पुष्यमित्र की मृत्यु (१४९ ई० पू०) के बाद उसका बेटा अग्निमित्र राजगद्दी पर बैठा। परन्तु वह भी साम्राज्य की दशा को न सँभाल सका। शुंग-वंश का अन्तिम राजा देवभूमि चरित्रहीन पुरुष था। उसके ब्राह्मण मन्त्री वासुदेव कान्व ने उसे मार डाला और स्वयं मगध का राजा बन बैठा। इसी ने कान्व-वंश की नींव डाली।

४—मौर्य्य-साम्राज्य मे सेना का सगठन किस प्रकार हुआ था?

५—चन्द्रगुप्त के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो।

६—मेगास्थनीज ने भारतीय समाज के विषय मे क्या लिखा है?

७—अशोक की क्या विलक्षणता है? उसके चरित्र की चन्द्रगुप्त के साथ तुलना करो।

८—कलिङ्ग देश कहाँ है? अशोक के कलिङ्ग-युद्ध का वर्णन करो।

९—अशोक ने बौद्ध-धर्म क्यों स्वीकार किया? बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए उसने क्या किया?

१०—'अशोक का राज्य धर्म-राज्य था'। इस कथन की पुष्टि करो।

११—अशोक के सिद्धान्तों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

१२—मौर्यकाल मे शिल्प-कला की बड़ी उन्नति हुई। इस कथन की प्रमाण देकर व्याख्या करो।

१३—मौर्य-साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे?

१४—अशोक के राज्य का विस्तार नकशा खींचकर दिखाओ।

अध्याय ९

शुंग, कान्व, शातवाहनवंशों के राज्य और विदेशी आक्रमण

शुंग-वंश—ब्राह्मण-साम्राज्य—तुम पहले पढ़ चुके हो कि मगध के अन्तिम राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र ने क़त्ल कर राज्य पर अपना अधिकार कर लिया था। पुष्यमित्र ब्राह्मण था। इसके समय में कलिङ्ग के राजा खारवेल ने मगध पर आक्रमण किया और पुष्यमित्र को पाटलिपुत्र से भगा दिया। बैक्ट्रिया के यूनानी राजा डिमीट्रिअस और मैनेण्डर (मिलिन्द) ने भी हमले किये। बड़े ज़ोर की लड़ाई हुई जिसमें पुष्यमित्र की विजय हुई। पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया और वैदिक धर्म को अपनाया। यज्ञ होने लगे, संस्कृत भाषा का प्रचार हुआ। सुप्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि के ग्रंथ का भाष्य पतञ्जलि ने इसी समय लिखा।

यह सब होते हुए भी साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा और नये नये स्वाधीन राज्य बनने लगे। मगध का पहला-सा दबदबा न रहा। पुष्यमित्र की मृत्यु (१४९ ई० पू०) के बाद उसका बेटा अग्निमित्र राजगद्दी पर बैठा। परन्तु वह भी साम्राज्य की दशा को न सँभाल सका। शुंग-वंश का अन्तिम राजा देवभूमि चरित्रहीन पुरुष था। उसके ब्राह्मण मन्त्री वासुदेव कान्व ने उसे मार डाला और स्वयं मगध का राजा बन बैठा। इसी ने कान्व-वंश की नींव डाली।

कान्व-वंश—वासुदेव कान्व ७२ ई० पू० में मगध का राजा हुआ। इस वंश में सब मिलाकर ४ राजा हुए और उन्होंने ४५ वर्ष तक राज्य किया। परन्तु ये ब्राह्मण राजा बिलकुल निकम्मे निकले। इन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे इनका इतिहास में नाम होता। कान्व-वंश का राज्य केवल मगध देश ही में था। साम्राज्य के अन्य भाग स्वाधीन हो चुके थे। कान्व-वंश के चतुर्थ राजा सुशर्मा को मार कर २७ ई० पू० के लगभग शातवाहन-वंश के राजा ने मगध-राज्य को अपने अधीन कर लिया। शातवाहन-वंशीय राजा इस समय दक्षिण में बलवान हो रहे थे। उनके राज्य का विस्तार हिमालय से लेकर दक्षिण में तुंगभद्रा नदी तक था। शातवाहन-वंश के राजाओं के समय में भारतवर्ष में शिल्प, वाणिज्य, विद्या की खूब उन्नति हुई। भारतीय व्यापारी जहाजों पर सवार होकर अरब, फारस, अफ्रीका आदि देशों में व्यापार के लिए जाते थे। व्यापार की उन्नति होने के कारण कल्याण, सूरत, भड़ौंच आदि बन्दरगाह भी बन गये।

विदेशी आक्रमण—सिल्यूकस की मृत्यु के बाद बैक्ट्रिया (बलख) और पार्थिया (खुरासान) दोनों स्वाधीन हो गये थे। डिमेट्रियस और मैनेण्डर (मिलिन्द) जिनके हमलों का हाल ऊपर कहे जा चुके हैं बैक्ट्रिया के राजा थे। जब आपस के झगड़ों

---

* [illegible]

के कारण बैक्ट्रिया का राज्य दुर्बल हो गया तो उसे पार्थिया के राजा मिथ्रेडेटीज ने (१५० ई० पू०) जीत लिया।

परन्तु यूनानी इस राज्य को बहुत दिन तक अपने अधिकार में न रख सके। उनके ऊपर एक ऐसी आपत्ति आई जिसने उन्हे नष्ट कर दिया। यह आपत्ति शक-जाति का हमला था।

शक कौन थे और कहाँ से आये?—शक मध्य एशिया की एक घूमने-फिरनेवाली जाति के लोग थे। इन्होने यूनानियों को बैक्ट्रिया से निकाल दिया। धीरे धीरे वे हिन्दुकुश को पार कर भारत मे घुस आये और उत्तर-पश्चिम के देशो को जीतकर उन्होंने अपना शक्तिशाली साम्राज्य बना लिया। शको के दो राज्य उत्तर मे थे और तक्षशिला, मथुरा उनकी राजधानियाँ थीं। तीसरा राज्य सौराष्ट्र (काठियावाड़) मे था। शको ने शातवाहन-वंश के राजाओ को युद्ध मे हराकर कृष्णा नदी तक उनका सारा देश छीन लिया। सन् २२५ ईसवी तक शातवाहन-साम्राज्य का अन्त हो गया।

परन्तु शको की प्रभुता भी अधिक काल तक न रही। मध्य एशिया की एक दूसरी जाति ने जिसका नाम यूची था आमू नदी से आगे बढ़ना शुरू किया। इन्हीं यूचियो की एक शाखा कुशान थी। कुशानदल के सर्दारो ने अपना संगठन कर भारत मे प्रवेश किया और यूनानी अथवा शक-राज्यो को जीतकर अपना साम्राज्य बनाया। उत्तरी भारत मे कुशान वंश का राज्य बनारस तक फैल गया। कुशान-वंश मे कनिष्क सबसे प्रतापी राजा हुआ। इसका हाल आगे चलकर वर्णन करेंगे।

अभ्यास

१—शुङ्गवंश का राज्य किसने और कब स्थापित किया ? इस वंश के प्रथम राजा के विषय में क्या जानते हो ?

२—खारवेल कौन था ? उसका पुष्यमित्र के साथ क्या सम्बन्ध था ?

३—शुङ्गवंश का किस प्रकार अन्त हुआ ?

४—कान्ववंश का राज्य कहाँ से कहाँ तक था ? कान्ववंश के पतन के क्या कारण थे ?

५—शक कौन थे और कहाँ से आये ?

६—शकों के तीन प्रसिद्ध राज्य भारत में कौन कौन-से थे ?

७—शकों को किसने पराजित किया ?

अध्याय १०

❀ कुशान-साम्राज्य—सम्राट् कनिष्क

कनिष्क का राजा होना—कनिष्क कुशान-वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा है। इसके राजसिंहासन पर बैठने की तिथि के सम्बन्ध में मतभेद है। अंगरेज़ विद्वान् कहते हैं कि वह १२० ईसवी में राजा हुआ। परन्तु भारतीय विद्वानों का कहना है कि वह ७८ ई० में गद्दी पर बैठा और इसी समय से उसने शाक-संवत् चलाया।

कनिष्क की विजय—कनिष्क वीर योद्धा था। उसकी देश जीतने की प्रबल इच्छा थी। उसने मगध को जीत लिया और पूर्व के सूबों में अपना सूबेदार नियत किया। मालवा भी उसके अधीन हो गया। वहाँ भी उसका हाकिम रहने लगा। कहते हैं कनिष्क ने पार्थिया और चीनवालों को युद्ध में हराया और काशगर, यारकन्द, खुतन को भी जीत लिया। कुछ भी हो कनिष्क ने एक बड़ा साम्राज्य बनाया और चीन के सम्राट् की तरह देवपुत्र की उपाधि ली। बुढ़ापे में उसने चीन पर फिर चढ़ाई की परन्तु उसके चार मन्त्रियों ने उसे मार डाला।

साम्राज्य का विस्तार—कनिष्क का साम्राज्य मध्य एशिया तक फैला हुआ था। उत्तर में अल्ताइ पर्वत से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक सारे देश उसके अधीन थे। भारतीय राज्य की

कासगर
श्रावस्ती
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
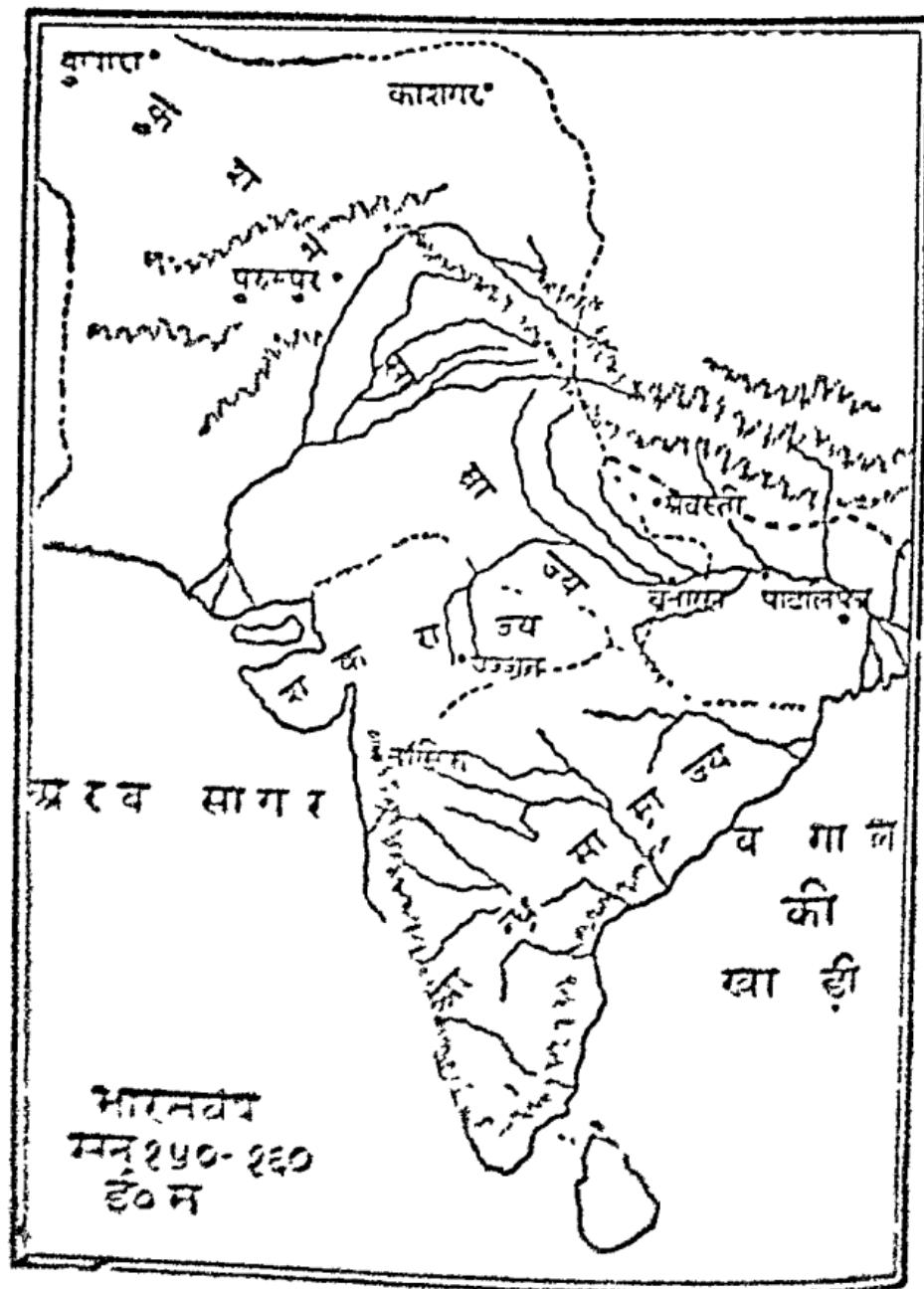
सीमा उत्तर में काश्मीर, सिन्ध तक, पूर्व मे बनारस तक और दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत तक थी।

कनिष्क और बौद्ध-धर्म—पहले कनिष्क बहुत-से देवताओ की पूजा करता था। परन्तु उसके सिक्कों से मालूम होता है कि कुछ समय के बाद उसने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर लिया था। उसके तॉबे के सिक्को पर बुद्ध की मूर्ति खुदी हुई है। अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) मे उसने बौद्धो के आपस के भेद-भाव को मिटाने के लिए सभा की। इसी समय से बौद्धो के दो दल हो गये।

कनिष्क ने बौद्धो के लिए बहुत-से विहार, स्तूप आदि बनवाये। उसने पेशावर के बाहर एक बड़ी मीनार बनवाई जिसमे गौतमबुद्ध की अस्थियो के तीन टुकड़े रक्खे गये। यह मीनार लकड़ी की ४०० फ़ुट ऊँची थी।

कनिष्क के समय का साहित्य, शिल्प, वाणिज्य, कला-कौशल—कनिष्क विद्वानो का आदर करता था। उसकी सभा मे नागार्जुन, अश्वघोष जैसे बौद्ध-धर्म के पंडित थे। चरक जिसने वैद्यकशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा है इसी के समय में हुआ है।

भारतीय व्यापार भी इस समय उन्नत दशा में था। विदेशो के साथ व्यापार होता था। भारत का बढ़िया माल रोम में बिकने जाता था और उसके बदले मे बहुत-सा सोना हमारे देश में आता था। कनिष्क ने एक नये तरह का सोने का सिक्का चलाया जो रोम के सिक्के से मिलता-जुलता था।

कनिष्क के समय में बौद्ध-शिल्पकला की बड़ी उन्नति हुई। अनेक सुन्दर इमारतें बनीं और पत्थर पर मूर्तियाँ खोदने में भी कारीगरों ने अद्भुत कौशल दिखलाया। मूर्ति बनाने में एक खास प्रकार की शैली से काम लिया गया जिसे गान्धार-शैली कहते हैं। इस शैली में यूनानी नमूनों का अनुकरण किया गया है। इस समय यूनानी देश में सब जगह इमारतें बनाते थे। कनिष्क ने अपना पेशावर का स्तूप बनाने के लिए एक यूनानी कारीगर को रक्खा था। कनिष्क के बनाये हुए कई सुन्दर मन्दिर और मकान टूटी-फूटी दशा में अभी तक मथुरा, तक्षशिला में पाये जाते हैं। मथुरा के अजायबघर में कनिष्क की एक विशाल मूर्ति रक्खी हुई है जिसमें सिर नहीं है।

कनिष्क के उत्तराधिकारी—कुशान-साम्राज्य का अन्त—कनिष्क के दो बेटे थे—वाशिष्क और हुविष्क। पिता की मृत्यु के बाद दोनों भाई एक दूसरे के बाद राजसिंहासन पर बैठे। हुविष्क ने काश्मीर में एक नगर बसाया जिसका नाम हुविष्कपुर रक्खा गया। मथुरा में उसने एक सुन्दर विहार (मठ) बनवाया जो मुसलमानों के हमले के समय मौजूद था। हुविष्क के बाद कुशान-वंश में कई राजा हुए। परन्तु साम्राज्य की हालत खराब होने लगी। सूबा के हाकिम स्वाधीन हो गये और उन्होंने अपने राज्य बना लिये।

अभ्यास

१—[illegible]

२—[illegible]

खुजराहो का शिवमन्दिर

३—कनिष्क ने बौद्ध-धर्म के लिए क्या किया ?
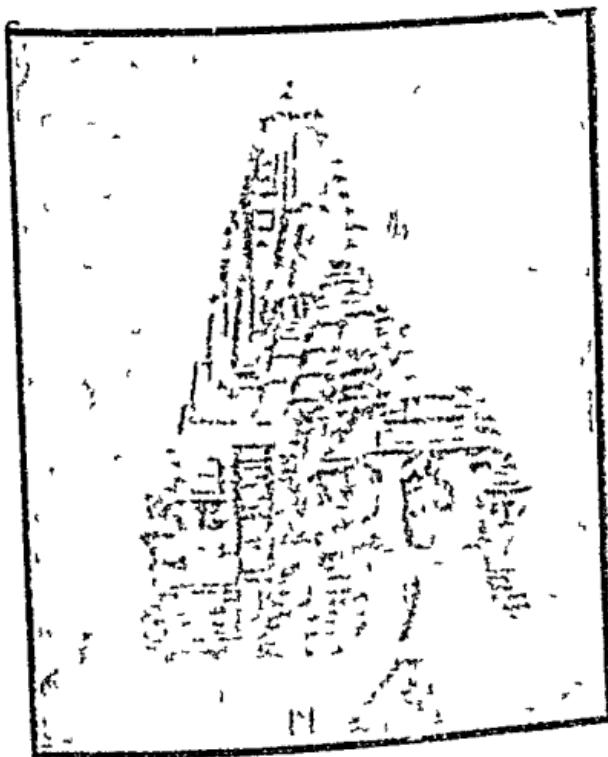
४—'कनिष्क के समय में देश की बड़ी उन्नति हुई।'—इस कथन की व्याख्या करो।

५—कनिष्क के समय की शिल्प-कला की उन्नति का वर्णन करो।

६—गान्धार-शैली क्या चीज है ? उससे तुम क्या समझते हो ?

७—कुशान-साम्राज्य का पतन क्यों हुआ ?

चरित्र—समुद्रगुप्त ने महाराजाधिराज की उपाधि ली और अश्वमेध यज्ञ किया। उसने ब्राह्मणों को देने के लिए सोने के सिक्के बनवाये जो अभी तक पाये जाते हैं। समुद्रगुप्त केवल योद्धा ही नहीं था। वह बड़ा गुणी, कवि और गायक भी था। वह स्वयं विद्वान् था और विद्वानों का आदर करता था। वह वीणा बजाने में निपुण था। इसका उसे यहाँ तक शौक था कि उसने अपने सिक्कों पर भी वीणा की तसवीर खुदवाई थी। राजा स्वयं वैष्णव था, परन्तु दूसरे धर्मों का आदर करता था। लंका के बौद्ध राजा को उसने बोधगया में यात्रियों की सुविधा के लिए मठ बनाने की आज्ञा दे दी थी।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (३८०—४१३ ई०)—यह ठीक तौर पर नहीं कहा जा सकता कि समुद्रगुप्त की मृत्यु कब हुई। परन्तु अनुमान किया जाता है कि उसने लगभग ५० वर्ष तक राज्य किया होगा। समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र रामगुप्त गद्दी पर बैठा। परन्तु उसे मथुरा के शक राजा के साथ लड़ाई करनी पड़ी। इस लड़ाई में उसके छोटे भाई चन्द्रगुप्त ने बड़ी वीरता दिखाई और वह उत्तरी भारत का सम्राट हो गया। सम्भव है रामगुप्त को चन्द्रगुप्त ने मार डाला हो या गद्दी से उतार दिया हो।

चन्द्रगुप्त के सिक्के

कनिष्क के सिक्के

समुद्रगुप्त का सिक्का
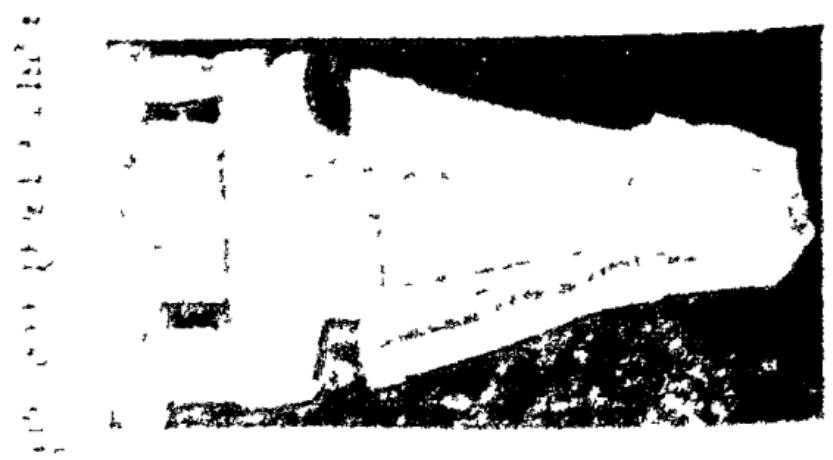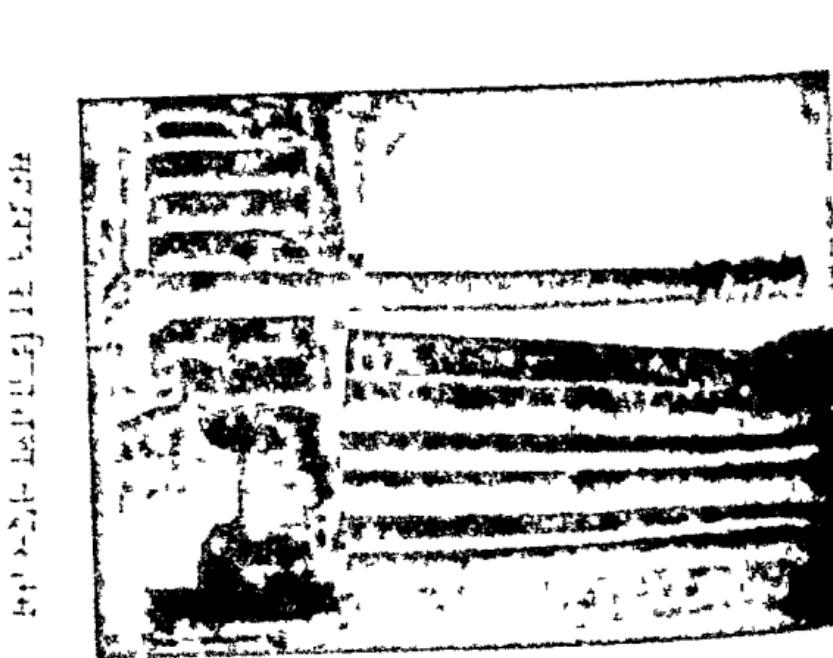
समय में वैदिक धर्म फिर उन्नत हुआ। ब्राह्मणों का प्रभाव बढ़ा और यज्ञ भी होने लगे। चन्द्रगुप्त का राज्य हिमालय से नर्मदा तक और बंगाल से पंजाब और सिन्ध तक था।

चन्द्रगुप्त का विद्याप्रेम—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य विद्याप्रेमी था। उसके दर्बार में अनेक विद्वान् रहते थे जिनका वह आदर करता था। संस्कृत के कवियों में कालिदास ने कई काव्य बनाये जिनमें शकुन्तला, मेघदूत, कुमारसम्भव, रघुवंश सबसे श्रेष्ठ समझे जाते हैं। यूरोप के विद्वान् भी शकुन्तला की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं।

विक्रम-संवत्—विक्रम-संवत् जो आज-कल हमारे देश में प्रचलित है ईसा के ५७ वर्ष पहले से आरम्भ होता है। यह ठीक तौर पर नहीं कहा जा सकता कि यह संवत् किसने चलाया। साधारण मनुष्यों की धारणा है कि यह उज्जैन के किसी राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है। परन्तु इतिहास में इस विक्रमादित्य का कोई पता नहीं लगता। कुछ लोग कहते हैं कि इसे उज्जैन के ज्योतिषियों ने चलाया होगा। किसी समय यह संवत् मालव-संवत् के नाम से भी प्रसिद्ध था। अधिकतर विद्वानों की राय है कि यह संवत्—मालव नाम की जाति के लोगों का चलाया हुआ है, जो सिकन्दर के आक्रमण के समय पंजाब में रहते थे। कुछ समय के बाद ये लोग इधर-उधर फैल गये और जिस देश में वे बसे वह मालव कहलाने लगा। बहुत-से नर्मदा और अरावली पहाड़ के बीच में बस गये। यह देश मालवा कहलाने लगा। छठी शताब्दी ईसवी के बाद यह संवत् विक्रमी संवत् के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

गुप्त सा.
काश्मीर
गु ज रा त
प्रयाग
काशी
बं गा
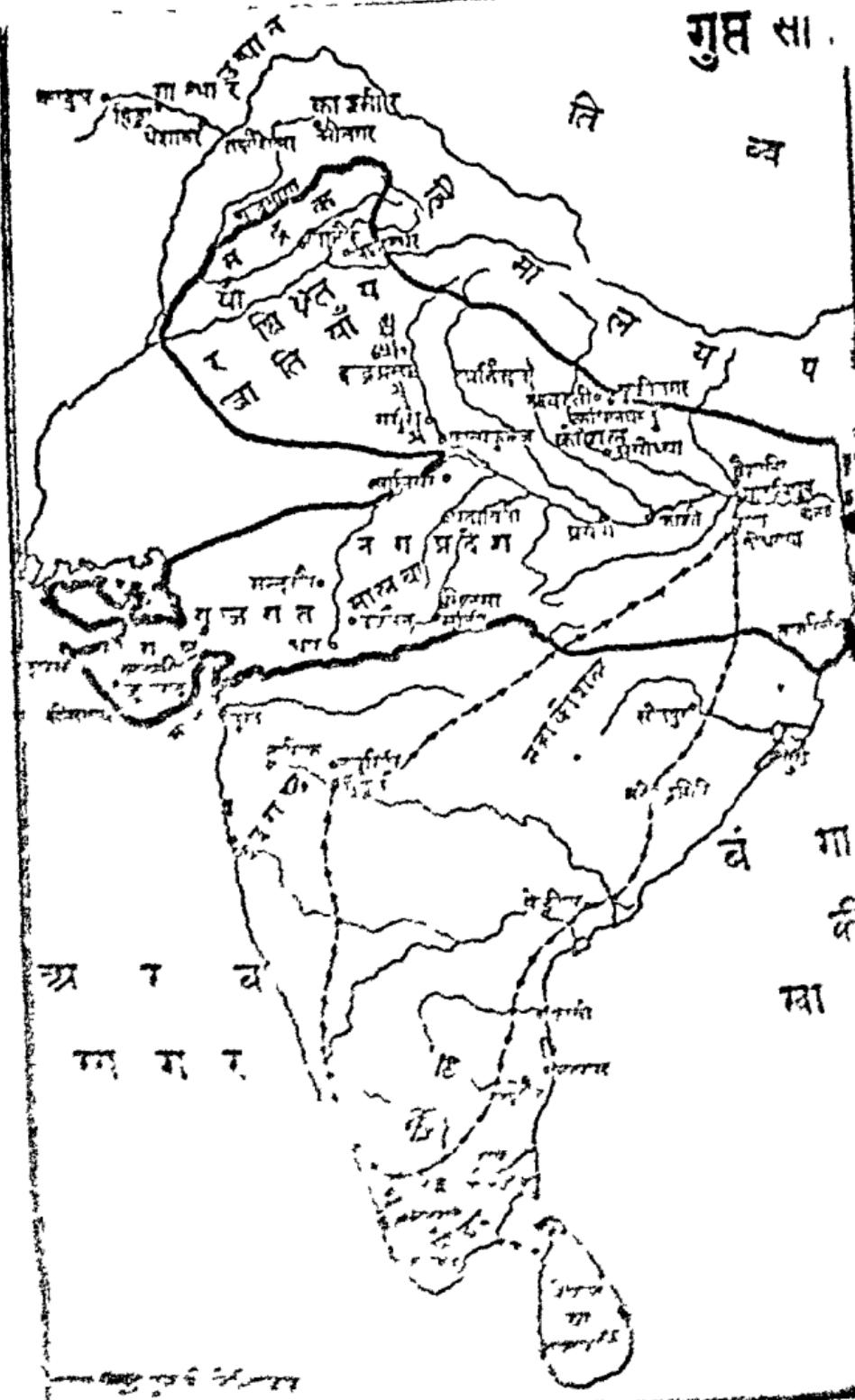
फाह्यान—चन्द्रगुप्त के समय मे चीनी यात्री फाह्यान बौद्ध-ग्रन्थों की खोज करने भारतवर्ष मे आया। हमारा देश बौद्ध-धर्म का जन्मस्थान है। इसलिए प्राचीन समय मे बहुत-से चीनी विद्वान् यहाँ यात्रा करने और धर्म-सम्बन्धी ग्रन्थ पढ़ने आते थे। फाह्यान ६ वर्ष तक चन्द्रगुप्त के राज्य मे रहा। उसने अपनी यात्रा का विवरण लिखा है जिससे उस समय के शासन, समाज का हाल मालूम होता है। वह लिखता है कि प्रजा सुखी थी। कर अधिक नहीं लिये जाते थे। राज्य का प्रबन्ध अच्छा था। लोग बेखटके एक जगह से दूसरी जगह आ-जा सकते थे। कानून नरम था। मामूली अपराधों का दण्ड केवल जुर्माना था। फाँसी बहुत कम दी जाती थी और अंगभंग का दण्ड केवल राजद्रोहियों, डाकुओं अथवा लुटेरों को दिया जाता था। यात्रियों की सुविधा के लिए सड़कों के किनारे धर्मशालाएँ बनी हुई थीं। पाटलिपुत्र बड़ा शहर था। अशोक का महल अभी तक मौजूद था। नगर मे एक अस्पताल था जहाँ दीन, अनाथों को मुफ्त दवा दी जाती थी और भोजन भी मिलता था। बीच के देश मे जहाँ ब्राह्मणों का प्रभाव अधिक था वहाँ न कोई जीवहिंसा करता था, न शराब पीता था और न प्याज खाता था। गोश्त और शराब बेचनेवालों की दूकानें नगर के बाहर होती थीं। देश खूब मालामाल था। मन्दिर और मठों की भरमार थी। विद्या पढ़ने और धर्म-चर्चा करने मे ब्राह्मण लोग अपना समय बिताते थे और पवित्रता से रहते थे। धर्म के मामलों में प्रजा को पूर्ण स्वतन्त्रता थी। प्रत्येक मनुष्य बे-रोकटोक अपने धर्म का पालन कर सकता था।

बौद्ध-धर्म का प्रभाव दिन पर दिन घट रहा था। उत्तर-पश्चिम के देशों में हूणों ने भी बौद्ध-धर्म को गहरी चोट पहुँचाई। उन्होंने मठों को नष्ट कर दिया और भिक्षुओं को मार डाला। परन्तु गुप्त राजाओं की मदद से हिन्दू-धर्म का गौरव बढ़ने लगा। देश में बहुत-से मन्दिर बन गये और ब्राह्मणों का अधिक सम्मान होने लगा। उनके राज्य में प्रत्येक मनुष्य को अपना धर्म पालने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। स्कन्दगुप्त के समय के ऐसे लेख मिले हैं जिनसे प्रकट होता है कि राजा दूसरे धर्मों का भी उतना ही आदर करते थे जितना अपने का। एक बार एक वैष्णव ने जैन-प्रतिमायें बनवाई थीं, और एक ब्राह्मण ने सूर्य के मन्दिर में दीपक चढ़ाया था।

साहित्य—संस्कृत साहित्य की इस युग में अच्छी उन्नति हुई। पुराणों का नया संस्करण हुआ। महाकवि कालिदास के काव्य जिनका वर्णन पहले कर चुके हैं, इसी समय बने। विद्वानों की राय है कि मुद्राराक्षस और मृच्छकटिक नाटक भी गुप्तकाल में लिखे गये। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दर्बार में बौद्ध पण्डितों का भी आदर था। बौद्ध विद्वान् वसुबन्धु, समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त दोनों का मित्र था। गणित, ज्योतिष आदि विद्याओं को भी लोगों ने खूब पढ़ा। ज्योतिष के प्रसिद्ध विद्वान् आर्यभट्ट और वराहमिहिर इसी काल में हुए। देश में शिक्षा का प्रचार खूब था। बिहार के नालन्द विश्वविद्यालय में हजारों विद्यार्थी दूर दूर के देशों से विद्या पढ़ने आते थे।

वाणिज्य—गुजरात, काठियावाड़ के साम्राज्य में मिल जाने से व्यापार की उन्नति हुई। यहाँ समुद्र के किनारे बन्दरगाह बन गये और विदेशों के साथ व्यापार होने लगा।

कला-कौशल—गुप्त राजा कला के प्रेमी थे। समुद्रगुप्त स्वयं कवि था और वीणा बजाने में प्रवीण था। मूर्तिपूजा के प्रचार का कला-कौशल पर बहुत प्रभाव पड़ा। अनेक सुन्दर मन्दिर बने। पत्थर पर मूर्तियां खोदी गई और चित्रकारी भी हुई। इस काल की इमारतों में कानपुर जिले में भीतर गांव और ललितपुर में देवगढ़ के मन्दिरों से उस समय की कारीगरी का पता लगता है। राजा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का बनवाया हुआ लोहे का स्तम्भ जो दिल्ली में है, धातु के काम का उत्तम नमूना है। चित्रकला में भी गुप्तकाल के कारीगर निपुण थे जैसा कि अजन्ता की गुफाओं के चित्रों से प्रकट होता है। गुप्तकाल की पत्थर की खुदाई और मूर्तियां इतनी बढ़िया थीं, कि उनकी सारे देश में नकल की जाती थी।

अभ्यास

१—गुप्त साम्राज्य किस प्रकार स्थापित हुआ? चन्द्रगुप्त प्रथम ने किस प्रकार अपनी शक्ति को बढ़ाया?

२—समुद्रगुप्त की दिग्विजय का वर्णन करो और उसका [illegible] का विस्तार दिखाओ।

३—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को शकारि क्यों कहते हैं? उसके समय में [illegible] कौन था।

४—फ़ाहियान ने [illegible] वर्णन किया?

५—इतिहास में गुप्तकाल को (१) [illegible] और (२) [illegible] क्यों कहते हैं?

६—गुप्त साम्राज्य के समय में हिन्दू धर्म की उन्नति क्यों हुई?

७—गुप्तकाल के पतन का कारण बताओ।

अजन्ता की गुफा के एक चित्र का नमूना

अजन्ता की गुफा का प्रवेश द्वार

अध्याय १२

हूणों का पतन—हर्षवर्धन अथवा शीलादित्य

हूण—तुम हूणो का हाल पहले पढ़ चुके हो। इन्होंने गुप्त-साम्राज्य को नष्ट कर दिया और बार बार पंजाब, राजपूताना पर हमले किये। मालवा को जीतकर वहाँ उन्होंने अपना राज्य स्थापित कर लिया। परन्तु उनका वैभव बहुत दिन तक न रह सका। जहाँ आजकल संयुक्त-प्रान्त है वहाँ मौखरी नामक वंश का राज्य था। इस वंश के राजाओ ने हूणो से ख़ूब टक्कर ली। हूण-राज्य योरप, एशिया में दूर तक फैला हुआ था। भारतवर्ष मे भी साकल (स्यालकोट) उनकी राजधानी थी। तोरमाण और उसका बेटा मिहिरकुल हूणो के दो वीर योद्धा हुए है। जब मौखरी-वंश के राजा हूणो को भगाने के प्रयत्न में लगे थे मालवा के वीर यशोधर्मन ने मगध-नरेश बालादित्य की मदद से सन् ५२८ इसवी मे मिहिरकुल को युद्ध में बुरी तरह हराया और उसे काश्मीर की तरफ भगा दिया। यशोधर्मन मालवा देश का ही एक राजा था। वीर और प्रतापी तो था ही। थोड़े ही दिनो मे उसने उत्तरी भारत को जीतकर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। परन्तु यह साम्राज्य अधिक दिन तक न रहा। जिस शीघ्रता से वह बना था उसी तरह नष्ट हो गया।

थानेश्वर का राज्य—गुप्त-साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने पर हमारे देश मे जो राज्य बने उनमें तीन अधिक प्रसिद्ध हैं:—(१) मौखरी-वंश का राज्य जो उस देश मे था जहाँ आजकल

संयुक्त-प्रदेश, आगरा व अवध का सूबा है, (२) दूसरा मगध का राज्य जहाँ अभी तक गुप्तवंश के राजा राज्य करते थे; (३) तीसरा थानेश्वर का राज्य जो पंजाब के पूर्व में था। थानेश्वर में प्रभाकरवर्धन नामक एक बड़ा प्रतापी राजा हुआ। उसके दो बेटे थे—राज्यवर्धन और हर्षवर्धन और एक बेटी थी जिसका नाम राज्यश्री था। उसका विवाह मौखरी-वंश के राजा ग्रहवर्मन के साथ हुआ था। सन् ६०४ ईसवी में प्रभाकरवर्धन का देहान्त हो गया और उसका बड़ा लड़का राज्यवर्धन गद्दी पर बैठा।

इसी समय मालवा-नरेश ने ग्रहवर्मन पर चढ़ाई की और उसको मार डाला और उसकी रानी राज्यश्री को कैदखाने में डाल दिया। राज्यवर्धन यह खबर पाकर आगबबूला हो गया। वह अपनी सेना लेकर गया और उसने मालवा नरेश को युद्ध में पराजित किया। परन्तु राज्यश्री को न छुड़ा सका। इतने में बङ्गाल के राजा ने राज्यवर्धन पर हमला किया और उसे मार डाला। बड़े भाई की मृत्यु के बाद राज्य-सभा के कर्मचारियों के कहने से सन् ६०६ ई० में हर्ष ने राजसिंहासन पर बैठना स्वीकार किया।

हर्षवर्धन की विजय—हर्ष ने राजगद्दी पर बैठते ही अपनी बहन को छुड़ाने की फिक्र की। इसी समय खबर मिली [illegible] राज्यश्री [illegible] किया है और [illegible] है। [illegible] [illegible]

हर्ष का साम्राज्य
६४० ई० में भारत
गान्धार
पुरुषपुर
तक्षशिला
श्रीनगर
कश्मीर
स्थानेश्वर
मतिपुर
इन्द्रप्रस्थ
मथुरा
गुर्जर
नेपाल
वृजजी
पुण्ड्रवर्द्धन
सरस्वती
कुशीनगर
पाटलिपुत्र
ग्वालियर
प्रयाग
काशी
गौड़
चम्पा
समतट
मालवा
उज्जैन
वलभी
नर्मदा
महाकोसल
उड्र
(उड़ीसा)
अजन्ता
नासिक
पुलकेशी
का
साम्राज्य
पू० चालुक्य
कलिंग
कृष्णा
पुरी
बंगाल
की
खाड़ी
नीलोर
कावेरी
सिंहल द्वीप

हर्ष का साम्राज्य
६४० ई० में भारत
गुर्जर
नेपाल
महाकोसल
उद्र
(उड़ीसा)
पुलकेशी
का
साम्राज्य
बंगाल
की
खाड़ी
सिंहल द्वीप

समाज की दशा—हर्ष के समय मे देश मे हर प्रकार की उन्नति हुई। इसका हमे पूरा पता ह्वेनसाँग के विवरण से लगता है। प्रजा सुखी थी। धन-धान्य की कमी न थी। कन्नौज एक सुन्दर विशाल नगर था। उसमें अनेक बगीचे और तालाब बने हुए थे। राजा बड़े ठाट-बाट से रहता था। वह सफेद वस्त्र धारण करता था और जवाहिरात भी पहनता था। मामूली लोगो की पोशाक सादी थी। दर्जी की ज़रूरत नही पड़ती थी। स्त्रियाँ एक लम्बा कपडा पहनती थीं जो दोनो कन्धो को ढक लेता था और ढीला ढाला नीचे लटका रहता था। शिक्षा की सुविधा के लिए बडे बडे विद्यालय बने हुए थे, जिनमे तक्षशिला, नालन्द, विक्रमशिला अधिक प्रसिद्ध हैं। नालन्द (विहार) मे हजारों विद्यार्थी बिना फीस दिये पढते थे। भोजन इत्यादि भी विद्यालय से पाते थे। स्त्रियो को भी शिक्षा दी जाती थी। पर्दा का रिवाज नहीं था। हर्ष की बहन राज्यश्री राजसभा मे बैठकर शास्त्रार्थ सुनती थी और ह्वेनसाँग से वार्तालाप करती थी।

चीनी यात्री लिखता है कि भारतवर्ष के लोग मेल-जोल से रहते हैं। उनके आचरण पवित्र हैं। वे किसी को धोखा नहीं देते और अपनी बात के पक्के होते हैं। कोई किसी की चीज जबर्दस्ती नहीं छीनता और यदि कोई दूसरे से चीज उधार लेता है तो उससे अधिक लौटा कर देता है। प्याज, लहसुन देश मे बहुत कम खाया जाता है। नीच व्यवसाय करनेवाले लोग शहरो से बाहर रहते हैं। व्यापार और शिल्प-कला भी उन्नत दशा में है। हिन्दू व्यापार के लिए विदेशों मे जाते हैं और जावा मे उनकी बस्तियाँ बनी हुई हैं।

राजा ललितादित्य ने कन्नौज पर चढ़ाई की तो वह युद्ध में हार गया और उसका राज्य काश्मीर-राज्य में मिला लिया गया।

परन्तु काश्मीर की प्रभुता अधिक दिन तक न रही। ललितादित्य के बाद जो राजा हुए उनमें इतने बड़े साम्राज्य को सँभालने की शक्ति ही न थी। काश्मीर का यह हाल था; उधर उत्तरी भारत में दो नये शक्तिशाली राज्य बन रहे थे—एक तो बंगाल में पाल-वंश का राज्य, दूसरा मालवा-राजपूताना में गुर्जरों का राज्य। गुर्जर लोग भी हूणों की तरह बाहर से भारत में आये थे। जिस समय अरब वालों ने सिन्ध पर हमला किया और भारत को जीतने के लिए आगे कदम बढ़ाया, गुर्जर-प्रतिहारों ने उन्हें रोका और देश की रक्षा की। अरबों के आक्रमणों का हाल आगे चलकर वर्णन करेंगे।

प्रतिहार-साम्राज्य का पतन—प्रतिहार-साम्राज्य की [illegible] धाक जमी हुई थी। सन् ८४० ईसवी के लगभग इस वंश में भोज नामक प्रतापी राजा हुआ। उसने पालों को भगा दिया और कन्नौज को फिर से अपनी राजधानी बनाया। परन्तु जब दक्षिण में राष्ट्रकूट-वंश ने जोर पकड़ा तब उन्होंने प्रतिहार-राज्य पर हमला करना आरम्भ कर दिया। राष्ट्रकूटों और प्रतिहारों में घोर शत्रुता थी। वे एक दूसरे का नाश करने पर कमर कसे हुए थे। सन् [illegible] ईसवी में महीपाल की मृत्यु के समय साम्राज्य की दशा अच्छी न थी। उसके पीछे [illegible] राष्ट्रकूटों का सामना न कर सके थे। गुजरात में [illegible] के परमार, मथुरा में यादव, जेजाकभुक्ति (बुन्देलखण्ड) के [illegible] लोगों ने अपने स्वाधीन राज्य बना लिये। प्रतिहार साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने पर अन्य राज्यों की भी शक्ति बढ़ गई।

पालवंश का बंगाल मे प्रभुत्व अधिक हो गया। पंजाब में शाहीवंश के ब्राह्मण राजा जयपाल ने प्रतिहारों के राज्य का कुछ भाग्य दबा लिया। शाकम्भरी और पुष्कर के चौहान भी बलवान् हो गये।

प्रतिहार-साम्राज्य की शक्ति दिन पर दिन कम हो रही थी। १० वीं शताब्दी के अन्त मे जब राज्यपाल कन्नौज का राजा हुआ, तब उसका राज्य केवल कन्नौज के आस पास ही था। साम्राज्य के शेष भाग स्वाधीन हो चुके थे। यदि इन स्वाधीन राज्यों को दम लेने का मौका मिलता, तो शायद एक बडा साम्राज्य स्थापित हो जाता परन्तु ईश्वर की ऐसी इच्छा न थी। भारत पर एक नई आपत्ति आई जिसने इन राज्यो के नाश का बीज बो दिया। यह आपत्ति थी मुसलमानो के आक्रमण। महमूद गजनवी बार-बार हिन्दुस्तान पर चढ़ आया और उसने लूट-मार करना आरम्भ कर दिया। मुसलमानों ने हिन्दुस्तान का मार्ग देख लिया और राजपूत राजाओ को युद्ध में पराजित कर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया यह सब हाल तुम आगे चलकर पढ़ोगे।

(२) दक्षिण के राज्य

चालुक्य—तुम पहले पढ चुके हो कि दक्षिण में सन् २३६ ईसवी तक शातवाहनवश का दौर-दौरा रहा। शातवाहनवंश के राजाओं ने अपना राज्य उत्तरी भारत तक बढा लिया था। इनके बाद चालुक्य-वंश की प्रभुता बढ़ी। इस वश मे पुलकेशी द्वितीय नामक एक बलवान् राजा हुआ। उसने हर्ष को दक्षिण-विजय करने से रोका और नर्मदा से पीछे हटा दिया। ह्वेनसांग सन् ६४१ ईसवी में पुलकेशी

के दर्बार में गया था। उसने अपने विवरण में उसकी शान-शौकत और पराक्रम का वर्णन किया है। सन् ६४२ ईसवी में पुलकेशी को काञ्ची के पल्लवराजा ने युद्ध में मार डाला और उसकी राजधानी को लूटा। परन्तु पुलकेशी के बेटे ने फिर अपने राज्य को सँभाल लिया और युद्ध में पल्लवों के दाँत खट्टे कर दिये।

राष्ट्रकूट—राष्ट्रकूटों का अभ्युदय होने पर चालुक्यों की प्रभुता नष्ट हो गई। राष्ट्रकूट राजा बड़े शक्तिशाली थे। उनकी अरबवालों के साथ मित्रता थी। व्यापार-द्वारा बहुत-सा रुपया देश में आता था। सन् ९७३ ईसवी के लगभग राष्ट्रकूटों को उनके शत्रुओं ने युद्ध में हरा दिया और उनकी प्रभुता को नष्ट कर दिया।

पल्लव—तीसरी, चौथी शताब्दी में पल्लवों का उत्कर्ष हुआ। पल्लवों ने काञ्ची (काञ्जीवरम) को अपनी राजधानी बनाया। [illegible] राजा विष्णुगुप्त की समुद्रगुप्त से मुठभेड़ हुई थी जिसमें गुप्त सम्राट को विजय प्राप्त हुई थी। छठी शताब्दी के अन्त में पल्लवों ने [illegible] भाग [illegible] को भी अपने अधीन कर लिया और [illegible] बनाया। परन्तु इन्हें चालुक्यों के साथ बड़ा लड़ना पड़ा। [illegible] का अभ्युदय हुआ तब पल्लवों पर [illegible] ने [illegible] और इन्हें युद्ध में हराया। इस प्रकार पल्लव-राज्य का अन्त हो गया।

[illegible], [illegible] और [illegible]—इनके [illegible] [illegible] हुई। [illegible] [illegible] के साथ [illegible] थे। [illegible] [illegible]

अध्याय १४

भारत पर मुसलमानों के आक्रमण—मुहम्मद बिनक़ासिम और महमूद ग़ज़नवी

इस्लामधर्म—इस्लाम संसार के बड़े धर्मों में से है। इसके माननेवाले भारत में आज लगभग ७ करोड़ हैं। अफ्रीका, मिस्र, टर्की और दक्षिण एशिया में अब तक इस धर्म का ज़ोर है और यहाँ मुसलमानों के स्वाधीन राज्य भी मौजूद है। मुसलमान कहते हैं कि हमारा धर्म प्राचीन है परन्तु क़ुरान-शरीफ़ में जिस धर्म का वर्णन है वह हज़रत मुहम्मद का चलाया हुआ है। संसार के अधिकांश मुसलमान इसी धर्म को मानते हैं।

एशिया के दक्षिण में अरब नामक एक देश है। इसी देश के मक्का नगर में सन् ५७१ ई० में मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। पहले वे व्यापार करते थे, परन्तु धीरे-धीरे उनकी धर्म में ऐसी रुचि बढ़ी कि वे सब कुछ छोड़कर उसी के प्रचार में लग गये। अरब की इस समय बुरी दशा थी। लोग असभ्य थे, आपस में लड़ते थे, बहुत-से देवी-देवताओं को पूजते थे। मुहम्मद साहब ने देश में शान्ति स्थापित करने और केवल एक ईश्वर को पूजने का उपदेश दिया। मक्का के मूर्ख लोगों पर इस उपदेश का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उन्होंने

काफूर ने इन राज्यों को भी नष्ट कर डाला। मदुरा भी मुसलमानों के हाथ आगया। सन् १३५८ ईसवी तक मुसलमान शासक वहाँ राज्य करते रहे।

अभ्यास

१—हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत में कौन-सा वंश प्रबल बना? उसका कुछ हाल बताओ।

२—राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में क्या जानते हो?

३—चालुक्यवंश का किस प्रकार अन्त हुआ?

४—राष्ट्रकूट कौन थे? उनका कुछ हाल बताओ।

५—यादव, होयसल, काकतीय-वंशों के राज्य कहाँ थे? उनकी स्वाधीनता का किस प्रकार अन्त हुआ?

६—सुदूर दक्षिण के राज्यों के नाम बताओ। वे किस प्रकार मुसलमानों के हाथ आए?

अध्याय १४

भारत पर मुसलमानों के आक्रमण—मुहम्मद बिनक़ासिम और महमूद ग़ज़नवी

इस्लामधर्म—इस्लाम संसार के बड़े धर्मों में से है। इसके माननेवाले भारत में आज लगभग ७ करोड़ हैं। अफ़्रीक़ा, मिस्र, टर्की और दक्षिण एशिया में अब तक इस धर्म का ज़ोर है और यहाँ मुसलमानों के स्वाधीन राज्य भी मौजूद है। मुसलमान कहते है कि हमारा धर्म प्राचीन है परन्तु क़ुरान-शरीफ में जिस धर्म का वर्णन है वह हज़रत मुहम्मद का चलाया हुआ है। संसार के अधिकांश मुसलमान इसी धर्म को मानते हैं।

एशिया के दक्षिण में अरब नामक एक देश है। इसी देश के मक्का नगर में सन् ५७१ ई० में मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। पहले वे व्यापार करते थे, परन्तु धीरे-धीरे उनकी धर्म में ऐसी रुचि बढ़ी कि वे सब कुछ छोड़कर उसी के प्रचार में लग गये। अरब की इस समय बुरी दशा थी। लोग असभ्य थे, आपस में लड़ते थे, बहुत-से देवी-देवताओं को पूजते थे। मुहम्मद साहब ने देश में शान्ति स्थापित करने और केवल एक ईश्वर को पूजने का उपदेश किया। मक्का के मूर्ख लोगों पर इस उपदेश का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उन्होंने

के कई ग्रन्थों का अपनी भाषा में अनुवाद किया। अरबों के द्वारा इन विद्याओं का यूरोप में प्रचार हुआ।

गज़नी राज्य—सुबुक्तगीन—अरब आक्रमण की आँधी आई और चली गई। इसके बाद करीब ढाई सौ वर्ष तक मुसलमानों का भारत पर कोई हमला नहीं हुआ। राजपूतों ने अपने अपने राज्य बना लिए और देश में शान्ति रही। उधर खलीफाओं की शक्ति कम हो गई और तुर्कों का ज़ोर बढ़ा। दसवीं सदी के अन्त में गज़नी में एक नया मुसलमानी राज्य स्थापित हो गया। इस राज्य का सुल्तान सुबुक्तगीन तुर्क था। जब सुबुक्तगीन ने पूर्व की ओर राज्य बढ़ाने की कोशिश की तब भटिण्डा के राजा जयपाल से उसकी लड़ाई हुई। युद्ध में जयपाल हार गया और उसे लाचार होकर सन्धि करनी पड़ी। सन् ९९७ ईसवी में सुबुक्तगीन मर गया और उसका राज्य उसके बेटे महमूद को मिला। महमूद वीरता और साहस में अपने बाप से आगे बढ़ गया। उसने हिन्दुस्तान पर कई हमले किये और बहुत सा माल लूटा।

महमूद गज़नवी के हमले—गज़नी राज्य नया था। [illegible] हुए थे। उनके साथ लड़ने के लिए [illegible] का [illegible] धन की आवश्यकता रहती थी। हिन्दुस्तान के मन्दिरों [illegible] में जो [illegible], हीरे और [illegible] किया करते थे, बहुत कुछ [illegible] मुसलमान था। उसने सोचा कि [illegible] दर्शन होगा और [illegible]

अफगानों को रुपये का लालच देकर उसने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी कर दी।

महमूद का पहला हमला पेशावर पर हुआ। राजा जयपाल ने उसका सामना किया परन्तु वह हार गया और बहुत-सा लूट का माल महमूद के हाथ लगा। इस हार से जयपाल इतना लज्जित हुआ कि वह आग मे जलकर मर गया। उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे आनन्दपाल ने लड़ाई जारी रक्खी। कहा जाता है कि उसकी मदद के लिए दिल्ली, कन्नौज, अजमेर, ग्वालियर, मालवा, कालिञ्जर आदि देशों के राजाओं ने अपनी सेनायें भेजीं और स्त्रियों ने अपने गहने बेचकर रुपया भेजा। राजपूत सेना बड़ी वीरता से लड़ी। खोक्खरों ने महमूद की सेना में घुसकर ऐसी मारकाट मचाई कि उसके छक्के छूट गये। परन्तु दुर्भाग्य से आनन्दपाल का हाथी भड़कर पीछे भागा। सिपाहियों ने समझा कि राजा लड़ाई के मैदान से भाग रहा है। उनके भी पैर उखड़ गये। महमूद की जीत हुई और लहौर उसके अधिकार में आगया।

लाहौर हाथ आ जाने से महमूद को उत्तरी भारत पर हमला करने की सुविधा हुई। अब उसने बार-बार हमला करना आरम्भ किया। मन्दिरों में इस समय बहुत-सा धन इकट्ठा किया जाता था इसलिए उसने मन्दिरों और बडे-बडे शहरों पर छापा मारा। मुलतान, नगर-कोट, थानेश्वर को उसने खूब लूटा और मालामाल होकर गज़नी को वापस लौट गया। सन् १०१८ ईस्वी में महमूद फिर अपनी [illegible] सेना कन्नौज के सामने आ खड़ा हुआ। वहाँ के राजा [illegible] प्रतिहार ने उसकी अधीनता स्वीकार कर अपने प्राण [illegible]

३—अरब लोग सिन्ध को जीतकर आगे क्यों न बढ़ सके? कारण बताओ।

४—जज़िया से तुम क्या समझते हो?

५—अरबों पर भारतीय विजय का क्या प्रभाव पड़ा?

६—महमूद गज़नवी ने हिन्दुस्तान पर क्यों हमले किये? उसके मुख्य हमलों का वर्णन करो।

७—महमूद के हमलों का देश पर क्या प्रभाव पड़ा?

८—महमूद की एशिया के प्रसिद्ध बादशाहों में क्यों गिनती की जाती है?

९—गजनी-साम्राज्य के पतन का क्या कारण था? मुहम्मद ग़ोरी को गजनी का राज्य किस प्रकार मिला?

सोलंकी—सोलंकियो का राज्य गुजरात मे था। उनकी राजधानी अन्हलवाड़े में थी। सोलकी राजपूत पहले प्रतिहारो के अधीन थे, परन्तु पीछे स्वाधीन हो गये थे। जैन-ग्रन्थों मे इस वंश का पूरा इतिहास मिलता है। जब महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर पर हमला किया, गुजरात मे भीम सोलकी राज्य करता था। उसने महमूद से टक्कर ली थी। इस वंश मे कुमारपाल सबसे प्रसिद्ध राजा हुआ। वह जैन-धर्म को मानता था। जैन विद्वान् उसके दर्बार में रहते थे। कुमारपाल की मृत्यु (११७३ ई०) के बाद सोलकियों की शक्ति कम हो गई। बघेलों ने जोर पकड़ा परन्तु उन्हे भी अलाउद्दीन खिलजी ने तहस-नहस कर डाला।

सेन—बंगाल मे पहले पाल-वंश का राज्य था। परन्तु १२ वीं शताब्दी के आरम्भ में सेन-वंश के राजाओ ने पालों को निकाल दिया और अपना आधिपत्य जमा लिया। सेन-वश के लोग दक्षिण से बगाल में रोजगार की तलाश म आये थे। धीरे-धीरे उन्होंने राज्य छीन लिया। इस वश मे सबसे प्रसिद्ध राजा लक्ष्मणसेन हुआ जो सन् १११९ ई० मे गद्दी पर बैठा। सेन राजाओं ने बंगाल को मुसलमानों से बचाने का कुछ भी प्रयत्न नहीं किया। १२ वीं शताब्दी के अन्त मे मुसलमानो ने बंगाल को आसानी से जीत लिया।

राजपूत-समाज—राजपूत लड़ने भिड़नेवाले लोग थे। वे युद्ध के लिए सदा तैयार रहते थे। परन्तु युद्ध के समय वे विश्वास-घात नहीं करते थे, न स्त्रियो और बच्चों को मारते थे। वे अपनी बात के पक्के होते थे। शत्रु के साथ भी उनका बर्ताव उदार होता

हिन्दू राजाओं ने शिल्पजीवियों को आश्रय दिया और अनेक सुन्दर मन्दिर बनवाये। एलोरा का कैलाशमन्दिर और एलीफेन्टा की गुफायें इसी काल में बनीं। आबू का जैनमन्दिर भारतवर्ष का प्रसिद्ध इमारतों में से है। पुरी का जगन्नाथजी का मन्दिर १२ वीं शताब्दी में गांगदेव चोड़ ने बनवाया था। मथुरा में बहुत-से विशाल मन्दिर थे जिन्हें देखकर महमूद गजनवी भी चकित हो गया था।

धर्म—राजपूतों के उत्कर्ष से बौद्ध-धर्म को हानि पहुँची। उन्होंने हिन्दू-धर्म को अपनाया और ब्राह्मणों का सम्मान किया। कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य्य ने वैदिक-धर्म की शिक्षा दी और बौद्ध-धर्म का खण्डन किया। १२ वीं शताब्दी में कई ऐसे आचार्य हुए जिन्होंने भक्ति का उपदेश किया और वैष्णव-धर्म का प्रचार किया। ब्राह्मणों के प्रयत्न और राजपूतों की सहायता से उत्तरी भारत में फिर हिन्दू-धर्म की पताका फहराने लगी।

(२) मुसलमानों की विजय

मुहम्मद गोरी का आक्रमण—मुहम्मद गोरी का हाल तुम पहले पढ़ चुके हो। वह गजनी और गोर का सुलतान था। उसका पहला हमला मुलतान पर हुआ जिसे उसने आसानी से जीत लिया। तीन वर्ष बाद उसने गुजरात पर चढ़ाई की। राजा भीम सोलंकी ने (११७८ ई०) वीरता से उसका मुक़ाबिला किया और उसे देश से बाहर भगा दिया। परन्तु हारने पर भी मुहम्मद की हिम्मत कम न हुई। सन् ११८७ ई० में उसने पंजाब पर चढ़ाई की और लाहौर, सरहिन्द को अपने अधिकार में कर लिया।

था। जब चित्तौर नरेश राना साँगा ने मालवा के सुलतान महमूद खिलजी द्वितीय को लड़ाई में हराया, तब वह बुरी तरह घायल हुआ। राना उसे उठवाकर अपने डेरे में ले गये और उसका इलाज कराया। ऐसे ही अनेक उदाहरण राजपूत-औदार्य के दिये जा सकते हैं। राजपूत सत्य का पालन करते थे और दीन-दुखियों की रक्षा के लिए सदा तैयार रहते थे। राजपूत-समाज में स्त्रियों का आदर था। वीरता में स्त्रियाँ भी मर्दों से कम न थीं। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए वे अग्नि में जलकर भस्म हो जाती थीं। राजपूत स्वामिभक्त और देशभक्त होते थे। इसके इतिहास में अनेक प्रमाण हैं। परन्तु यह न समझना चाहिए कि राजपूत बिलकुल दोषरहित थे। वे भंग और अफीम खाते थे, इसलिए उनमें आलस्य अधिक था। आपस में बैर इतना था कि वे कभी मिलकर बाहरी शत्रु का सामना नहीं कर सकते थे।

हिन्दू-सभ्यता (६५० ई० से १२०० ई० तक)

साहित्य, विज्ञान, कला की उन्नति—राजपूत-काल में साहित्य और कला की भी उन्नति हुई। भारत के राजा भोज और [illegible] के राजा [illegible] स्वयं विद्वान थे और कविता भी करते थे। [illegible] प्रसिद्ध नाटककार कन्नौज के राजा [illegible] के दरबार में रहता था। [illegible] की राजतरंगिणी और [illegible] इसी काल में बने। ज्योतिष और गणित [illegible] की भी उन्नति हुई। [illegible] भास्कराचार्य ने [illegible] नामक ग्रन्थ लिखा है।

हिन्दू राजाओ ने शिल्पजीवियो को आश्रय दिया और अनेक सुन्दर मन्दिर बनवाये। एलोरा का कैलाशमन्दिर और एलीफेन्टा की गुफायें इसी काल मे बनीं। आबू का जैनमन्दिर भारतवर्ष का प्रसिद्ध इमारतों मे से है। पुरी का जगन्नाथजी का मन्दिर १२ वीं शताब्दी में नागदेव चोड़ नें बनवाया था। मथुरा मे बहुत-से विशाल मन्दिर थे जिन्हें देखकर महमूद गज़नवी भी चकित हो गया था।

धर्म—राजपूतो के उत्कर्ष से बौद्ध-धर्म को हानि पहुँची। उन्होंने हिन्दू धर्म को अपनाया और ब्राह्मणों का सम्मान किया। कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य्य ने वैदिक-धर्म का शिक्षा दी और बौद्ध-धर्म का खण्डन किया। १२ वीं शताब्दी मे कई ऐसे आचार्य हुए जिन्होंने भक्ति का उपदेश किया और वैष्णव-धर्म का प्रचार किया। ब्राह्मणों के प्रयत्न और राजपूतो की सहायता से उत्तरी भारत में फिर हिन्दू-धर्म की पताका फहराने लगी।

(२) मुसलमानों की विजय

मुहम्मद गोरी का आक्रमण—मुहम्मद गोरी का हाल तुम पहले पढ़ चुके हो। वह गज़नी और गोर का सुलतान था। उसका पहला हमला मुलतान पर हुआ जिसे उसने आसानी से जीत लिया। तीन वर्ष बाद उसने गुजरात पर चढ़ाई की। राजा भीम सोलंकी ने (११७८ ई०) वीरता से उसका मुकाबिला किया और उसे देश से बाहर भगा दिया। परन्तु हारने पर भी मुहम्मद की हिम्मत कम न हुई। सन् ११८७ ई० मे उसने पंजाब पर चढ़ाई की और लाहौर, सरहिन्द को अपने अधिकार में कर लिया।

महमूद का वंशज खुसरो मलिक क़ैद कर गज़नी भेज दिया गया।
जब मुहम्मद गोरी भटिंडा की तरफ बढ़ा तब दिल्ली, अजमेर के
राजा पृथ्वीराज को आगे सूझा। कहते हैं कि कन्नौज के राजा जय
चन्द ने पृथ्वीराज से बदला लेने के लिए मुहम्मद गोरी को बुलाया
था। परन्तु यह बात गलत है। पृथ्वीराज कई राजपूत राजाओं
को लेकर लड़ने चला। सन ११९१ ईसवी में थानेश्वर के पास
नराइन (तरावड़ी) के मैदान में लड़ाई हुई। मुहम्मद बुरी तरह घायल
होकर भागा और लाहौर में अपने घावों का इलाज कराकर गज़
नी वापस चला गया।

नराइन की दूसरी लड़ाई (सन् ११९२ ई०)—मुहम्मद
गोरी इस हार से बड़ा लज्जित हुआ। वह सब काम छोड़कर हिन्दु-
स्तान पर चढ़ाई करने की तैयारी करने लगा। उधर पृथ्वीराज और
कन्नौज के राजा जयचन्द में अनबन हो गई। मुहम्मद गोरी [illegible]
[illegible] से और [illegible] सेना लेकर चढ़ आया। राजपूत भी लड़कर [illegible]
परन्तु गोरी के घुड़सवारों के सामने उनकी एक न चली। जब [illegible]
[illegible] होने लगा तब पृथ्वीराज नराइन के मैदान से भाग [illegible]
[illegible] मार डाला गया। दिल्ली अजमेर का राज्य गोरी के [illegible]
आ गया। परन्तु वह हिन्दुस्तान में ठहरा नहीं, लूट का माल [illegible]
[illegible] गज़नी वापस चला गया और अपने नायब कुतुबुद्दीन
[illegible] का प्रबन्ध करने के लिए छोड़ गया।

जयचन्द की पराजय—[illegible]
[illegible]
[illegible]

कन्नौज पर चढ़ाई की। कन्नौज का राजा जयचन्द भारत के प्रतापी राजाओं में गिना जाता था। उसे अकेले ही मुसलमानों से लड़ना पड़ा। किसी राजपूत राजा ने उसकी सहायता न की। जयचन्द चन्दवार की लड़ाई मे मारा गया और गंगा के दक्षिण का देश मुसलमानों के अधिकार मे आगया। कन्नौज स्वाधीन रहा और गहरवार राजपूत सन् १२०२ ई० तक बराबर लड़ते रहे।

बिहार-बङ्गाल की विजय—सन् ११९७ ई० म गोरी के सिपहसालार बख्तियार के बेटे मुहम्मद ने बिहार पर हमला किया। मुसलमानों ने बौद्ध-मठों को तोड़ डाला और बहुत-से मकान जला दिये। इसके दो वर्ष बाद मुहम्मद गौड़ (बङ्गाल) की तरफ बढ़ा और नदिया पर छापा मारा। बङ्गाल, बिहार को जीतकर मुहम्मद ने मुहम्मद गोरी का आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

कालिञ्जर की विजय—सन् १२०३ ईसवी में मुहम्मद गोरी के सिपहसालार कुतुबुद्दीन ने कालिञ्जर का प्रसिद्ध किला चन्देल राजा परमाल (परमर्दिदेव) के मंत्री से जीत लिया। परमाल को किसी राजपूत राजा ने सहायता न दी। वह बड़ी वीरता से लड़ा, परन्तु हार गया। कालिञ्जर की विजय के बाद महोबा और ग्वालियर भी मुसलमानों के हाथ आगये।

मुहम्मद गोरी की मृत्यु—सन् १२०५ ईसवी में मुहम्मद गोरी खोखर जाति का विद्रोह दबाने के लिए फिर पञ्जाब आया। उनके साथ बड़ी घोर लड़ाई हुई, परन्तु क़ुतुबुद्दीन की मदद से सुलतान की जीत हुई। इस युद्ध के बाद जब सुलतान गजनी को वापस लौट रहा था, किसी ने उसे खञ्जर से मार डाला (सन् १२०६ ई०)।

थे। कुतुबुद्दीन ने ख़्वाजा कुतुबुद्दीन ऊशी नामक मुसलमान फ़कीर की यादगार मे दिल्ली मे एक मीनार की नीव डाला, जिसे सन् १२३१ ई० मे इल्तुतमिश ने पूरा किया। यह मीनार कुतुबमीनार के नाम से प्रसिद्ध है।

ईल्तुतमिश (१२११-३६ ई०)—कुतुबुद्दीन के मरने के बाद उसका बेटा आरामशाह गद्दी पर बैठा परन्तु उसको सर्दारों ने गद्दी से उतारकर ऐवक के दामाद शमसुद्दीन इल्तुतमिश को सुलतान बना दिया। इल्तुतमिश एबक का गुलाम था और इस समय बदायूँ का हाकिम था। गद्दी पर बैठते ही उसने गज़नी, सिन्ध और बगाल के सूबेदारों पर चढ़ाई की और उन्हे पराजित किया। परन्तु सन् १२२१ ई० मे हिन्दुस्तान पर एक बडी आपत्ति आई। मुग़लो के सर्दार चंगेज़ख़ाँ ने हिन्दुस्तान पर धावा किया परन्तु वह सरहदी सूबा मे लूट-मारकर वापस लौट गया। इल्तुतमिश ने अब अपना राज्य बढ़ाने की तैयारी की। उसने राजपूताना पर हमला किया और रणथम्भौर, ग्वालियर, भिलसा के क़िलो को जीत लिया।

इल्तुतमिश गुलाम-वंश का प्रतापी सुलतान था। उसने विद्रोह को दबाया और राज्य का अच्छा प्रबन्ध किया। बडे-बडे ओहदे उसने अपने गुलामो का दिये और ४० गुलामो की एक सभा बनाई जिनकी मदद से वह राज्य का काम करता था। सन् १२३६ ई० मे इल्तुतमिश मर गया। उसके बेटे ऐय्याश और निकम्मे थे। इसलिए ४० गुलाम सर्दारो ने जो चाहा वह किया। मरने से पहले इल्तुतमिश ने वसीयत की थी कि मेरे बाद मेरी बेटी रज़िया गद्दी पर बैठे। परन्तु कुछ सर्दारो ने स्त्री का गद्दी पर बैठना उचित न समझ कर उसके

सुलताना रज़िया बेगम

कुतुबमीनार

मेंट फ़ीरोज़ को सुलतान बनाया। फ़ीरोज़ भी निकम्मा निकला और राज्य में गड़बड़ होने लगी। तब सर्दारों ने उसे गद्दी से उतारकर मार डाला और रज़िया को सुलताना बनाया।

रज़िया सुलताना (१२३६-४० ई०)—रज़िया मामूली स्त्री न थी। उसमें शासन करने की योग्यता थी, और वह वीर भी थी। मुसलमानों का राज्य हिन्दुस्तान में लगभग एक हज़ार वर्ष रहा, परन्तु इस ज़माने के शासकों में केवल एक स्त्री गद्दी पर बैठी वह रज़िया ही है। रज़िया मर्दाने कपड़े पहनकर दर्बार में बैठती थी और राज्य का कार्य्य करती थी। घोड़े पर चढ़कर वह शिकार को जाती और युद्ध करने के लिए तैयार रहती थी। उसने बगावत करनेवाले मुसलमान सर्दारों को दबाया और राज्य का प्रबन्ध अच्छा किया। परन्तु उसने एक हबशी को घोड़ों का अफ़सर बना दिया और उसके साथ प्रेम का बर्ताव करने लगी। यह देखकर तुर्क सर्दार, जिन्हें स्त्री का गद्दी पर बैठना अखरता था, नाराज़ हो गये और उसके चाल-चलन को बुरा बताने लगे। सूबों में बलवा होने लगा और सर्दारों ने रज़िया को क़ैद कर लिया। बाद [illegible] से निकलकर फिर एक बार राज्य लेने की कोशिश की परन्तु हार गई। लड़ाई के मैदान से भागकर वह [illegible]। वहाँ कुछ हिन्दुओं ने उसे पकड़ लिया और [illegible]

[illegible]

नासिरुद्दीन (१२४६-६६ ई०)—रजिया के बाद ईल्तुतमिश का एक बेटा और पोता एक दूसरे के बाद गद्दी पर बैठे, परन्तु वे निकम्मे निकले। तब सर्दारो ने सन् १२४६ ई० मे ईल्तुतमिश के बेटे नासिरुद्दीन को सुलतान बनाया। नासिरुद्दीन केवल नाम-मात्र का सुलतान था। राज्य का सब काम उसका सिपहसालार और ससुर बलबन करता था। सुलतान बड़ी सादगी से रहता था और क़ुरानशरीफ की नक़ल कर अपना खर्च चलाता था। कहते है एक बार किसी आदमी ने उसकी लिखी हुई किताब मे कुछ ग़लतियाँ बताई। सुलतान ने उसके सामने तो जैसा उसने बताया था वैसा ही ठीक कर दिया, परन्तु जब वह चला गया, तब किताब ज्यों की त्यों कर ली। इस पर किसी ने पूछा :—बादशाह सलामत। ऐसा करने से क्या फ़ायदा? बादशाह ने उत्तर दिया बिना कारण किसी के दिल को दुखाने से क्या काम। ऐसा करने से उसका दिल नहीं दुखा और मेरी किताब का कुछ बिगड़ा नहीं।

बलबन ने राजपूताना और दोआब मे बग़ावतो को दबाया और अमन-चैन कायम किया। मेवात मे भी बड़ी लड़ाई हुई और बुन्देलखण्ड में चन्देल राजपूतो के कई किले छीन लिये गये। २० वर्ष राज्य करने के बाद सन् १२६६ ई० मे नासिरुद्दीन की मृत्यु हो गई। नासिरुद्दीन के कोई औलाद न थी, इसलिए उसने अपने मंत्री बलबन के नाम राज्य की वसीयत कर दी।

गयासुद्दीन बलबन (१२६६-८७ ई०)—बलबन बड़ा वीर और प्रतिभाशाली सुलतान था। उसने पहले ४० ग़ुलामो की पलटन के

कत्ल कराया। जब विद्रोही सजा पा चुके तब बलबन ने अपने बेटे बुगराखाँ को बंगाल का सूबेदार नियत किया और उससे कहा कि शराब कभी न पीना और दिल्ली-राज्य से बिगाड़ न करना।

बलबन की मृत्यु—बलबन की अवस्था अब ८० वर्ष से अधिक हो गई थी। अपने शासन-काल मे उसने किसी से हार न मानी परन्तु बुढापे मे उसे बड़ा दुख देखना पड़ा। जब उसका बडा बेटा मुहम्मद मुगलो के हाथ से मारा गया, तब उसका हृदय टूट गया। वह शोक से बेचैन हो गया और थोड़े दिन बाद सन् १२८६ ई० मे मर गया।

बलबन का दर्बार—बलबन का दर्बार एशिया में प्रसिद्ध था। एशिया के देशो के बहुत-से विद्वान्, अमीर और सर्दार मुगलो के आक्रमण से घबराकर हिन्दुस्तान में भाग आये थे और बलबन के दर्बार में रहने लगे थे। दर्बार के नियम बहुत कड़े थे। बलबन न तो कभी खुद हँसता और न किसी दूसरे को अपने सामने हँसने देता था। कोई उसके सामने पूरी तरह से कपड़े पहने बिना आ नहीं सकता था। उसके भय के मारे लोग काँपते थे। दर्बार की शान-शौकत को देखकर बड़े बड़े अमीर दंग रह जाते थे। ऐसा कठोर शासक होते हुए भी बलबन विद्वानो और कवियों का आदर करता था। फारसी का प्रसिद्ध कवि अमीर ख़ुसरो उसके दर्बार मे रहता था।

ग़ुलाम-वंश का अन्त—बलबन की मृत्यु के बाद ग़ुलाम-वंश के बुरे दिन आगये। उसका पोता कैकुबाद दिल्ली का सुलतान हुआ और अपना सारा समय अय्याशी और नाच रंग में व्यतीत करने लगा।

अध्याय १७

ख़िलजी-साम्राज्य

(१२९०-१३२० ई०)

जलालुद्दीन खिलजी (सन् १२९०-९६)—जलालुद्दीन खिलजी ७० वर्ष का सीधा-सादा आदमी था। वह ऐसे कठिन समय मे दिल्ली का बादशाह होने योग्य न था। उसके नरम बर्त्ताव से देश मे अशान्ति फैलने लगी और डाकू लुटेरे चारो तरफ लूट मार करने लगे। बहुत-से ठग पकड़ कर दिल्ली लाये गये परन्तु उन्हे सुलतान ने बजाय सज़ा देने के बङ्गाल भेज दिया। बलबन के भतीजे मलिक छज्जू ने जो इलाहाबाद का हाकिम था, बगावत की परन्तु हार गया। सुलतान ने उसका अपराध क्षमा कर दिया।

अलाउद्दीन का देवगिरि पर हमला (१२९४ ई०)—अलाउद्दीन, जलालुद्दीन का भतीजा और दामाद था। अलाउद्दीन की अपनी स्त्री और सास से नहीं पटती थी। इस झगड़े से बचने और दौलत पाने के लिए वह बाहर जाना चाहता था। उसने सुन रक्खा था कि देवगिरि के यादव राजा रामचन्द्र के पास बड़ा माल है। इसलिए सन् १२९४ ई० में उसने ८,००० सवार लेकर चुपचाप उस पर चढ़ाई कर दी। इस एकाएक हमले से रामचन्द्र घबडा गया, उसकी सेना से कुछ भी करते न बना। राजा रामचन्द्र ने अलाउद्दीन को असंख्य द्रव्य दिया और एलिचपुर का इलाका भी दे दिया। उस समय दक्षिण में बहुत धन था और कहते हैं कि अलाउद्दीन सोने, चाँदी, जवाहिरात के ढेर अपने साथ कड़ा को ले गया था।

अफ़सर को जो दिल्ली से भाग गया था अपने यहाँ रख लिया था। अलाउद्दीन इसी बात पर चिढ़ गया और उसने एक बड़ी सेना लेकर किले के चारो ओर घेरा डाल दिया। हम्मीर के मंत्रियों ने विश्वास-घात किया, इसलिए उसकी हार हो गई। हम्मीर, उसकी रानियाँ और मुगल सर्दार जिन्होंने उसकी मदद की थी, सब मार डाले गये और रणथम्भौर का किला मुसलमानो के हाथ आगया (१३०१ ई०)। इसके बाद अलाउद्दीन ने चित्तौर के किले पर चढ़ाई की। राना रत्नसिंह और उसके साथी बड़ी वीरता से लड़े परन्तु मुसलमानो की जीत हुई। कहते है अलाउद्दीन ने रत्नसिंह की रानी पद्मिनी को लेने के लिए चित्तौड पर चढ़ाई की थी। इस विषय में विद्वानो की एक राय नही है। कोई कोई कहते है कि पद्मिनी की कहानी बिलकुल झूठी और निर्मूल है, उसका कोई प्रमाण नहीं। कुछ भी हो इतना सच है कि अलाउद्दीन ने किले पर चढ़ाई की। राजपूत लड़ाई में मारे गये और रानी अन्य वीर स्त्रियों के साथ आग मे जलकर मर गई। चित्तौर में अपने बेटे खिजरखाँ को सूबे-दार नियत कर अलाउद्दीन दिल्ली लौट आया।

अलाउद्दीन ने जैसलमेर पर चढ़ाई की। राजपूत मुसलमानों के सामने न ठहर सके। स्त्रियो ने अपनी रक्षा का कोई उपाय न देख जौहर किया और राजपूतो की कीर्ति को उज्ज्वल रक्खा। अब सारा उत्तरी भारत सिन्ध से लेकर बंगाल तक और पंजाब से नर्मदा तक अलाउद्दीन के अधिकार में आगया।

दक्षिण—इसके बाद सुलतान ने दक्षिण को जीतने का इरादा किया। देवागिर के राजा ने पहले ही दिल्ली सुलतान की अधीनता

जब जलालुद्दीन ने इस विजय का हाल सुना तब वह बड़ा प्रसन्न हुआ और कड़ा मे अलाउद्दीन से मिलने गया। उसके दर्बारियों ने जाने से रोका परन्तु सुलतान न माना और थोड़े-से आदमी लेकर नाव पर सवार हो गया। अलाउद्दीन पहले ही उसे क़त्ल करने की तैयारी कर चुका था। ज्यो ही सुलतान नाव से उतरा, अलाउद्दीन आगे बढ़ा और उससे गले लगकर मिला। जब दोनो नाव की तरफ़ चले तब अलाउद्दीन के इशारे से उसके साथी इख़्तियारुद्दीन ने सुलतान का सिर काट लिया। इसके बाद उसका सिर भाले में छेद कर सेना मे फिराया गया जिससे सबको मालूम हो जाय कि सुलतान मारा गया।

अलाउद्दीन का सुलतान होना (१२९६ ई०)—इस हत्या-कांड के बाद अलाउद्दीन दिल्ली आया। वहाँ बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत हुआ। रुपये पैसे की ख़ूब बखेर हुई। हुक्म हुआ कि नगर में सब जगह जलसे हों और अमीर-ग़रीब सबका राज्य की ओर से सत्कार किया जाय। बड़े बड़े जलाली सर्दार अलाउद्दीन से आ मिले और ऊँचे ओहदो पर तैनात हो गये। लोग धन पाकर अपने पहले सुलतान को भूल गये और अलाउद्दीन की जय बोलने लगे।

राज्य का विकास—उत्तरी भारत—राजसिंहासन पर बैठते ही अलाउद्दीन ने एक बड़ा साम्राज्य बनाने की इच्छा की। पहले उसने गुजरात पर चढ़ाई की। राजा करण बघेल हार गया और सन् १२९७ ई० मे गुजरात को मुसलमानों ने जीत लिया। रणथम्भौर पर सुलतान ने स्वयं चढ़ाई की और उसे जीत लिया। रणथम्भौर के चौहान राजा हम्मीर ने मीर मुहम्मदशाह नामक एक मङ्गोल

अफ़सर को जो दिल्ली से भाग गया था अपने यहाँ रख लिया था। अलाउद्दीन इसी बात पर चिढ़ गया और उसने एक बड़ी सेना लेकर किले के चारो ओर घेरा डाल दिया। हम्मीर के मंत्रियों ने विश्वास-घात किया, इसलिए उसकी हार हो गई। हम्मीर, उसकी रानियाँ और मुगल सर्दार जिन्होने उसकी मदद की थी, सब मार डाले गये और रणथम्भौर का किला मुसलमानों के हाथ आगया (१३०१ ई०)। इसके बाद अलाउद्दीन ने चित्तौर के किले पर चढ़ाई की। राना रत्नसिंह और उसके साथी बड़ी वीरता से लड़े परन्तु मुसलमानो की जीत हुई। कहते है अलाउद्दीन ने रत्नसिंह की रानी पद्मिनी को लेने के लिए चित्तोड़ पर चढ़ाइ की थी। इस विषय में विद्वानो की एक राय नहीं है। कोई कोइ कहते है कि पद्मिनी की कहानी बिलकुल झूठी और निमूल है, उसका कोइ प्रमाण नहीं। कुछ भी हो इतना सच है कि अलाउद्दीन ने किले पर चढ़ाई की। राजपूत लडाई मे मारे गये और रानी अन्य वीर स्त्रियो के साथ आग में जलकर मर गई। चित्तौर मे अपने बेटे खिजरखाँ को सूबे-दार नियत कर अलाउद्दीन दिल्ली लौट आया।

अलाउद्दीन ने जैसलमेर पर चढाई की। राजपूत मुसलमानो के सामने न ठहर सके। स्त्रिया ने अपनी रक्षा का कोई उपाय न देख जौहर किया और राजपूता की कीर्ति को उज्ज्वल रक्खा। अब सारा उत्तरी भारत सिन्ध से लेकर बगाल तक और पंजाब से नर्मदा तक अलाउद्दीन के अधिकार मे आगया।

दक्षिण—इसके बाद सुलतान ने दक्षिण को जीतने का इरादा किया। देवगिरि के राजा ने पहले ही दिल्ली सुलतान की अधीनता

ज़रूरत पड़ी, परन्तु वह सेना पर बहुत-सा रुपया नहीं खर्च करना चाहता था। इसलिए उसने अनाज, कपड़ा और खान-पीने की चीज़ों का भाव नियत कर दिया*। किसी की मजाल न थी कि एक पाई ज्यादा ले सके। उसने बाज़ार में अपने हाकिम रख दिये जो कम भाव पर बेचनेवालों और कम तोलनेवालों को सज़ा देते थे। यदि कोई दूकानदार कम तोलता तो उसके बदन में से उतना ही गोश्त काट लिया जाता था। बादशाह ख़ुद अपने ग़ुलामों को बाज़ार में रेवड़ी, हलवा, ककड़ी आदि ख़रीदने के लिए भेजता था जिससे उसे मालूम हो जाय कि लोग उसके नियमों पर चलते हैं या नहीं। चीज़ों का भाव बहुत सस्ता हो गया और प्रजा के दिन आराम से कटने लगे।

---

*अलाउद्दीन के समय में चीज़ों के भाव इस प्रकार थे—

गेहूँ	१ मन—७½ जीतल
चना	" —५ "
जौ	" —४ "
चावल	" —५ "
उर्द	" —५ "
घी	२½ सेर—१ "
गुड़	१ मन—३ "

जीतल का मूल्य एक पैसे से कुछ अधिक था और १ मन लगभग १४ पक्के सेर के बराबर।

खिलजी-राज्य का पतन—अलाउद्दीन के बुढ़ापे में राज्य का प्रबन्ध बिगड़ गया। साम्राज्य के सूबो मे उपद्रव आरम्भ हो गया। सूबेदार स्वाधीन होने लगे। हिन्दू पहले ही से अप्रसन्न थे। जिन अमीरो और सर्दारो को अलाउद्दीन ने दबाया था वे उसके विरोधी हो गये। उसके लड़को मे कोई ऐसा न था जो इतने बड़े राज्य के काम को सँभालता। अलाउद्दीन ने जो नियम जारी किये थे, वे ढीले पडने लगे और राजपूत राजा स्वाधीन होने का उपाय करने लगे। बहुत परिश्रम करने के कारण अलाउद्दीन का स्वास्थ्य बिगड़ गया। वह बीमार पड़ गया और सन् १३१६ इसवी मे उसकी मृत्यु हो गई।

खिलजी-वंश का अन्त—अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद काफ़ूर ने उसके एक छोटे लडके को गद्दी पर बिठाया परन्तु वह बहुत दिन तक न जिया। काफ़ूर भी थोड़े दिन बाद मारा गया। तब अलाउद्दीन का दूसरा लड़का कुतुबुद्दीन मुबारकशाह बादशाह हुआ। कुतुबुद्दीन दुराचारी था और अपना सारा समय अय्याशी में बिताता था। कुछ समय के बाद वह अपने एक सर्दार ख़ुसरो के हाथ से मारा गया।

नासिरुद्दीन ख़ुसरो—मुबारकशाह के बाद खुसरो दिल्ली का बादशाह हुआ, वह नीच जाति का था। इसलिए मुसलमान उसे नहीं चाहते थे। सन् १३२० ई० मे दिपालपुर* के हाकिम ग़ाज़ी तुगलक ने, जो पीछे से गयासुद्दीन के नाम से दिल्ली का बादशाह हुआ, खुसरो पर चढ़ाई की और उसे मार डाला।

* दिपालपुर पजाब मे माण्टगोमरी जिले में एक गाँव है।

सुशिक्षित बादशाह था। दिल्ली की गद्दी पर जितने उ... बादशाह अब तक हुए थे उन सबमें वह चतुर और विद्वान था। उसके दर्बार मे बडे बडे विद्वान लोग रहते थे जिनके साथ वह वा... विवाद करता था। वह निहायत खुशखत लिखता था और वक्त... देने म प्रवीण था। फारसी काव्यो का उसे अच्छा ज्ञान था... बातचीत करने में वह बड़ी सुन्दर भाषा बोलता था। उसकी ... रता की इतिहासकारों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। जो ल... उसके दर्बार में आते थे उन्हें वह लाखो रुपये देता था और उनक... सत्कार करता था। वह अपने मजहब का पाबन्द था। वह लोगों ... नमाज की ताकीद करता था और जो उसकी आज्ञा नहीं मान... थे उन्हे सजा देता था। अन्धविश्वास को बहुत बुरा समझता था। दलील और बहस के बिना किसी बात को नहीं मानता था। परन्तु यह सब गुण होते हुए भी इस बादशाह मे एक बड़ा दोष था कि वह जिद्दी था। जिस बात की उसे धुन सवार हो जाती ... वह पूरी करके छोड़ता था चाहे प्रजा को कितना ही कष्ट क्यों न हो। दूसर वह अपराधियो को ऐसा कठिन दण्ड देता था कि ... कोई उसकी इच्छा के विरुद्ध काम करने की हिम्मत नहीं करता था। बहुत-से लोगो ने इस बादशाह को पागल बताया है परन्तु ऐ... कहने के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

राज्य-विस्तार—राजगद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद मुहम्मद ने सारे देश को अपने अधीन कर लिया। कनायूँ, मुलतान, लाहौर, दिल्ली से मदूरा तक और सिन्ध से बङ्गाल तक ... देश उसके रा-य मे शामिल थे।

राजा ने भी उसकी प्रधानता स्वीकार कर ली थी। सब मिला कर दिल्ली साम्राज्य में २३ सूबे थे और प्रत्येक सूबे का शासन-प्रबन्ध सूबेदारो की मदद से होता था।

दोआब का कर—दोआब के जमींदार हमेशा बगावत किया करते थे और सरकारी रुपया देने मे आनाकानी करते थे। मुहम्मद ने उनका कर बढा दिया। परन्तु अकाल पड़ने के कारण प्रजा को बडा कष्ट हुआ। किसान खेत छोड़कर भाग गये और राज्य के अफसरो ने उनके साथ बड़ी निर्दयता का बर्ताव किया।

राजधानी बदलना—(सन् १३२६-१३२७ ई०) तुम पढ़ चुके हो कि मुहम्मद तुगलक का राज्य दक्षिण मे दूर तक फैला हुआ था। इधर दिल्ली दक्षिण से बहुत दूर थी। मुहम्मद ने सोचा कि वहाँ से साम्राज्य के सारे सूबो का प्रबन्ध अच्छी तरह नहीं हो सकता, इसलिए उसने देवगिरि को अपनी राजधानी बनाया और दौलताबाद उसका नाम रक्खा। दिल्ली से दौलताबाद तक रास्ता साफ कराया गया। सड़क के दोनों तरफ़ हरे वृक्ष लगाये गये और सरायें बनाई गई। दिल्ली के लोगों को हुक्म हुआ कि अपना माल-असबाब लेकर दौलताबाद की तरफ़ चलें। जिनके पास खर्च के लिए रुपया नहीं था उन्हें सरकारी खजाने से रुपया दिया गया। बहुत-से तो बेचारे रास्ते ही मे मर गये और जो वहाँ पहुँचे वे घर की याद कर लौटने की इच्छा करने लगे। दौलताबाद मे बादशाह ने नये महल, हवेलियाँ और बाजार तैयार कराये परन्तु लोगों को कुछ भी पसन्द न आया। लाचार होकर बादशाह ने फिर लौटने का हुक्म दिया। बेचारे दिल्ली निवासी अनेक कष्ट सहते हुए अपने घरो को चल पड़े।

बादशाह ने दिल्ली को आबाद करने की बहुत कोशिशें
बेकार हुईं। दिल्ली की पुरानी रौनक जाती रही और प्र
हो गई।

देवगिरि को राजधानी बनाने में बादशाह ने
नहीं लिया। यह ठीक है कि देवगिरि उसके राज्य के
परन्तु वहाँ से उत्तर के देशों का प्रबन्ध होना कठिन था।
बादशाह देवगिरि में रहता तो मुग़ल बार-बार हमले करके
उत्तरी हिन्दुस्तान को बर्बाद कर देते। इसके अलावा हिन्दु
को भी स्वाधीन होने का मौका मिल जाता।

ताँबे का सिक्का—मुहम्मद को अपना ख़ज़ाना बढ़ाने की
इच्छा थी। एक तो वह उदार ऐसा था कि जो लोग उसके दरबार
आते थे उन्हें वह लाखों रुपया देता था। दूसरे, उसे देशों को
की भी इच्छा थी। उसने एक बड़ी फ़ौज जमा की जिसका
चलाने के लिए रुपये की ज़रूरत थी। रुपया बढ़ाने की उसने
नई तदबीर निकाली। उसने ताँबे का सिक्का चलाया और हु
दिया कि यह सिक्का चाँदी-सोने के सिक्कों के बदले में लि
जाय। अब क्या था, सबको नये सिक्के बनाने की सनक सवा
हुई। बादशाह का यह हुक्म तो था नहीं कि ताँबे के सिक्के केवल
सरकारी टकसाल में बनाये जायँ। लोग अपने बर्तनों को तोड़कर
ताँबे के सिक्के बनाने लगे। चाँदी-सोने का लोप हो गया और बाज़ार
में ताँबे के सिक्के ही सिक्के दिखाई देने लगे। व्यापार बन्द हो गया।
तब बादशाह ने खीझकर ताँबे के सिक्कों को बन्द कर दिया और
हुक्म दिया कि जो लोग चाहें उनके बदले में चाँदी-सोने के सिक्के

मुहम्मद तुगलक़ के ताँबे के सिक्के

सोने के सिक्के

बादशाह ने दिल्ली को आबाद करने की बहुत कोशिश की परन्तु बेकार हुई। दिल्ली की पुरानी रौनक जाती रही और प्रजा अप्रसन्न हो गई।

देवगिरि को राजधानी बनाने में बादशाह ने समझ से काम नहीं लिया। यह ठीक है कि देवगिरि उसके राज्य के बीच में था परन्तु वहाँ से उत्तर के देशों का प्रबन्ध होना कठिन था। यदि बादशाह देवगिरि में रहता तो मुग़ल बार-बार हमले करते और उत्तरी हिन्दुस्तान को बर्बाद कर देते। इसके अलावा हिन्दू राजाओं को भी स्वाधीन होने का मौका मिल जाता।

ताँबे का सिक्का—मुहम्मद को अपना खज़ाना बढ़ाने की बड़ी इच्छा थी। एक तो वह उदार ऐसा था कि जो लोग उसके दरबार में आते थे उन्हें वह लाखों रुपया देता था। दूसरे, उसे देशों को जीतने की भी इच्छा थी। उसने एक बड़ी फौज जमा की जिसका खर्च चलाने के लिए रुपये की ज़रूरत थी। रुपया बढ़ाने की उसने एक नई तदबीर निकाली। उसने ताँबे का सिक्का चलाया और हुक्म दिया कि यह सिक्का चाँदी-सोने के सिक्कों के बदले में लिया जाय। अब क्या था, सबको नये सिक्के बनाने की सनक सवार हुई। बादशाह का यह हुक्म तो था नहीं कि ताँबे के सिक्के केवल सरकारी टकसाल में बनाये जायँ। लोग अपने बर्तनों को तोड़कर ताँबे के सिक्के बनाने लगे। चाँदी-सोने का लोप हो गया और बाज़ार में ताँबे के सिक्के ही सिक्के दिखाई देने लगे। व्यापार बन्द हो गया। तब बादशाह ने खीझकर ताँबे के सिक्कों को बन्द कर दिया और हुक्म दिया कि जो लोग चाहें उनके बदले में चाँदी-सोने के सिक्के
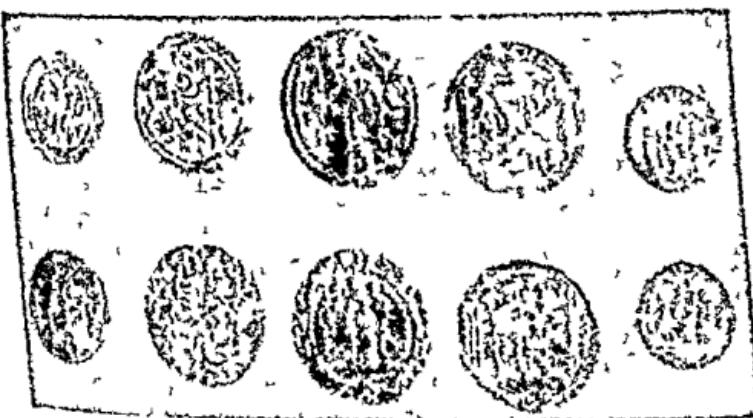
मुहम्मद तुगलक़ के ताँबे के सिक्के
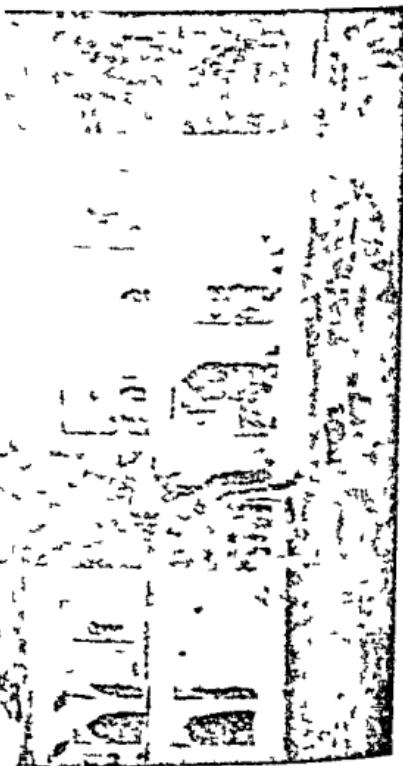
सोने के सिक्के

ले जायँ। शाही महल के सामने ताँबे के सिक्कों के ढेर लग गये और कहते हैं कि वे बहुत दिन तक वहीं पडे रहे। राज्य को बड़ी हानि पहुँची। ख़ज़ाने का बहुत-सा रुपया बिना ज़रूरत बाहर निकल गया।

ख़ुरासान और चीन की चढ़ाई—बादशाह विदेशियों का बडा आदर करता था। उसके दर्बार में तुर्किस्तान, फ़ारस, चीन, ख़ुरासान आदि देशों के लोग रहते थे और इनाम पाते थे। ख़ुरासान के सर्दारों ने बादशाह को अपने देश पर चढ़ाई करने के लिए उत्तेजित किया परन्तु कई कारणों से वह ऐसा करने से रुक गया। कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि उसने चीन पर भी चढ़ाई करने का प्रयत्न किया था। यह बात गलत है। उसने चीन को जीतने की कभी इच्छा नहीं की। हिमालय में कमायूँ, गढ़वाल प्रदेश के आस-पास एक शक्तिशाली राज्य था जिस पर चढ़ाई की गई थी। राजा लडाई में हार गया और उसने कर देना स्वीकार किया। यह सच है कि पहाड़ी देश में सेना को बड़ा कष्ट हुआ और पहाड़ियों ने बहुत से लोगों को मार डाला।

देश में अशान्ति का फैलना—जैसा पहले कह चुके हैं कि बादशाह बड़ा ज़िद्दी था और छोटे-छोटे अपराधों के लिए भी कठोर दंड देता था। इसलिए लोग उससे अप्रसन्न हो गये। वर्षा न होने के कारण देश में अनाज महँगा हो गया और प्रजा दुख से बिलबिलाने लगी। बादशाह ने अनाज बँटवाया, तक़ावी बाँटी, कुएँ खुदवाये परन्तु प्रजा को चैन न मिला। राज्य इतना बढ़ गया था कि उसका यथोचित प्रबन्ध न हो सका। सूबों में विद्रोह होने लगा।

जब तक सुलतान एक विद्रोह को दबाता था तब तक दूसरा खड़ा हो जाता था। बंगाल पहले ही स्वाधीन हो गया था। मालवा, गुजरात, सिन्ध में भी बलवा होने लगा। जब दक्षिण में उपद्रव आरम्भ हुआ तब बादशाह को दम लेने की भी फुर्सत न मिली। सन् १३३६ ई० मे विजयनगर के हिन्दूराज्य की नींव पड़ी और उसमे दक्षिण का बहुत-सा भाग शामिल हो गया। सन् १३४७ ई० में देवगिरि मुहम्मद तुग़लक़ के हाथ से निकल गया। वहाँ अफ़ग़ानों ने विद्रोह किया और हसनकाँगू ने बहमनी-राज्य की नींव डाली। गुजरात के उपद्रव को दबाने का बादशाह ने बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता न हुई। वह जगह-जगह मारा-मारा फिरा परन्तु विद्रोहियों का जोर बढ़ता ही गया। अन्त में एक विद्रोही का पीछा करते-करते वह सिन्ध मे पहुँचा और वहाँ ठट्टा के पास सन् १३५१ ई० में बीमार होकर मर गया।

मुहम्मद की विफलता—मुहम्मद कट्टर मुसलमान नहीं था। वह मुल्ला-मौलवियों की कुछ भी पर्वाह नहीं करता था इसलिए वे उससे अप्रसन्न रहते थे। उसने विदेशियों को बड़े बड़े ओहदों पर रक्खा था और ये लोग हमेशा विद्रोह किया करते थे। बादशाह क्रोधी और उतावला था। वह चाहता था कि मेरी आज्ञा का शीघ्र पालन हो। ये आज्ञायें बड़ी कठिन होती थीं। यही कारण है कि उसे अपनी आशाओं के विरुद्ध सुख के बदले दु:ख उठाना पड़ा। साम्राज्य का विस्तार इतना बढ़ गया था कि दिल्ली से उसका प्रबन्ध नहीं हो सकता था। वीर होकर मुग़लों को घूस देना, योग्य और बुद्धिमान् होकर बिना सोचे-समझे राजधानी बदल देना और तां

का सिक्का चलाना इत्यादि कामों से प्रकट होता है कि मुहम्मद तुग़लक़ में भिन्न भिन्न प्रकार के गुण मौजूद थे और वह अस्थायी प्रकृति का मनुष्य था।

इब्नबतूता—मुहम्मद के समय में अफ्रीका-निवासी इब्नबतूता नामक यात्री हिन्दुस्तान में आया था। वह ८ वर्ष तक हिन्दुस्तान में रहा। उसने बादशाह के राज्य-प्रबन्ध और दर्बार का पूरा हाल लिखा है। बादशाह ने उसे दिल्ली का क़ाज़ी नियुक्त किया था और अपना दूत बनाकर चीन को भेजा था।

फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ (सन् १३५१-८८ ई०)—मुहम्मद के कोई लड़का नहीं था इसलिए उसने अपने चचेरे भाई फीरोज़ को अपना वारिस नियत किया था। फीरोज़ अमीरों की सलाह से ४२ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा और उसने सन् १३८८ ई० तक राज्य किया।

फीरोज़ का स्वभाव अच्छा था। वह दीन-दुखियों की सदैव सहायता करता था। परन्तु वह मुहम्मद की तरह न वीर था न विद्वान्। वह अपने मज़हब का पाबन्द था और कुरान के नियमों पर चलता था। मुल्ला-मौलवियों की सलाह के बिना वह कोई काम नहीं करता था। वह सादगी से जीवन व्यतीत करता था और कम खर्च करता था। उसने एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम "फतूहाते फ़ीरोज़शाही" है। इसमें उसके जीवन-चरित्र का वर्णन है।

फ़ीरोज़ की लड़ाइयाँ—फीरोज़ अलाउद्दीन और मुहम्मद की तरह न योग्य था, न वीर। वह शान्ति चाहता था और लड़ने से डरता था। दक्षिण से तो वह बिलकुल हाथ ही धो बैठा; उत्तरी

हिन्दुस्तान में भी उसने कई सूबे खो दिये। उसने दो बार बङ्गाल पर चढ़ाई की परन्तु लाचार होकर सन्धि कर ली। बङ्गाल स्वाधीन हो गया। इसके बाद उसने नगरकोट पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। लूट का बहुत-सा माल मुसलमान-सेना के हाथ लगा। फीरोज की अन्तिम चढ़ाई सिन्ध में ठट्टा पर हुई। वह एक बड़ी सेना लेकर वहाँ गया। ठट्टा का राजा हार गया और उसने दिल्ली की अधीनता स्वीकार कर ली।

शासन-प्रवन्ध—फीरोज शान्ति चाहता था। इसलिए उसने शासन-सुधार की ओर अधिक ध्यान दिया। उसने जागीर की प्रथा को फिर से चलाया, बहुत-से अनुचित कर बन्द कर दिये, खेती की सुविधा के लिए नहरें खुदवाईं और कानून को नरम बनाया। इनके अलावा उसने प्रजा की भलाई के बहुत-से काम किये। उसने मदर्से और अस्पताल खोले, सड़कें बनवाईं और दीन मनुष्यों के लिए भोजनालय स्थापित किये। उसने ग़रीब मुसलमानों की बेटियों के विवाह कराये, दीनों की शिक्षा और बे-रोजगार लोगों की जीविका का प्रबन्ध किया। ग़ुलामों की देखभाल के लिए एक नवीन महकमा खोला गया। उनको राज्य से वज़ीफे दिये गये और उन्हें हर तरह की शिक्षा दी गई। जिन लोगों ने मुहम्मद तुगलक के समय में कष्ट सहे थे उनके साथ दया का बर्त्ताव किया गया और जिनका धन छीन लिया गया था उन्हें धन देकर सन्तुष्ट किया गया। कड़ी सजा देना, लोगों के हाथ-पैर आदि काटना उसने बिलकुल बन्द कर दिया। फीरोज ने बहुत-सी नई इमारतें बनवाईं और पुरानी इमारतों की मरम्मत कराई। उसने बहुत-से हौज़ और कुएं खुदवाये जिनसे

पानी की सुविधा हुई। बाग लगाने का भी उसे बड़ा शौक था। कहते हैं कि दिल्ली के आस-पास उसने १,२०० बग़ीचे लगवाये थे, जिनसे राज्य को अच्छी आमदनी होती थी।

दिल्ली-राज्य की अवनति—फ़ीरोज़ ने ३८ वर्ष तक राज्य किया परन्तु वह दिल्ली सल्तनत को मज़बूत न बना सका। जागीर की प्रथा से राज्य को बड़ी हानि पहुँची। गुलामों की संख्या बढ़ गई और वे बगावत का इरादा करने लगे। मुसलमान भी वैसे उत्साही नहीं रहे, जैसे वे अलाउद्दीन के समय में थे। फ़ीरोज़ स्वयं वीर नहीं था और लड़ाई से उसे अरुचि थी। इसका नतीजा यह हुआ कि मुसलमानी राज्य का भय लोगों के दिल से जाता रहा और साम्राज्य दिन पर दिन दुर्बल होने लगा।

फ़ीरोज़ के मरते ही (सन १३८८ ई०) दिल्ली-राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। सूबेदार स्वाधीन होने लगे और अपने अपने राज्य बनाने लगे। उधर दिल्ली की गद्दी के लिए राजवंश के लोग आपस में ख़ूब लड़ रहे थे। कभी कभी तो ऐसा हुआ कि एक ही समय दिल्ली में दो बादशाह राज्य करने लगे। सल्तनत की शान-शौकत जाती रही। दोआब के हिन्दुओं ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया और कर देना बन्द कर दिया। जिस समय दिल्ली-राज्य की यह दशा थी तैमूर ने हमला किया और उसकी बची-खुची शान को मिट्टी में मिला दिया।

तैमूरलंग का हमला—(सन् १३९८-९९ ई०) तैमूर तुर्किस्तान का बादशाह था। उसने पहले मध्य-एशिया में अपनी धाक जमाई और फिर एक बड़ी सेना लेकर फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान को फ़तह

करता हुआ वह हिन्दुस्तान आ पहुँचा। इस समय फ़ीरोज़ का पोता महमूद तुगलक दिल्ली का बादशाह था।

तैमूर का उद्देश्य हिन्दुस्तान को लूटना और अपने दीन का प्रचार करना था। इसकी पूर्ति के लिए उसने लाखों आदमियों का ख़ून बहाया और शहरों और गाँवों को उजाड़ दिया। दिल्ली के पास पहुँचकर उसने एक लाख क़ैदियों को जिनकी उम्र १५ वर्ष से अधिक थी कत्ल करवा डाला। उसे डर था कि कहीं क़ैदी शत्रु से न मिल जायँ। महमूद ने एक टूटी-फूटी सेना लेकर तैमूर का सामना किया। परन्तु हार गया और उसकी सेना भाग गई।

तैमूर ने दिल्ली नगर मे प्रवेश कर तीन दिन तक लूट मार की और लोगों को क़त्ल किया। दिल्ली से वह मेरठ और हरिद्वार की तरफ़ बढ़ा और फिर काँगड़ा और जम्मू के रास्ते से अपने देश को लौट गया।

तैमूर के हमले ने दिल्ली-राज्य को नष्ट कर दिया। देश का केवल धन ही बाहर नहीं चला गया, वरन् चारों तरफ़ अराजकता फैल गई जिससे प्रजा को बड़ा कष्ट हुआ। अकाल और प्लेग ने पंजाब और दिल्ली के लोगों को बर्बाद कर दिया। तातारी सिपाही बहुत दिनों तक हिन्दुस्तान मे नहीं ठहरे परन्तु उनके कारण लोगों को बड़े दु:ख उठाने पड़े। सारे देश में उपद्रव होने लगे। दिल्ली सुलतान की शक्ति का नाश हो गया और ऐसी दशा में सूबा के हाकिम स्वाधीन हो गये और मनमानी करने लगे।

तैमूर के आक्रमण के समय का भारत
काबुल
पेशावर
जम्मू
लाहौर
मुलतान
दिपालपुर
समाना
दिल्ली
हरद्वार
बदायूँ
आगरा
कन्नौज
अयोध्या
जौनपुर
कालपी
प्रयाग
गौड़
बंगाल
गिरनार
गोंडवाना
दौलताबाद
वारंगल
गोलकुंडा
गुलबर्गा
रायचूर
विजयनगर
विजयनगर राज्य
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
तैमूर के आक्रमण का मार्ग

अभ्यास

१—गयासुद्दीन तुगलक को दिल्ली का राज्य किस प्रकार मिला। उसके बारे में आप क्या जानते हैं ?

२—मुहम्मद तुगलक के चरित्र का वर्णन करो।

३—मुहम्मद के राज्य का विस्तार कहां तक था ? नकशा खींच कर दिखाओ।

४—मुहम्मद ने देवगिरि को राजधानी क्यो बनाया ? क्या ऐसा करने में उसने बुद्धिमानी की ?

५—खजाने को बढाने के लिए मुहम्मद ने क्या तदवीर की ? तांबे का सिक्का चलाने का क्या फल हुआ ?

६—मुहम्मद के समय में देश मे अशान्ति क्यो फैली ? कारण बताओ।

७—फीरोज़ तुगलक़ का चरित्र वर्णन करो।

८—फीरोज़ के समय में दिल्ली सल्तनत क्यो घट गई ?

९—फीरोज़ के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो। प्रजा की भलाई के लिए उसने क्या काम किये ?

१०—फीरोज़ की मृत्यु के बाद दिल्ली-राज्य की क्यो अवनति हो गई ?

११—तैमूर कौन था ? उसने हिन्दुस्तान पर क्यो हमला किया ?

१२—तैमूर के हमले का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

अध्याय १६

भारत के नये स्वाधीन राज्य

(१) उत्तरी भारत

बंगाल—फीरोज़ तुगलक के समय मे बगाल स्वाधीन हो गया था। बगाल में कइ प्रतापी बादशाह हुए। इनमे हुसैनशाह (सन् १४९३-१५१३ ई०) और नुसरतशाह (सन् १५१९-३२ ई०) अधिक प्रसिद्ध हैं। हुसैनशाह ने दिल्ली के बादशाहों से ख़ूब लड़ाई की परन्तु अन्त मे सन्धि कर ली। नुसरतशाह वीर योद्धा था और विद्वानों का आदर करता था। उसके समय मे हिन्दू-धर्म और साहित्य की अच्छी उन्नति हुई।

जौनपुर—जौनपुर शहर फीरोज़ तुगलक ने अपने भाई मुहम्मद तुगलक की यादगार में बसाया था। फीरोज़ की मृत्यु के बाद यहाँ भी उसके एक ग़ुलाम ने स्वाधीन राज्य स्थापित कर लिया था। जौनपुर के बादशाहो में इब्राहीमशाह और हुसैनशाह अधिक प्रसिद्ध हैं। इब्राहीम विद्या प्रेमी था। उसके समय मे जौनपुर मुसलमानी विद्या का केन्द्र हो गया और कइ सुन्दर इमारतें बनी। हुसैनशाह ने दिल्ली में लोदी सुलतानों से ख़ूब लोहा लिया परन्तु अन्त मे उसकी हार हुई और जौनपुर दिल्ली-राज्य मे मिला लिया गया।

मालवा—मालवा मे सन् १४०१ ई० दिलावरख़ाँ गोरी ने अपना स्वाधीन राज्य स्थापित किया था। मालवा के बादशाहो में महमूद खिलजी (सन् १४३६-६९ ई०) का नाम अधिक प्रसिद्ध है। वह

बड़ा वीर था। उसने चित्तौर के रानाओं के साथ खूब युद्ध किय और दिल्ली, जौनपुर, गुजरात और दक्खिन के मुसलमान बादशाहों से भी टक्कर ली।

गुजरात—गुजरात में सन् १४०१ ई० में जफरखाँ नामक सूबेदार ने स्वाधीन राज्य स्थापित किया था। अहमदशाह (सन् १४११-४३ ई०) और महमूद बीगड़ (सन् १४५८-१५११ ई०) के समय में गुजरात-राज्य ने बड़ी उन्नति की। महमूद बीगड़ ने मेवाड़ के राना के साथ युद्ध किया और पुर्तगालियों को देश से बाहर निकालने की कोशिश की। गुजरात के सुलतानों से राजपूत राजाओं की बराबर लड़ाई होती रहती थी। बहादुरशाह के समय में गुजरात-राज्य का यहाँ तक प्रसार बढ़ा कि मालवा और चित्तौर भी उसमें शामिल हो गये। सन् १५७२ ई० में गुजरात को मुगल-सम्राट् अकबर ने जीत कर अपने राज्य में मिला लिया।

खानदेश—खानदेश में फरूकीवंश के मुसलमानों का एक छोटा-सा राज्य था। असीरगढ़ का प्रसिद्ध किला इसी राज्य में था। खानदेश की स्वाधीनता बहुत दिन तक कायम रही। सन् १६०१ ई० में अकबर ने इस राज्य को जीत लिया।

राजपूताना—राजपूत-राज्यों में चित्तौर इस समय सबसे बलवान् राज्य था। तुम पहले पढ़ चुके हो कि चित्तौर को अलाउद्दीन खिलजी ने जीत लिया था। अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद दिल्ली-राज्य के कमजोर होने पर राना हम्मीर ने फिर अपनी शक्ति बढ़ा ली और चित्तौर पर अधिकार स्थापित कर लिया। हम्मीर सीसोदिया-वंश में से था। इस वंश में अनेक प्रतापी राजा हुए। इनमें

राना कुम्भा और राना साँगा अधिक प्रसिद्ध हैं। राना कुम्भा वीर योद्धा था और विद्वान् भी था। उसने चित्तौर की प्रतिभा को खूब बढ़ाया। उसके बाद राना साँगा के समय में चित्तौर हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध राज्यों में गिना जाने लगा। राना साँगा का हाल तुम आगे चलकर पढ़ोगे।

(२) दक्षिण के स्वाधीन राज्य

बहमनी राज्य—पहले कह चुके हैं कि सन् १३४७ ई० में दक्षिण में हसनकाँगू नामक अफ़ग़ान ने अपना स्वाधीन राज्य स्थापित कर लिया था। गुलबर्गा को उसने अपनी राजधानी बनाया। हसन-काँगू फ़ारस के बादशाह बहमनशाह के वंश से था। इसी लिए उसके वंशज बहमनी कहलाने लगे।

फ़िरिश्ता नामक मुसलमान इतिहासकार ने लिखा है कि हसन दिल्ली में गंगू नामक ब्राह्मण ज्योतिषी के यहाँ नौकर था। एक दिन उसे हल जोतते समय खेत में गड़ा हुआ धन मिला। उसने जाकर सब अपने स्वामी को दे दिया। ज्योतिषी मुहम्मद तुगलक़ के दर्बार में आया जाया करता था। उसने बादशाह से हसन की ईमानदारी की प्रशंसा की और उसे सवारों में भर्ती करा दिया। यह सब कथा कपोल-कल्पित है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं। हसन किसी ब्राह्मण के यहाँ नौकर नहीं था और बहमनी शब्द का ब्राह्मण शब्द से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। असल में हसन अफ़ग़ान था और मुहम्मद तुग़लक़ की सेना में नौकर था। धीरे-धीरे वह सवारों का सर्दार हो गया और उच्च पद पर पहुँच गया।

बहमनी-वंश का राज्य करीब १८० वर्ष तक रहा। इस वंश में कई प्रतापी राजा हुए। उन्होंने विजयनगर के राजाओं के साथ बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ीं। बहमनी राज्य में दक्षिणी और विदेशी अमीरों के दो दल थे। इनमें आपस में सदैव लड़ाई रहती थी। इन्हीं के षड्यन्त्रों के कारण राज्य दुर्बल हो गया। हुमायूँ बादशाह के मंत्री ख्वाजा महमूद गावान ने राज्य की दशा को संभालने की कोशिश की। महमूद की बुद्धिमत्ता, दानशीलता, और उदारता की सब इतिहासकार प्रशंसा करते हैं। वह सादगी से जीवन व्यतीत करता था और अपना सारा धन परोपकार में खर्च करता था। उसने प्रजा के हित के लिए मदर्से और अस्पताल खुलवाये। शासनसुधार के लिए उसने राज्य के भिन्न-भिन्न महकमा का फिर से संगठन किया। उसने बीदर में एक बड़ा मदर्सा बनवाया और वहाँ उत्तम पुस्तकों का संग्रह किया परन्तु ऐसा स्वार्थरहित राजभक्त और प्रजा का हितैषी होते हुए भी उसके शत्रुओं ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। उनके कहने से मुहम्मदशाह तृतीय ने सन् १४८१ में उसे एक झूठा दोष लगाकर मरवा डाला। मन्त्री के मरते ही अमीरों ने विद्रोह करना आरम्भ किया। थोड़े ही दिनों बाद बहमनी राज्य पाँच छोटी-छोटी रियासतों में विभाजित हो गया। इनके नाम हैं—

अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, बरार* ।

* (१) अहमदनगर—निजामशाह
(२) बीजापुर—आदिलशाह
(३) गोलकुंडा—कुतुबशाह
(४) बीदर—बरीदशाह
(५) बरार—इमादशाह

विजयनगर राज्य—दक्षिण का शक्तिशाली हिन्दू राज्य, जो हमेशा बहमनी सुलतानो का मुकाबिला करता था, विजयनगर था। इस राज्य की नींव सन् १३३६ ई० मे हरिहर और बुक्क नामक दो भाइयों ने डाली थी। धीरे-धीरे यह राज्य कृष्णा नदी से कुमारी अन्तरीप तक फैल गया और हौयसल, चोल; पाँड्य वंशो के राज्यों का बहुत-सा भाग उसमे मिल गया। आज-कल का मद्रास सूबा और मैसूर-राज्य विजयनगर-राज्य ही मे शामिल थे।

पन्द्रहवीं शताब्दी में विजयनगर दक्षिण के सब राज्यों मे बलवान् था। इस राज्य मे हिन्दुओ की विद्या और कला की बड़ी उन्नति हुई। वैष्णव-धर्म का भी ख़ूब प्रचार हुआ। शासन-प्रबन्ध अच्छा था। प्रजा सुख से रहती थी। कर अधिक नहीं लिया जाता था। सन् १४४२ ई० में फारस का राजदूत अब्दुलरज्जाक विजय-नगर आया। वह लिखता है कि विजयनगर मे बडे सुन्दर और विशाल भवन थे। नगर कइ मील के बीच मे फैला हुआ था। चारों तरफ पक्की दीवारें बनी हुइ थीं। बाज़ारों मे बडी चहल पहल रहती थी। व्यापार ख़ूब होता था। प्रजा को अपना धर्म पालने की पूरी स्वतंत्रता थी।

विजयनगर का सबसे प्रतापी राजा कृष्णदेव राय (सन् १५०९-२९) हुआ। उसने राज्य का विस्तार बढ़ाया और मुसलमानो को युद्ध में हराया। कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद विजयनगर का पतन आरम्भ हो गया। सदाशिव राय के समय मे राज्य का सारा काम उसका मन्त्री रामराजा करने लगा। रामराजा बडा घमंडी था। उसके अनुचित

१५ वीं शताब्दी
में
भारतवर्ष
काबुल
ग़ज़नी
काश्मीर
पंजाब
मुलतान
राजपूताना
दिल्ली
सिन्ध
अजमेर
आगरा
हिमालय पर्वत
अवध
बिहार
रणथम्भौर
ग्वालियर
चित्तौड़
चन्देरी
मालवा
मेवाड़
गुजरात
खानदेश
बरार
गोंडवाना
बंगाल
अहमदनगर
गोलकुण्डा
बीदर
बहमनीराज्य
तैलंगाना
बीजापुर
अरब-सागर
बंगाल की खाड़ी
विजयनगर
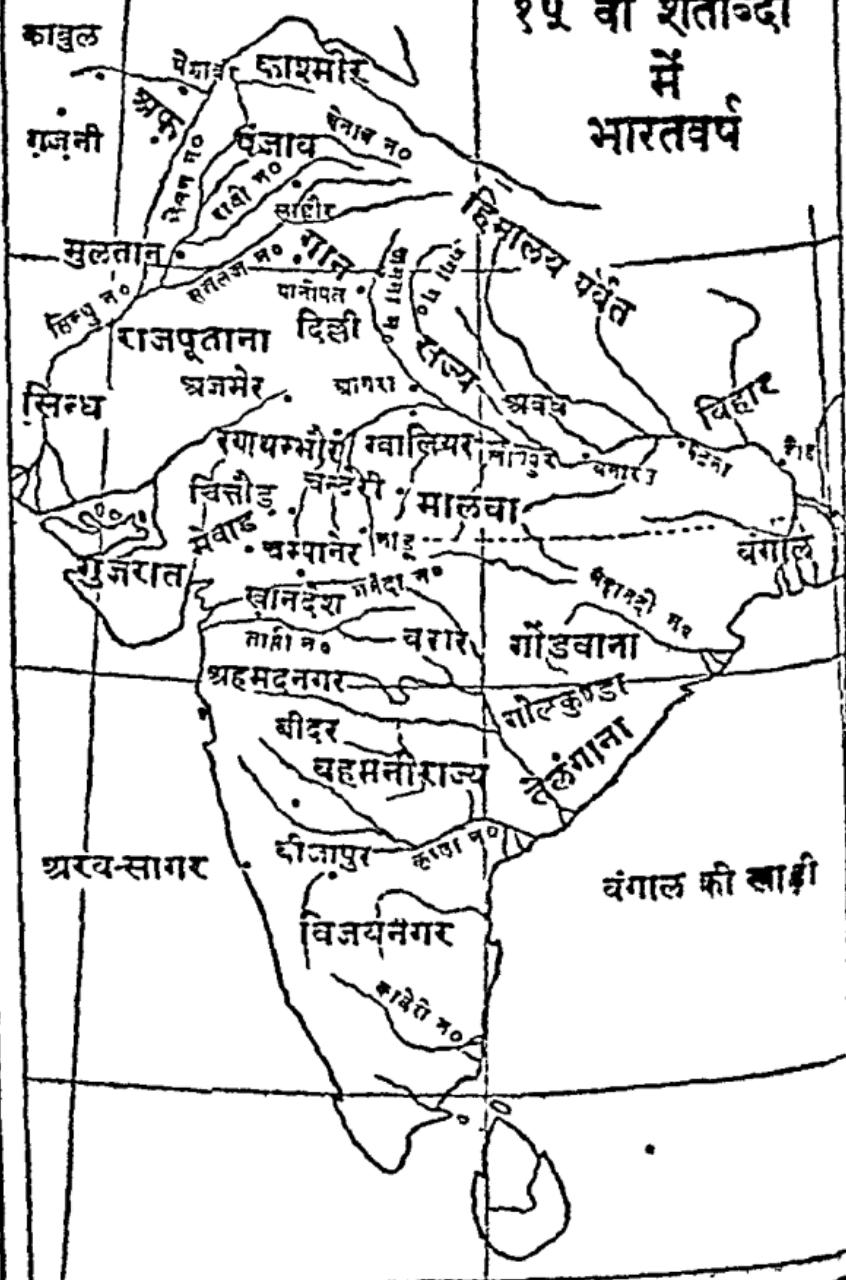
[illegible] मुसलमान अस्तब्ध हो गये। अहमदनगर, बीजापुर, [illegible] के सुलतानों ने मिलकर विजयनगर पर चढ़ाई की। [illegible] ई० में तालीकोट नामक स्थान पर घोर लड़ाई हुई। [illegible] गया और उसका सिर काट डाला गया। कहते है [illegible] एक लाख हिन्दू मारे गये। मुसलमानों ने विजय- [illegible] लूटा, मन्दिर और महल तोड़ डाले और प्रजा को [illegible] दिया।

[illegible] की लड़ाई ने हिन्दुओं की शक्ति का नाश कर डाला। [illegible] के अधीन राज्य स्वाधीन हो गये। परन्तु इस जीत से [illegible] को अधिक लाभ न हुआ। जब तक विजयनगर राज्य [illegible] मुसलमान बादशाह सदैव युद्ध के लिए तैयार रहे। परन्तु [illegible] होने पर वे आलसी हो गये और उनकी फौजी ताक़त [illegible]। आपस में ईर्ष्या, द्वेष पैदा होने के कारण वे एक [illegible] लड़ने लगे। अन्त में इसका परिणाम यह हुआ कि दिल्ली [illegible] ने इन दक्षिणी राज्यों को जीतकर अपने राज्य में [illegible] लिया।

अभ्यास

१—तैमूर के हमले के बाद उत्तरी भारत में कौन कौन-से स्वाधीन राज्य बने?

२—बंगाल दिल्ली-राज्य से कब अलग हो गया?

३—बहमनी राज्य कब और किस तरह स्थापित हुआ?

४—हसनगंगू कौन था? उसकी बाबत तुम क्या जानते हो?

५—महमूद गावान ने बहमनी राज्य के लिए क्या किया?

६—विजयनगर राज्य की कब और किसने नींव डाली?

७—पन्द्रहवीं शताब्दी में विजयनगर की क्या हालत थी?

८—अब्दुलरज्जाक कौन था? विजयनगर के बारे में उसने क्या लिखा है?

९—विजयनगर के पतन का वर्णन करो।

१०—तालीकोट की लड़ाई कब हुई? उसका दक्षिण के राज्यों पर क्या प्रभाव पड़ा?

अध्याय २०

सैयद और लोदी-वंश

(सन् १४१४-१५२६)

सैयद-वंश—(सन् १४१४-५१) तैमूर हिन्दुस्तान से जाते समय मुलतान क सूबेदार खिज्रखाँ को अपना नायब बना गया था खिज्रखाँ सैयद था। उसने दिल्ली मे सैयद-वंश की स्थापना की। तुग़लक़-वंश के अन्तिम राजा महमूद के मरते ही खिज्रखाँ ने दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया। उसके वंशजों ने ३७ वर्ष तक राज्य किया। परन्तु उनमे ऐसा कोई न था जिसकी गिनती बड़े बादशाहो में की जाय। सैयदों के समय मे दोआब मे बड़ा उपद्रव हुआ। राजपूतों ने कर देना बन्द कर दिया और बगावत की। इस वंश का अन्तिम बादशाह आलमशाह ऐसा निकम्मा निकला कि वह दिल्ली को छोड़कर बदायूँ मे रहने लगा। ऐसी दशा मे उसक एक सर्दार बहलोल लोदी ने सन् १४५१ ई० मे राज्य पर अधिकार कर लिया। यही बहलोल लोदी-वंश का पहला बादशाह है।

लोदी-वंश—बहलोल लोदी—(सन् १४५१-८९) बहलोल लोदी अफ़गान था। दिल्ली की गद्दी पर बैठते ही उसने अफ़ग़ानो को बुलाया और उन्हे बडे-बड़े ओहदे दिये। बहलोल सीधा आदमी था। बादशाह होने पर भी वह कभी राजसिंहासन पर नहीं बैठा और न उसने बादशाहों की-सी कभी शान शौकत दिखाइ। जौनपुर के सुलतान हुसैनशाह शर्की पर बहलोल ने कइ बार चढ़ाई की। अन्त में उसकी हार हुई और जौनपुर-राज्य दिल्ली-राज्य में मिला लिया गया।

सिकन्दर लोदी—(सन् १४८९-१५१७) बहलोल की मृत्यु के बाद उसका छोटा लड़का सिकन्दर गद्दी पर बैठा। वह बड़ा रोबदार बादशाह था। उसने अफ़ग़ान सर्दारों को दबाकर रक्खा और बग़ावत करने से रोका। हुसैनशाह शर्की पर भी उसने चढ़ाई की और उसे हराकर बिहार और तिरहुत को अपने राज्य में मिलाया। राजपूत राजाओं पर निगरानी रखने के लिए उसने राजधानी दिल्ली से हटाकर आगरे कर ली। आगरा शहर की उसी के समय मे नीव पड़ी। सिकन्दर कट्टर मुसलमान था। उसने धार्मिक जोश में आकर कभी कभी हिन्दुओं के साथ अनुचित बर्ताव भी किया। परन्तु वह शासन करने मे कुशल था। सूबेदारों के हिसाब-किताब को वह स्वयं देखता था। उसके समय में अनाज सस्ता था और दीन मनुष्यों को भोजन आसानी से मिल जाता था। राज्य की ओर से खेती की उन्नति का प्रयत्न किया जाता था। बादशाह हर साल दीन, असहाय लोगों की एक फ़िहरिस्त बनवाता था और उन्हें छः महीने के लिए खाने का सामान देता था। देश में अमन-चैन था। चोर डाकुओं का भय बहुत कम था। सन् १५१७ ई० में सिकन्दर की मृत्यु हो गई।

इब्राहीम लोदी (सन् १५१७-२६)—सिकन्दर के बाद उसका बड़ा लड़का इब्राहीम गद्दी पर बैठा। इब्राहीम एक बहादुर नौजवान था परन्तु बादशाहत पाकर उसका दिमाग़ ऐसा फिर गया कि वह अफ़ग़ानों का निरादर करने लगा। जब वे उसके दर्बार में आते थे तब वह उन्हें हाथ जोड़े खड़ा रखता था और बोलने नहीं देता था। अफ़ग़ान स्वाभिमानी होते हैं। वे इस बर्ताव को न सह सके। असन्तुष्ट

होकर उन्होंने सुलतान के चंगुल से निकलने का इरादा किया। पंजाब के सूबेदार दौलतख़ाँ लोदी ने काबुल के बादशाह बाबर के पास खबर भेजी कि आप हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कीजिए और दिल्ली की गद्दी पर बैठिए। बाबर भला कब ऐसा अवसर पाकर चूकनेवाला था। उसने दौलतख़ाँ का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की तैयारी कर दी। इसका हाल तुम आगे चल कर पढ़ोगे।

अभ्यास

१—बहलोल लोदी को दिल्ली-राज्य किस तरह मिला?

२—सिकन्दर लोदी कैसा बादशाह था? उसके शासन-प्रबन्ध के विषय में क्या जानते हो?

३—लोदी-वंश के पतन का कारण बताओ।

४—आगरा शहर को किसने बसाया?

अध्याय २१

भारतीय समाज, साहित्य और कला

सामाजिक दशा—मुसलमान अन्य विदेशियो की तरह भारतवर्ष के निवासियों में खप नही गये परन्तु उनकी सभ्यता का हिन्दूसमाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दुओ की रहन-सहन वेश-भूषा मे फ़र्क़ आ गया। पास पास रहने से मुसलमानों ने भी हिन्दुओ की बहुत-सी बातें ग्रहण कर ली। हिन्दुओ की जाति-व्यवस्था की तरह ये भी शेख़, सैयद, मुग़ल, पठान का भेद मानने लगे।

यो तो हिन्दू प्राचीन काल से मानते आये है कि ईश्वर एक है और मनुष्य को उसी की पूजा करनी चाहिए। परन्तु अब हिन्दू महात्माओ ने भक्ति पर अधिक ज़ोर दिया और जाति पाँत के भेद को व्यर्थ बतलाया। इन महात्माओ मे रामानुज, रामानन्द, कबीर, नानक, वल्लभाचार्य और चैतन्य अधिक प्रसिद्ध हैं। रामानुज स्वामी का जन्म दक्षिण मे हुआ। उन्होने विष्णु की पूजा का प्रचार किया। रामानन्द स्वामी ने राम-सीता की भक्ति का उपदेश किया और कहा कि जाति मोक्षप्राप्ति में बाधा नहीं डाल सकती। स्वामी जी के शिष्या मे छोटी जातियो के भी लोग थे। वे उनके साथ वैसा ही बर्ताव करते थे जैसा बड़ी जाति के शिष्यो के साथ। रामानन्दी मत के माननेवालों का मुख्य ग्रन्थ नाभा जी का भक्तमाल है। इसमें वैष्णव महात्माओं के जीवनचरित्रों का वर्णन है।

सिकन्दर लोदी

तैमूर

श्री शङ्कराचार्य

नानक

कबीर

चैतन्य
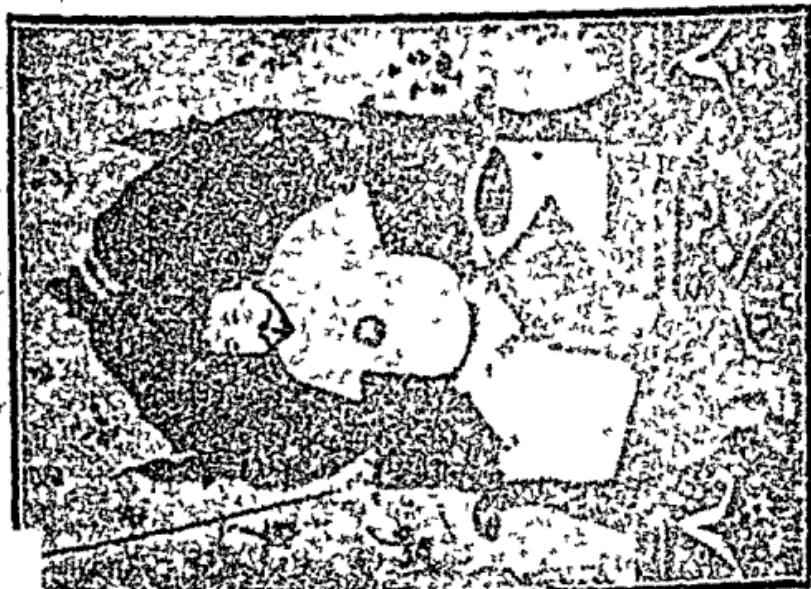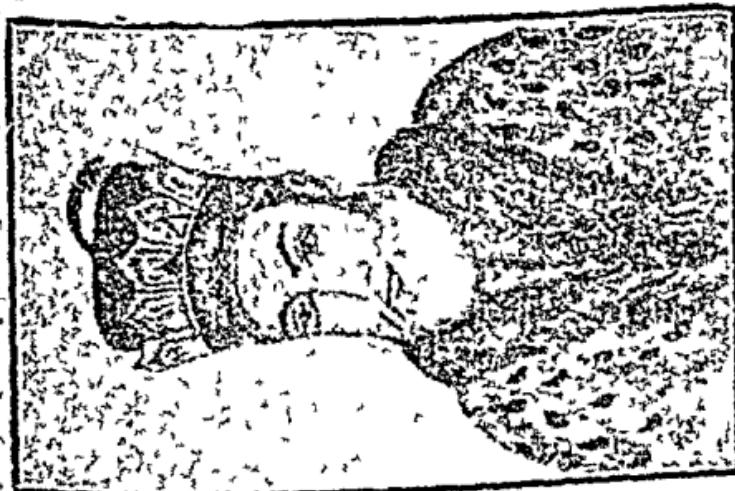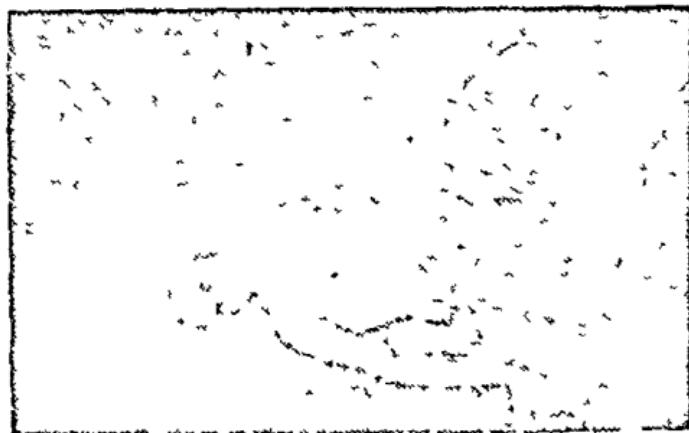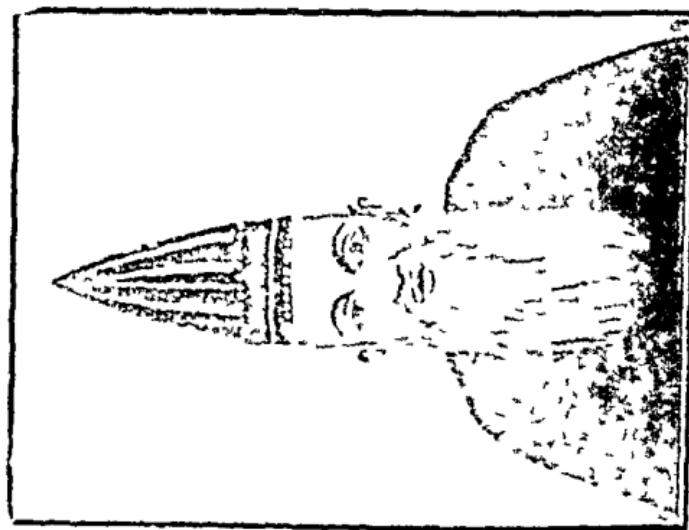
रामानन्द के शिष्यो मे कबीर सबसे प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। कबीर जी स्वभाव से ही बड़े धर्मात्मा और ईश्वरभक्त थे। इन्होंने भी एक निराकार ईश्वर की उपासना पर जोर दिया और मूर्तिपूजा की निन्दा की। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों को उपदेश किया, उनकी बुराइयों को बतलाया और भक्ति और सच्चरित्रता पर बड़ा जोर दिया। कबीर के उपदेशो का संग्रह उनके बीजक मे है जो अब तक पढ़ा जाता है।

गुरु नानक भी इस युग के एक महात्मा हो गये हैं। सिक्ख-धर्म के चलानेवाले वे ही हैं। इनका जन्म १५ वीं शताब्दी मे पंजाब में तालबन्दी नामक ग्राम मे हुआ था। गुरु नानक कहते थे कि हिन्दू-मुसलमानो का ईश्वर एक ही है और जाति पाँति का भेद व्यर्थ है। नानकजी के उपदेशो का संग्रह ग्रन्थसाहब मे है। ग्रन्थसाहब को सिक्ख लोग अपनी पवित्र, धार्मिक पुस्तक समझते हैं।

श्रीवल्लभाचाय और चैतन्य स्वामी ने भी भक्ति का उपदेश किया। वल्लभ स्वामी तैलंग ब्राह्मण थे। उनका दक्षिण में जन्म हुआ था। वे कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते थे और कहते थे कि मनुष्य संसार मे रहता हुआ भी मोक्ष पा सकता है। भक्तो में जाति-पाँति का भेद नहीं। जो ईश्वर से सच्चा प्रम करता है वही मुक्ति का अधिकारी है, चाहे किसी जाति का क्यो न हो।

चैतन्य महाप्रभु का जन्म बगाल मे नदिया (नवद्वीप) नामक स्थान में सन १४८५ इ० में हुआ था। २५ वप की अवस्था म उन्होंने संन्यास ले लिया। उन्होने कृष्ण की भक्ति का उपदेश किया और कहा कि कृष्ण के उपासक सब एक समान हैं। उनमें जाति-पाँत का भेद न

होना चाहिए। चैतन्य के उपदेशों का बंगाल में बड़ा प्रभाव पड़ा और वैष्णव-धर्म में एक नई शक्ति आगई।

इन महात्माओं की शिक्षा से प्रकट होता है कि हिन्दू-मुसलमानों में अब मेल हो चला था। धीरे-धीरे दोनों समझने लगे थे कि हमारा ईश्वर एक ही है। हिन्दू मुसलमान पीरों की पूजा करने लगे और मुसलमान हिन्दुओं के देवी-देवताओं का आदर करने लगे। भक्ति के उपदेशों का दोनों पर प्रभाव पड़ा।

साहित्य—मुसलमानों के आने से भारत में एक नये साहित्य का विकास हुआ। फ़ारसी में अमीर ख़ुसरो ने अद्भुत कविता की। इतिहास के भी बहुत-से ग्रन्थ लिखे गये। मुसलमान संस्कृत-भाषा का आदर नहीं करते थे, इसलिए संस्कृत-साहित्य की उन्नति रुक गई। परन्तु मिथिला में संस्कृत-भाषा की अच्छी उन्नति हुई। बंगाल में जयदेव ने अपना गीतगोविन्द इसी काल में लिखा।

हिन्दी-भाषा को इस काल में बड़ा प्रोत्साहन मिला। कबीर, नानक, दादूदयाल और विद्यापति ठाकुर ने अपनी कृतियों से हिन्दी-साहित्य के भांडार को बढ़ाया।

कला—इस काल में शिल्प और कला की भी अच्छी उन्नति हुई। कुतुबमीनार, तुगलक़ाबाद का किला, गयासुद्दीन तुगलक़ का मक़बरा अलाउद्दीन खिलजी का दवाजा इस काल की प्रसिद्ध इमारतों में से हैं। इनकी विशेषता इनकी मजबूती है। इनमें ऐसा बारीक और सुन्दर काम नहीं है जैसा मुगल-काल की इमारतों में। बंगाल, जौनपुर, गुजरात के बादशाहों को भी इमारत बनाने का बड़ा शौक़ था। इनके बनाये हुए महल और मसजिदें अब तक मौजूद हैं। जौनपुर

अध्याय २२

मुग़लराज्य का स्थापित होना—बाबर

बाबर का प्रारम्भिक जीवन—तुम पहले पढ़ चुके हो कि इब्राहीम लोदी को लड़ाई में हराकर बाबर ने हिन्दुस्तान में अपना राज्य स्थापित किया था। यह बाबर कौन था और कहाँ से आया? बाबर तैमूर के वंश में से था। उसका बाप उमरशेख मिर्ज़ा मध्य एशिया में फ़र्ग़ाना नाम की एक छोटी-सी रियासत का मालिक था। जब बाबर ११ वर्ष का था, उसका बाप मर गया। राज्य का सारा बोझ उसके सिर पर आ पड़ा। उसके चचा भी राज्य की ताक में बैठे थे, इसलिए उनसे भी लड़ना पड़ा। बाबर ने तैमूर की राजधानी समरकन्द को लेने की इच्छा की। उसने तीन बार समरकन्द पर चढ़ाई की परन्तु अन्त में वह उसके हाथ से निकल गया। फ़र्ग़ाना को भी बाबर के शत्रुओं ने छीन लिया। अब निराश होकर वह दक्षिण की तरफ़ आया और सन् १५०४ ई० में उसने

नोट—बाबर के वंशज मुग़ल कहलाते हैं। परन्तु उनके लिए मुग़ल शब्द का प्रयोग करना ठीक नहीं है। मुसलमान इतिहासकारों ने मुग़ल शब्द का प्रयोग उन असभ्य लोगों के लिए किया है जो किसी समय मध्य-एशिया में रहते थे। ये मुसलमान होने से पहले बड़े निर्दयी थे और देशों में लूट-मार करते थे। इन्होंने इल्तुतमिश, बलबन, जलालुद्दीन के ज़माने में हिन्दुस्तान पर भी हमले किये थे। धीरे धीरे मुग़ल तुर्कों में मिलने लगे और उनके साथ विवाह आदि करने लगे। बाबर का बाप तुर्क था और मा मुग़ल जाति की थी। उसके वंशजों को तुर्क कहना ही उपयुक्त है।

कनवाह (खानवा)* का युद्ध (१५२७)—राना ने बाबर से लड़ने के लिए एक लाख सेना इकट्ठी की और बियाना की ओर कूच किया। बाबर भी अपनी सेना लेकर २१ फरवरी सन् १५२७ ई० को कनवाह के मैदान मे आ डटा। राजपूतो की विशाल सेना को देखकर मुगलो के होश उड़ गये। इसी समय काबुल से एक ज्योतिषी आया। उसने यह भविष्यवाणी की कि लड़ाई मे बादशाह की जीत होना कठिन है। बाबर के सिपाही निराश हो गये और घर लौटने की इच्छा करने लगे। बाबर का जीवन लड़ने-भिड़ने ही मे बीता था। वह कब हिम्मत हारनेवाला था। उसने इसी समय शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की और शराब पीने के क़ीमती बर्तन तुड़वा दिये। अपने सिपाहियो को इकट्ठा कर उसने उन्हे इस प्रकार समझाया :—

"सेनाध्यक्षो और मित्रो! जो संसार मे पैदा हुआ है, वह किसी न किसी दिन अवश्य मरेगा। शरीर अनित्य है। धर्म और आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए प्राण देना अपकीर्ति से कहीं अच्छा है। यदि इस लड़ाई मे हमारी मृत्यु हुई तो धर्म के सेवकों मे हमारी गिनती होगी और यदि हमारी विजय हुई तो हमारे धर्म का प्रचार होगा। ईश्वर की शपथ खाकर हमे प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम न लड़ाई के मैदान से भागेगे और न मृत्यु से डरेंगे।"

इन शब्दो का सेना पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। सबने कुरान पर हाथ रखकर शपथ खाई कि हम दीन के लिए अपने प्राण तक

---

* आजकल इस गाँव को खानुआ कहते हैं। यह फतहपुर सीकरी से थोड़ी दूर पर है।

वदला लेने के इच्छुक थे। दूसरे, राजपूतों से इब्राहीम को कोई मदद नहीं मिली। राना साँगा ने खुद बाबर को बुलाने के लिए अपना दूत भेजा था। तीसरे, बाबर का लड़ने का तरीका बहुत बढ़िया था, उसकी तोपों ने ऐसी आग बरसाई कि अफ़गान सेना का लड़ाई के मैदान में ठहरना कठिन हो गया।

बाबर और राना संग्रामसिंह—पानीपत की लड़ाई के बाद दिल्ली, आगरा तो बाबर के हाथ आगये परन्तु हिन्दुस्तान की बादशाहत अभी बहुत दूर थी। राजपूत अब अपनी स्वाधीनता को छोड़नेवाले थे। इनसे लड़े बिना बाबर किस तरह सारे हिन्दुस्तान का बादशाह हो सकता था। राजपूताना में इस समय मेवाड़ का राना संग्रामसिंह (साँगा) सबमें वीर और प्रतापी था। वह सैकड़ों लड़ाइयों में लड़ चुका था। लड़ाई में उसकी एक आँख, एक भुजा और टाँग जाती रही थी। उसके शरीर पर अस्सी घावों के चिह्न थे। उसकी तलवार के सामने दिल्ली, मालवा, गुजरात के सुलतान थर्राते थे। इसके अलावा उसकी सेना में ५०९ हाथी, अस्सी हजार घोड़े और असंख्य पैदल थे। ऐसे वीर योद्धा का सामना करना कोई खेल नहीं था।

राना साँगा ने समझा था कि यदि लोदियों का नाश हो गया तो उसे अपना राज्य बढ़ाने में आसानी होगी। इसी लिए उसने बाबर से बात-चीत की थी। परन्तु पानीपत की लड़ाई के बाद उसकी आँखें खुल गईं। बाबर हिन्दुस्तान में जमकर बैठ गया और राना को अपनी इच्छा पूरी करने की कोई आशा न रही। लाचार उसे युद्ध के लिए तैयार होना पड़ा।

कनवाह (खानवा)* का युद्ध (१५२७)—राना ने बाबर से लड़ने के लिए एक लाख सेना इकट्ठी की और बियाना की ओर कूच किया। बाबर भी अपनी सेना लेकर २१ फरवरी सन् १५२७ ई० को लड़ाई के मैदान में आ डटा। राजपूतों की विशाल सेना को देखकर मुगलों के होश उड़ गये। इसी समय काबुल से एक ज्योतिषी आया। उसने यह भविष्यवाणी की कि लड़ाई में बादशाह की जीत होना कठिन है। बाबर के सिपाही निराश हो गये और घर लौटने की इच्छा करने लगे। बाबर का जीवन लड़ने-भिड़ने ही में बीता था। वह कब हिम्मत हारनेवाला था। उसने इसी समय शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की और शराब पीने के कीमती बर्तन तुड़वा दिये। अपने सिपाहियों को इकट्ठा कर उसने उन्हें इस प्रकार समझाया —

"सेनाध्यक्षो और मित्रो! जो संसार में पैदा हुआ है, वह किसी न किसी दिन अवश्य मरेगा। शरीर अनित्य है। धर्म और आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए प्राण देना अपकीर्ति से कहीं अच्छा है। यदि इस लड़ाई में हमारी मृत्यु हुई तो धर्म के सेवकों में हमारी गिनती होगी और यदि हमारी विजय हुई तो हमारे धर्म का प्रचार होगा। ईश्वर की शपथ खाकर हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम न लड़ाई के मैदान से भागेंगे और न मृत्यु से डरेंगे।"

इन शब्दों का सेना पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। सबने कुरान पर हाथ रखकर शपथ खाई कि हम दीन के लिए अपने प्राण तक

---

* आजकल इस गाँव को खानुआ कहते हैं। यह फतहपुर सीकरी से थोड़ी दूर पर है।

दे देंगे। फ़तहपुर सीकरी के पास कनवाह (खानवा) नामक स्थान पर १५ मार्च सन् १५२७ ई० को भयङ्कर युद्ध हुआ। राजपूतों ने वीरता के बड़े बड़े जौहर दिखाये। वे भूखे शेरों की तरह मुगलसेना पर टूट पड़े और चारों तरफ मारकाट करने लगे। परन्तु बाबर के तोपखाने ने फिर उसकी मदद की। लाशों के ढेर लग गये। राना साँगा खुद घायल हुआ और उसके सिपाही उसे लड़ाई के मैदान से निकाल ले गये। तोपों की मार ने राजपूतों को चकनाचूर कर दिया और अन्त में उन्हें पीछे हटना पड़ा।

इस हार ने मेवाड़ की क्या सारे राजपूताने की प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया। राना के मित्र भी उसका साथ छोड़ गये। मालवा, गुजरात के सुलतानों को अब दम लेने का मौका मिला। हिन्दू-राज्य स्थापित होने की आशा भी नष्ट हो गई। बाबर को इस लड़ाई से बड़ा लाभ हुआ। राजपूतों का नाश होने से मुगलराज्य की जड़ मज़बूत हो गई। दूसरे राज्यों को जीतना अब बाबर के लिए आसान हो गया। आगरा, अवध का सारा सूबा उसके हाथ आगया और चन्देरी के जीतने में कुछ भी कठिनाई नहीं हुई।

बंगाल और बिहार की विजय—चन्देरी का क़िला जीतने के बाद बाबर अफ़गानों को दबाने के लिए बंगाल, बिहार की तरफ़ गया। लोदी अफ़गान पानीपत की हार के बाद इधर ही भाग गये थे। सन् १५२९ ई० में घाघरा नदी के किनारे पर बाबर ने अफ़गानों को लड़ाई में हराया। बिहार का सूबा बाबर के हाथ आगया और बंगाल के सुलतान ने उसके साथ सुलह कर ली।

बाबर की मृत्यु (१५३० ई०)—अधिक परिश्रम करने के कारण बाबर की तन्दुरुस्ती खराब हो गइ थी। उसे शराब पीने और अफ़ीम, भंग आदि नशीली चीज खाने का शोक था। इन्होने भी उसे कमजोर बना डाला। बदख़्शाँ से लौटने के कुछ दिन बाद उसका बेटा हुमायूँ बीमार पड गया। बहुत दवा की गइ, परन्तु हकीमो ने निराशा प्रकट की। इससे उसे बहुत दुःख हुआ। २६ दिसम्बर सन् १५३० ई० को आगरे मे बाबर का देहान्त हो गया। उसकी लाश काबुल पहुँचाई गई और वही दफ़न की गइ।

बाबर का चरित्र—बाबर बडा वीर, बुद्धिमान् और उदार बादशाह था। उसका हृदय कोमल था। उसने कभी किसी को बिना कारण नहीं सताया और न लड़ाई से भागनेवाले शत्रु को मारा। युद्ध करने मे उस आनन्द आता था। इसी लिए तुर्किस्तान के सर्दार उसे बाबर कहते थे। तुर्की भाषा मे बाबर शब्द का अर्थ है शेर। और यह सच है कि बाबर शेर के समान ही बहादुर था। उसमें शारीरिक बल भी ख़ूब था। वह बढ़िया तैराक था। हिन्दुस्तान में जितनी नदियाँ उसको पार करनी पडी, वे सब उसने तैर कर ही पार की थीं। घोडे की सवारी का उसे ऐसा अभ्यास था कि दिन भर में सौ-सौ मील घोड़े की पीठ पर बैठा चला जाता था।

बाबर सीधा, सच्चा, सुन्नी मुसलमान था। उसने मज़हबी पुस्तकें भी पढ़ी थीं परन्तु कट्टरता उसमे बिलकुल न थी। हिन्दुओं के साथ उसका बर्ताव अच्छा था। बात का वह ऐसा पक्का था कि जिस किसी को वह वचन दे देता था उसकी वह पूरी तरह से मदद करता था।

बाबर केवल वीर योद्धा ही न था किन्तु वह सुशिक्षित लेखक और कवि भी था। तुर्की भाषा में उसकी बनाई हुई गजलें और गीत अब तक मौजूद हैं। उसने स्वयं अपना जीवनचरित्र लिखा है, जिसका नाम "बाबरनामा" है। इसकी भाषा सरल और मनोहर है। यूरोपवाले भी इसकी प्रशंसा करते हैं।

बाबर प्राकृतिक दृश्यों का प्रेमी था। झील, झरने, तालाब, नदी, फल, फूलों को देखकर वह मुग्ध हो जाता था। बाग़ लगाने का उसे बड़ा शौक़ था। आगरे में भी उसने एक बड़ा बाग़ लगवाया था जो आज तक रामबाग़ के नाम से प्रसिद्ध है।

अभ्यास

१—बाबर कौन था? उसने हिन्दुस्तान पर क्यों हमला किया?

२—दौलतखाँ और राना संग्रामसिंह ने बाबर को क्यों बुलाया था? उनका ऐसा करना अच्छा था या बुरा।

३—राना संग्रामसिंह के साथ बाबर की क्यों लड़ाई हुई? इस लड़ाई का वर्णन करो।

४—बाबर के चरित्र का वर्णन करो। इतिहास में बाबर का नाम इतना क्यों प्रसिद्ध है?

५—बाबर ने हिन्दुस्तान में अपना राज्य किस प्रकार स्थापित किया? संक्षेप से बताओ।

एक अफ़गान खड़ा हो गया। उसका नाम था शेरखाँ। उसने चुनार के किले पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ ने चुनार पर धावा किया। परन्तु शेरखा ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। हुमायूँ क्या जानता था कि यही शेरखाँ उसे किसी दिन हिन्दुस्तान से निकाल देगा!

बहादुरशाह के साथ लड़ाई—बहादुरशाह के डर से ही हुमायूँ चुनार क किले को छोड़कर चला आया था। जब हुमायूँ बहादुरशाह से लड़ने गया तब उसे मालूम हुआ कि वह चित्तौड़ को घेरे पड़ा है। चित्तौड़ को उसने करीब करीब जीत ही लिया था। परन्तु हुमायूँ के डर से वह भेंट लेकर वहाँ से चल दिया। दूसरी बार उसने फिर चित्तौड़ पर चढ़ाई की। हुमायूँ के लिए यह अच्छा मौका था। उसे चाहिए था कि वह फौरन बहादुरशाह पर हमला करता परन्तु बजाय ऐसा करने के वह मालवा मे पहुँचा। बहादुर यह कहला भेजा कि जब एक मुसलमान लड़ रहा हो तो दूसरे मुसलमान का धर्म यही है कि मुसलमान पर हमला न करे। हुमायूँ इस चकमे मे आ गया। उसकी सेना मालवा ही मे पड़ी रही जब बहादुरशाह चित्तौड़ से लौटा तो हुमायूँ ने उसका पीछा किया वह द्यू की ओर भाग गया। गुजरात और मालवा दोनो आसानी से हुमायूँ के अधिकार मे आ गये। इधर तो हुमायूँ की खूब जीत हुई। परन्तु पूर्व मे एक नई आपत्ति खड़ी हो गई। शेरखाँ ने बिहार पर अपना अधिकार कर लिया और वह आगरा अवध की तरफ़ हाथ पैर फैलाने लगा। बङ्गाल को भी जीतने का उसने इरादा किया। यह सुनकर हुमायूँ मालवा मे लौटा। बहादुरशाह ने जो ऐसे मौके की ताक मे बैठा था, झट मालवा और गुजरात पर

घंटे राज्य-सिंहासन पर बैठने की आज्ञा दी। भिश्ती ने चमड़े का सिक्का चलाया और अपने रिश्तेदारो को ख़ूब रुपया दिया। यह हुमायूँ की उदारता और कृतज्ञता का एक उदाहरण है।

कन्नौज की लड़ाई (सन् १५४०)—चौसा की हार के बाद हुमायूँ आगरे लौटा। हिन्दाल के विश्वासघात पर उसे बड़ा क्रोध आया परन्तु कामरान के कहने से उसका अपराध क्षमा कर दिया गया। अब तीनों भाई मिलकर शेरख़ाँ को दबाने की तरकीब सोचने लगे। शेरख़ाँ ने इतने मे बङ्गाल पर अधिकार जमा लिया और मुग़ल-सेना को निकाल बाहर किया।

हुमायूँ फिर एक बड़ी सेना लेकर बङ्गाल की तरफ चला। कामरान ने धोखा दिया। वह अपनी फौज को लेकर लाहौर चल दिया और अपने सर्दारों को भी साथ ले गया। शाही लश्कर का एक अफ़सर सुलतान मिर्ज़ा भी अपनी सेना लेकर शत्रु से जा मिला। सन् १५४० ई० मे कन्नौज के पास बिलग्राम नामक स्थान पर दोना सेनाएं एक दूसरे से भिड़ गईं। हुमायूँ की हार हुई। उसक बहुत-से सिपाही गंगा मे डूबकर मर गये। बड़ी कठिनाई से हुमायूँ आगरे पहुँचा और अपना माल-असबाब लेकर लाहौर की तरफ चल दिया। आगरा, दिल्ली मे शेरख़ाँ का झण्डा फहराने लगा।

हुमायूँ का फ़ारस को जाना—निराश होकर हुमायूँ सिन्ध के रेगिस्तान की तरफ़ गया। मारवाड़ के राजा मालदेव ने भी उसकी मदद नहीं की। अनेक कष्ट सहता हुआ बादशाह अन्त में अमरकोट पहुँचा। वहाँ २३ नवम्बर सन् १५४२ ई० को अकबर

का जन्म हुआ*। अमरकोट के राना की मदद से हुमायूँ ने फिर सिन्ध मे पैर जमाने की कोशिश की परन्तु सफल न हुइ। अमरकोट से वह कन्दहार की तरफ बढ़ा परन्तु वहाँ उसके भाइ कामरान ने उसे क़ैद करना चाहा। कन्दहार से निकल कर हुमायूँ फ़ारस पहुँचा। वहाँ शाह तहमास्प ने उसका स्वागत किया और ११ वर्ष तक अपने पास रक्खा।

दिल्ली का राज्य शेरशाह के हाथ मे चला गया। हुमायूँ के लौटने का हाल तुम्हे आगे चलकर बतलायेंगे।

दिल्ली में नया राज्य—शेरशाह सूरी (सन् १५४०-४५)— हुमायूँ के फारस चले जाने पर उत्तरी भारत मे फिर अफग़ानो की तूती बोलने लगी। शेरशाह सूरी दिल्ली का बादशाह हो गया। यह शेरशाह कौन था?

शेरशाह का बचपन का नाम फ़रीद था। उसका बाप हसन सहसराम (बिहार मे) का एक जागीरदार था। अपनी सौतेली मा से अनबन हो जाने के कारण फरीद जौनपुर चला गया। वहाँ उसने खूब विद्या पढ़ी और अरबी, फारसी मे अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। कुछ समय के बाद बाप-बेटो में मेल हो गया और हसन ने उसे अपनी जागीर का प्रबन्ध सौंप दिया। फ़रीद ने ऐसा अच्छा प्रबन्ध किया कि हसन दंग रह गया। जागीर की आमदनी भी बढ़ गई और प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। बाप-बेटो में फिर किसी कारण अनबन हो गइ और फ़रीद को घर छोड़ना पड़ा।

---

*सन् १५४१ ई० में जब हुमायू ने भक्कर पर चढाई की थी तब हमीदा नामक ईरानी स्त्री के साथ विवाह किया था।

घंटे राज्य-सिंहासन पर बैठने की आज्ञा दी। भिश्ती ने चमड़े का सिक्का चलाया और अपने रिश्तेदारों को ख़ूब रुपया दिया। यह हुमायूँ की उदारता और कृतज्ञता का एक उदाहरण है।

कन्नौज की लड़ाई (सन् १५४०)—चौसा की हार के बाद हुमायूँ आगरे लौटा। हिन्दाल के विश्वासघात पर उसे बड़ा क्रोध आया परन्तु कामरान के कहने से उसका अपराध क्षमा कर दिया गया। अब तीनों भाई मिलकर शेरख़ाँ को दबाने की तरकीब सोचने लगे। शेरख़ाँ ने इतने में बङ्गाल पर अधिकार जमा लिया और मुग़ल-सेना को निकाल बाहर किया।

हुमायूँ फिर एक बड़ी सेना लेकर बङ्गाल की तरफ़ चला। कामरान ने धोखा दिया। वह अपनी फ़ौज को लेकर लाहौर चल दिया और अपने सर्दारों को भी साथ ले गया। शाही लश्कर का एक अफ़सर सुलतान मिर्ज़ा भी अपनी सेना लेकर शत्रु से जा मिला। सन् १५४० ई० में कन्नौज के पास बिलग्राम नामक स्थान पर दोनों सेनाएं एक दूसरे से भिड़ गईं। हुमायूँ की हार हुई। उसके बहुत-से सिपाही गंगा में डूबकर मर गये। बड़ी कठिनाई से हुमायूँ आगरे पहुँचा और अपना माल-असबाब लेकर लाहौर की तरफ़ चल दिया। आगरा, दिल्ली में शेरख़ाँ का झण्डा फहराने लगा।

हुमायूँ का फ़ारस को जाना—निराश होकर हुमायूँ सिन्ध के रेगिस्तान की तरफ़ गया। मारवाड़ के राजा मालदेव ने भी उसकी मदद नहीं की। अनेक कष्ट सहता हुआ बादशाह अन्त में अमरकोट पहुँचा। वहाँ २३ नवम्बर सन् १५४२ ई० को अकबर

ा जन्म हुआ*। अमरकोट के राना की मदद से हुमायूँ ने फिर न्ध मे पैर जमाने की कोशिश की परन्तु सफल न हुइ। अमरकोट े वह क़न्दहार की तरफ वढ़ा परन्तु वहाँ उसके भाइ कामरान ने से कैद करना चाहा। क़न्दहार से निकल कर हुमायूँ फ़ारस हुँचा। वहाँ शाह तहमास्प ने उसका स्वागत किया और ११ वर्ष क अपने पास रक्खा।

दिल्ली का राज्य शेरशाह के हाथ मे चला गया। हुमायूँ के ौटने का हाल तुम्हें आगे चलकर वतलायेंगे।

दिल्ली में नया राज्य—शेरशाह सूरी (सन् १५४०-४५)—हुमायूँ के फारस चले जाने पर उत्तरी भारत मे फिर अफग़ानो की तूती बोलने लगी। शेरशाह सूरी दिल्ली का वादशाह हो गया। यह शेरशाह कौन था?

शेरशाह का बचपन का नाम फ़रीद था। उसका वाप हसन सहसराम (विहार मे) का एक जागीरदार था। अपनी सौतेली मा से अनवन हो जाने के कारण फरीद जौनपुर चला गया। वहाँ उसने .कुछ विद्या पढ़ी और अरवी, फारसी मे अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। कुछ समय के वाद वाप-बेटो मे मेल हो गया और हसन ने उसे अपनी जागीर का प्रवन्ध सौंप दिया। फरीद ने ऐसा अच्छा प्रबन्ध किया कि हसन दंग रह गया। जागीर की आमदनी भी बढ़ गई और प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। वाप-बेटों में फिर किसी कारण अनवन हो गइ और फ़रीद को घर छोड़ना पड़ा।

---

*सन् १५४१ ई० मे जब हुमायू ने भक्कर पर चढ़ाई की थी तब हमीदा नामक ईरानी स्त्री के साथ विवाह किया था।

उसने बिहार के सूबेदार के यहाँ नौकरी कर ली। यहीं पर फरीद ने एक शेर को मारा और वह शेरख़ाँ कहलाने लगा। सन् १५२८ ई० मे शेरख़ाँ की बाबर से भेंट हुई। बाबर ने ताड़ लिया कि शेरख़ाँ मामूली आदमी नहीं है। जब उसने कुछ शक किया तब शेरख़ाँ फिर बिहार को चला गया और सूबेदार के यहाँ उसने नौकरी कर ली। धीरे-धीरे उसने सब राजकाज अपने हाथ मे ले लिया और बिहार, बङ्गाल पर अपना पूरा अधिकार स्थापित कर लिया।

बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ को शेरख़ाँ से लड़ना पड़ा। चौसा की लड़ाई के बाद उसने शेरशाह की उपाधि ली। अब वह बङ्गाल, बिहार, जौनपुर का मालिक हो गया और बिलग्राम की लड़ाई मे हुमायूँ को हराकर उसने दिल्ली का राज्य पा लिया।

शेरशाह की विजय—दिल्ली का सुलतान होकर शेरशाह ने अपना राज्य बढ़ाने की इच्छा की। पहले उसने पंजाब के खोखरों को दबाया और रोहतास का किला बनवाया। बङ्गाल के सूबेदार ने बग़ावत का इरादा किया परन्तु शेरशाह ने उसे दबा दिया। इसके बाद उसने मालवा को जीता और मारवाड के राजा मालदेव पर चढ़ाई की। मालदेव इस समय राजपूताना मे शक्तिशाली राजा था। शेरशाह ने पहले रायसीन* का किला जीत लिया और फिर जोधपुर को (१५४४ ई०) घेर लिया। परन्तु इस रेगिस्तान में राजपूतों को हराना कठिन था।

---

*रायसीन का किला रणथम्भोर के पास है।

राजपूतो ने ऐसे जोर का हमला किया कि शेरशाह की भी जान बड़ी मुश्किल से बची। उसने कहा कि मैंने एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान का राज्य खो दिया होता।

शेरशाह की मृत्यु—सन् १५४४ ई० मे शेरशाह ने चित्तौड पर चढ़ाई की। राना ने उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया। इसके बाद उसने कालिंजर पर धावा किया परन्तु बारूद मे आग लग जाने से वह २२ मई सन् १५४५ ई० को झुलस कर मर गया।

राज्य-प्रबन्ध—शेरशाह हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध बादशाहों में गिना जाता है। जैसा वह शूरवीर था वैसा ही योग्य शासक भी था। राज्य के हर एक काम को स्वयं देखता था और अपने अफसरों से भी खूब काम लेता था। प्रजा की भलाई का उसे सदैव ध्यान रहता था। उसने जमीन की नाप कराई और लगान का ठीक प्रबन्ध किया। किसानों को पैदावार का एक तिहाई हिस्सा राज्य को देना पडता था। बादशाह का हुक्म था कि किसानों पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जाय और खेती की उन्नति मे राज्य की ओर से मदद दी जाय। यदि कभी उसकी फौज खेती को नुकसान पहुँचाती तो वह अपने खज़ाने से रुपया देकर उसे पूरा करता था।

न्याय करने मे वह किसी की रू-रिआयत नहीं करता था। उसकी अदालतों में छोटे-बडे, गरीब-अमीर सब बराबर थे। चोरी, क़त्ल, लूट और डकैती को रोकने के लिए उसने गाँव गाँव मे मुखिया नियत कर दिये थे। जब कोई ऐसा जुर्म होता तो मुखिया और गाँववालों को उसका पता लगाना पड़ता था। अगर वे पता न लगा सकते तो
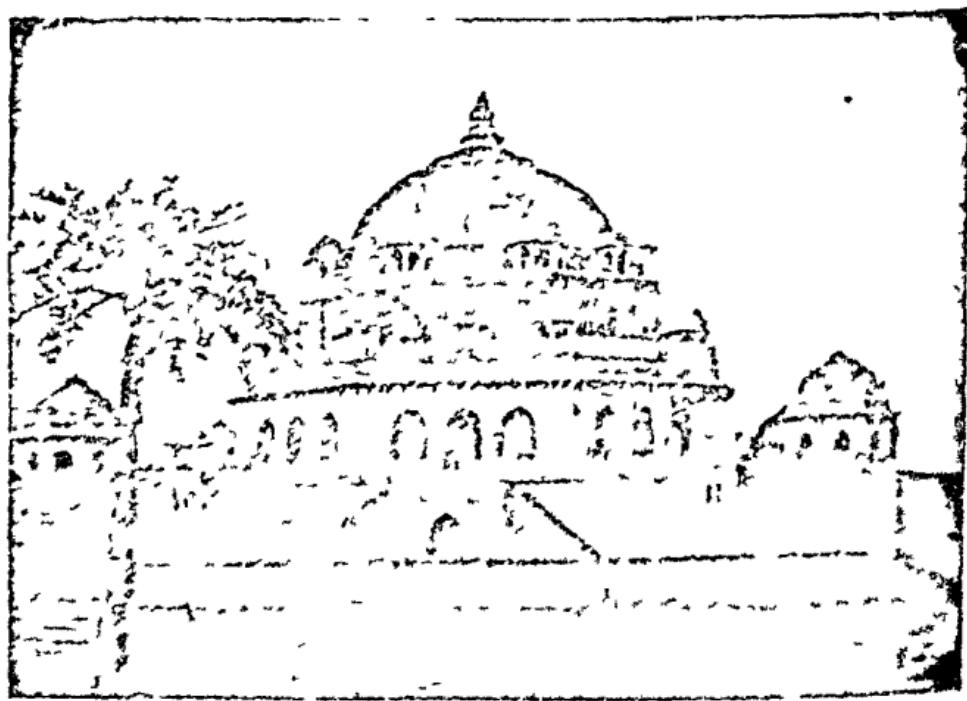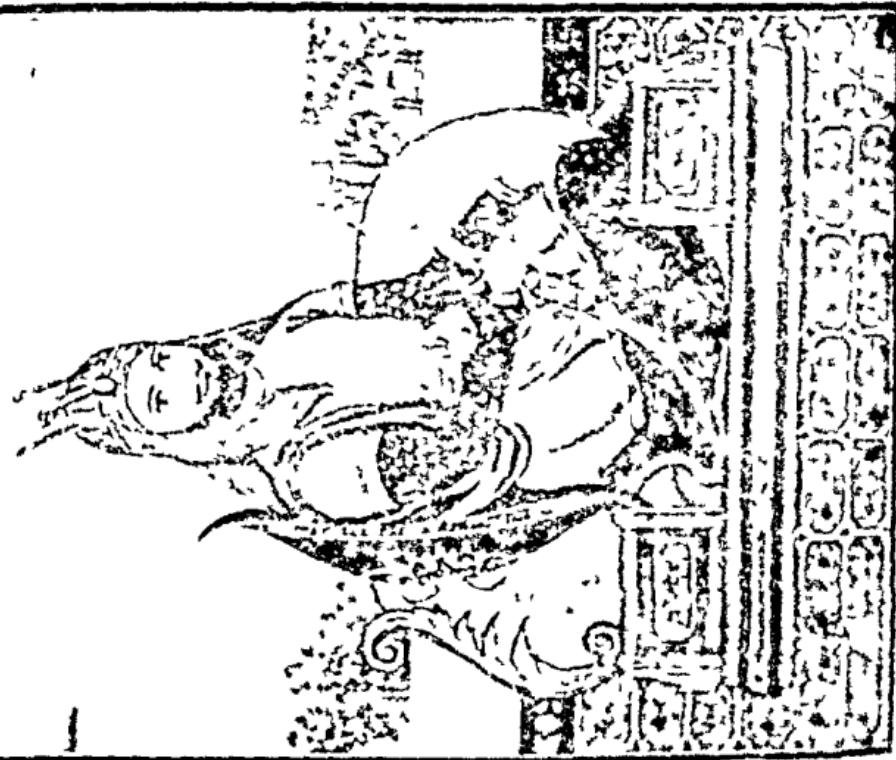
और हर साल १ लाख ८० हज़ार अशर्फियाँ खैरात में खर्च करता था। विद्यार्थियों को राज्य से वज़ीफे दिये जाते थे और मदर्सों और मसजिदों को भी मदद मिलती थी। बादशाह विद्वानों का आदर करता था और उन्हें इनाम देता था।

शेरशाह ने वही काम किया जिसके लिए अकबर की इतनी प्रशंसा की जाती है। यदि वह थोड़े दिन और जीवित रहता तो अपने राज्य की जड़ मज़बूत कर जाता और मुगलों को अपनी खोई हुई शक्ति का संगठन करने का मौका न मिलता।

सलीमशाह सूर (१५४५-५४)—शेरशाह के मरने के बाद उसका दूसरा लड़का जलाल सलीमशाह के नाम से दिल्ली का बादशाह हुआ। वह बड़े रोब-दाब का आदमी था। उसने अमीरों को दबाया और सब अधिकार अपने हाथ में ले लिया। राज्य में विद्रोह की आग धधकने लगी। पंजाब में फौज ने गड़बड़ किया परन्तु बागियों को कड़ी सज़ा मिलने पर शान्ति स्थापित हो गई।

सूरवंश का अन्त—सलीमशाह के बाद उसका बेटा उसकी उम्र केवल १२ वर्ष की थी गद्दी पर बैठा परन्तु तीन दिन बाद ही उसके मामा ने उसे मार डाला और खुद आदिलशाह नाम से बादशाह हो गया। आदिल मूर्ख और दुराचारी मनुष्य । राज्य का काम उसने हेमू नामक एक हिन्दू को सौंप दिया। पहले बनिये का काम-काज करता था। इसलिए मुसलमानों से बक्काल कहा है। हेमू बड़ा वीर था। वह २१ लड़ाइयों में ता पराक्रम दिखा चुका था। आदिलशाह को उससे ा थी।

उन्हे अपने पास से रुपया देना पड़ता था। शहरों में कोतवालों की भी ऐसी ही जिम्मेदारी थी।

शेरशाह ने व्यापार की उन्नति मे भी मदद की। उसने सड़कें बनवाई जिनसे एक जगह से दूसरी जगह आने जाने की सुविधा हुई। सड़को के किनारे सराय बनी हुई थीं जहाँ यात्रियों को सब तरह की चीजें मिल जाती थीं। हिन्दुओं का भोजन बनाने और उन्हे पानी पिलाने के लिए राज्य की तरफ से ब्राह्मण नौकर रहते थे। यदि कोई यात्री रास्ते मे मर जाता तो उसका माल-असबाब उसके घरवालो को दे दिया जाता था।

फौज का भी शेरशाह ने नये ढंग से सुधार किया। उसने घोड़ों को दाग करने का रवाज फिर चलाया और सिपाहियों के हुलिये दर्ज कराये। सिपाहियों के साथ वह दया का बर्ताव करता था। गरीब सिपाहियों को हथियार और घोड़े भी देता था। वेतन ठीक समय पर मिलता था जिससे सब लोग सन्तुष्ट रहते थे।

शेरशाह का चरित्र—योग्य शासक होने के अलावा शेरशाह धर्मात्मा और दयालु मनुष्य भी था। वह नियम से रहता था। सवेरे तीन बजे उठकर वह स्नान करता और नमाज से छुट्टी पाकर राज्य का काम करने बैठ जाता था। दोपहर को वह भोजन करता और थोड़ी देर आराम करके फिर दो बजे के करीब नमाज पढ़कर काम में लग जाता था। वह अपने मजहब का पाबन्द था। परन्तु उसने हिन्दुओं को अपना धर्म पालने की पूरी स्वतंत्रता दे दी थी। इतना ही नहीं, हिन्दुओं के मदर्सों को भी वह रुपया देता था। दीन-दुखियों की वह हमेशा मदद करता था, भूखों को अन्न बटवाता था

के साथ सहन किया और कभी किसी के साथ कठोरता का बर्ताव नहीं किया।

अभ्यास

१—हुमायूँ को राजगद्दी पर बैठते ही किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
२—बहादुरशाह के साथ हुमायूँ की क्यों लड़ाई हुई?
३—शेरशाह का बादशाह होने के पहले का हाल बताओ।
४—शेरशाह ने किस तरह दिल्ली का राज्य पाया?
५—हुमायूँ की हार के क्या क्या कारण थे?
६—शेरशाह के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो।
७—शेरशाह की गिनती क्यों भारत के बड़े बादशाहों में की है?
८—शेरशाह की मृत्यु के बाद हुमायूँ ने फिर किस तरह दिल्ली राज्य लिया?

इस समय दिल्ली की गद्दी के लिए तीन अफ़ग़ान शाहज़ादे हक़दार थे। इनके झगड़ों ने हुमायूँ को मौक़ा दिया। उसने फ़ारस के शाह की मदद से १५ ००० सवार लेकर पंजाब पर हमला किया और अपने सेनापति बैरमख़ाँ की मदद से लाहौर को जीत लिया। इसके बाद सरहिन्द के स्थान पर उसने सिकन्दर सूर को लड़ाई (१५५५ ई०) में हराया। सिकन्दर हिमालय की तरफ़ भाग गया और १५ वर्ष बाद दिल्ली, आगरा फिर हुमायूँ के हाथ आगये।

हुमायूँ की मृत्यु (१५५६ ई०)—हुमायूँ को राज्य तो मिल गया परन्तु वह बहुत दिनों तक न जिया। एक दिन वह अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतर रहा था कि इतने में उसने मुल्ला की आवाज़ सुनी। नमाज़ का समय था। बादशाह वहीं रुक गया और फिर जब लकड़ी टेककर उठा, तब उसका पैर संगमरमर की सीढ़ी से फिसल गया। चोट से वह बेहोश हो गया। बहुत इलाज किया गया परन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त में चौथे दिन उसका देहान्त हो गया।

हुमायूँ का चरित्र—हुमायूँ दयालु और उदार-हृदय बादशाह था। वह ख़ूब पढ़ा-लिखा था और विद्वानों से प्रेम करता था। परन्तु बाबर की तरह वीर और दृढ़ विचारवाला नहीं था। उसका एक काम पूरा नहीं होता था जब तक कि वह दूसरा छेड़ देता था। इसी लिए वह कभी अपनी पूरी ताक़त से काम न ले सका। अवस्था बढ़ने पर वह अफ़ीम खाने लग गया था जिससे उसका दिमाग़ कमज़ोर हो गया। अपनी ऐश-पसन्दी और आलस्य के कारण हुमायूँ ने बड़े दुःख उठाये। परन्तु इन सबको उसने धैर्य

के साथ सहन किया और कभी किसी के साथ कठोरता का बर्ताव नहीं किया।

अभ्यास

१—हुमायूँ को राजगद्दी पर बैठते ही किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
२—बहादुरशाह के साथ हुमायूँ की क्यों लड़ाई हुई?
३—शेरशाह का बादशाह होने के पहले का हाल बताओ।
४—शेरशाह ने किस तरह दिल्ली का राज्य पाया?
५—हुमायूँ की हार के क्या क्या कारण थे?
६—शेरशाह के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो।
७—शेरशाह की गिनती क्यों भारत के बड़े बादशाहों में की जाती है?
८—शेरशाह की मृत्यु के बाद हुमायूँ ने फिर किस तरह दिल्ली का राज्य लिया?

अध्याय २४

(१) महान् सम्राट् अकबर (सन् १५५६-१६०५)

राज्य का विस्तार

सन् १५५६ में भारत की दशा—हुमायूँ की मृत्यु के समय मुग़ल-राज्य का विस्तार अधिक नहीं था। अपने खोये हुए देशों को जीतने का उसे समय ही न मिला था। काबुल, काश्मीर, सिन्ध, मुलतान दिल्ली-राज्य से अलग हो गये थे। बंगाल, बिहार में सूर अफ़ग़ान अभी तक दिल्ली-राज्य को लेने की घात में थे। हुमायूँ के समय में राजपूतों को अपनी शक्ति बढ़ाने का अच्छा मौक़ा मिल गया था। राजपूताने में मेवाड़, जैसलमेर, बूँदी, जोधपुर-राज्य स्वाधीन थे। मालवा, गुजरात भी स्वाधीन हो गये थे। दक्षिण में खानदेश, बरार, बीदर, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा का दिल्ली से कुछ भी सम्बन्ध न था। आगे चलकर तुंगभद्रा नदी से कुमारी अन्तरीप तक सारा देश विजयनगरराज्य के अन्तर्गत था।

अकबर का बादशाह होना—जिस समय हुमायूँ मरा उस समय अकबर की अवस्था केवल १३ वर्ष की थी। वह दिल्ली में मौजूद भी न था। हुमायूँ के मरने की खबर कई दिन तक छिपाई गई क्योंकि अभी पञ्जाब पूरे तौर से मुग़लों के अधिकार में नहीं आया था और सिकन्दरशाह और आदिलशाह सूर अभी दिल्ली-राज्य को लेने की ताक में थे। हेमू ने एक बड़ी सेना इकट्ठी कर ली और विक्रमादित्य की उपाधि ले ली थी।

हेमू के साथ लड़ाई—अकबर को इतनी कम उम्र मे बड़ी कठिनाइयां का सामना करना पड़ा। परन्तु भाग्य से उसका शिक्षक बैरमखाँ बड़ा योग्य और अनुभवी पुरुष था। उसने हुमायूँ का मुसीबतों में साथ दिया था और अब भी उसके बेटे की हर तरह मदद करने को तैयार था। उसने अकबर को धीरज बँधाया और राज्य का प्रबन्ध बडी योग्यता से किया।

पहले अकबर को हेमू से टक्कर लेनी पड़ी। हेमू एक बड़ी सेना लेकर आया परन्तु उसका तोपखाना मुगलो ने छीन लिया। पानीपत के मैदान मे (१५५६ ई०) घोर लड़ाइ हुइ। हेमू वीरता से लड़ा परन्तु उसकी एक आँख में तीर लग जाने से वह हौदे मे गिर पड़ा। उसके गिरते ही फौज के पैर उखड़ गये। जब हेमू पकड कर अकबर के सामने लाया गया तब बैरमखाँ ने उससे कहा कि अपने हाथ से इसे मारकर गाजी की उपाधि लो। परन्तु अकबर ने मना कर दिया और कहा कि घायल शत्रु को मारना बहादुरी का काम नहीं है। इस पर बैरमखाँ ने खुद अपनी तलवार से हेमू का सिर उड़ा दिया। हेमू तो यो मरा, उधर आदिलशाह बगाल के सुलतान के साथ लडाई मे मारा गया। सिकन्दरशाह को भी मुगल-सेना ने मानकोट मे घेर लिया और हरा दिया। इस प्रकार अकबर ने सूर सुलतानों से छुटकारा पाया।

अकबर और बैरमखाँ—बैरमखाँ ने बड़े कठिन समय में अकबर की मदद की थी। उसने अपनी वीरता और बुद्धिमाना से मुगलराज्य को इस आपत्ति-काल मे बचाया था। उसका दबदबा बढ़ गया था। बड़े बड़े सर्दार उसकी ख़ुशामद करने लगे। इससे

उसका स्वभाव बिगड़ गया। वह घमंडी हो गया। जरा जरा-सी बात पर लोगों के साथ कठोर बर्त्ताव करने लगा। उधर महल में बेगमें भी उसका प्रभाव कम करने की कोशिश करने लगीं। अकबर अब १७ वर्ष का हो गया था। उसे भी राज्य का काम अपने हाथ में लेने की इच्छा थी। बैरमखाँ ने यह समझकर कि उसके शत्रु बादशाह को भड़का रहे हैं लड़ाई की तैयारी कर दी परन्तु वह हार गया और पकड़कर अकबर के सामने लाया गया। बादशाह उसकी नेकियों को भूला नहीं था। उसका अपराध क्षमा कर दिया गया और उसे मक्का जाने की आज्ञा दे दी गई। जब बैरमखाँ गुजरात में पहुँचा (१५६१ ई०) तब एक अफ़गान ने उसे मार डाला। उसके चार वर्ष के बच्चे और स्त्रियों को बादशाह ने अपने यहाँ बुला लिया और लड़के की शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया। यह लड़का पीछे से अब्दुर्रहीम खानखाना के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अकबर और राजपूत—अकबर की अवस्था तो थोड़ी थी परन्तु वह बड़ा बुद्धिमान् था। उसने सोचा कि सारे हिन्दुस्तान का बादशाह होने के लिए हिन्दुओं को अपनी तरफ़ मिलाना चाहिए। हिन्दुओं में राजपूत लड़ने-भिड़नेवाले लोग थे। उनके साथ मेल करने से देश का जीतना आसान होगा और विद्रोही मुसलमानों को दबाने में भी मदद मिलेगी। सन् १५६२ ई० में बादशाह ने आमेर (जयपुर) के राजा भारमल की बेटी के साथ विवाह कर लिया। भारमल के बेटे भगवानदास और उसके पोते मानसिंह को उसने बड़े-बड़े ओहदों पर नियुक्त किया। उन्होंने बादशाह की हृदय से सेवा

राणा प्रताप
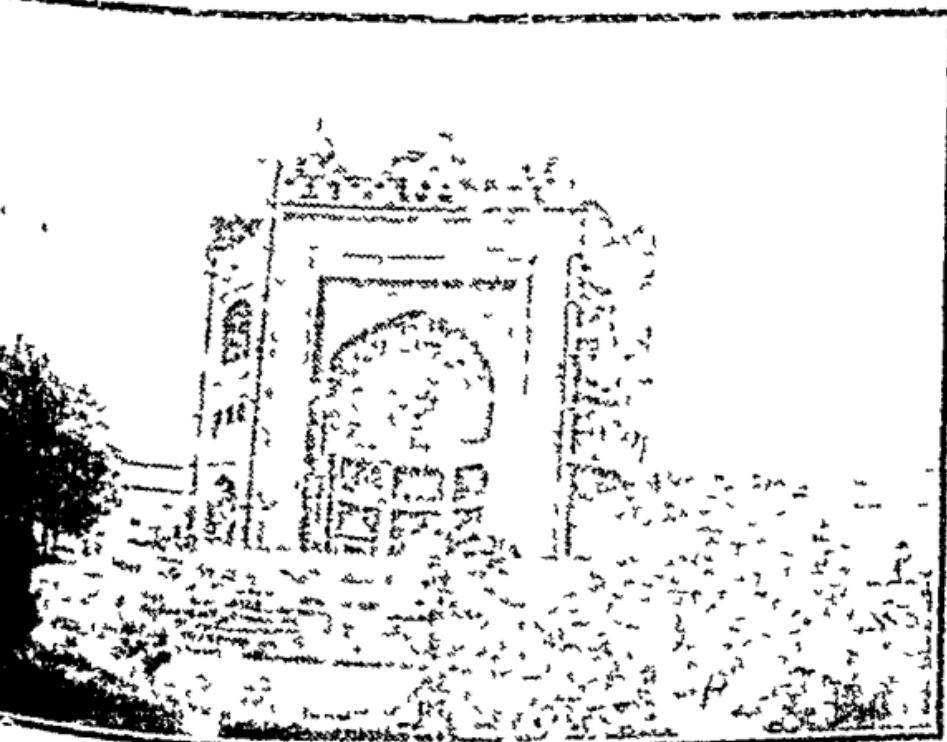
अकबर

फतहपुर सीकरी बुलन्द दरवाजा
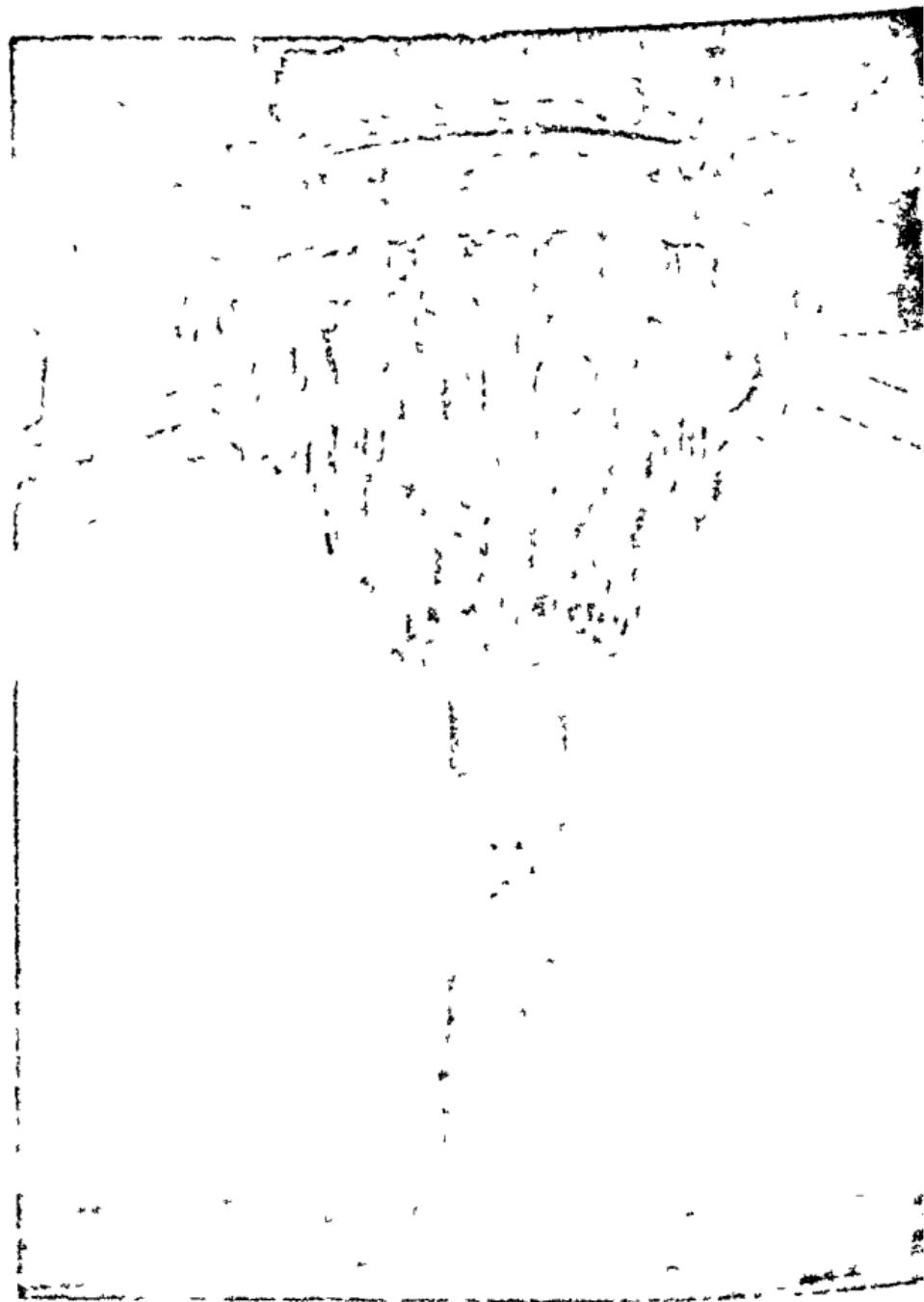
की और दूर देशो में जाकर हिन्दू-मुसलमानों से युद्ध किया और मुगल-राज्य की शान को बढ़ाया।

जयपुर की देखादेखी बीकानेर और जैसलमेर के राजाओ ने भी अकबर से मेल कर लिया। इस मेल का प्रभाव अच्छा पड़ा। सन् १५६३ ई० मे बादशाह ने हुक्म दिया कि हिन्दू यात्रियो से कोई कर न लिया जाय और एक साल बाद उसने जज़िया भी बन्द कर दिया। हिन्दू इस बात से बहुत प्रसन्न हुए और बादशाह की जय मनाने लगे।

राज्य का विस्तार—उत्तरी भारत—अकबर को अपना राज्य बढ़ाने की बड़ी इच्छा थी। राजपूतो में केवल मेवाड़ ऐसा राज्य था जिसने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी। इसलिए सबसे पहले सन् १५६७ ई० में उसने चित्तौर पर चढ़ाई की। राना उदयसिंह डर के मारे चित्तौर को एक वीर राजपूत जयमल को सौंपकर पहाड़ो मे भाग गया।

जयमल बड़ी वीरता से लड़ा परन्तु अकबर की गोली से मारा गया। उसके मरते ही राजपूत-सेना में हलचल मच गई। स्त्रियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर* किया। राजपूत भी तलवारें लेकर भूखे बाघों की तरह मुगलों पर टूट पड़े परन्तु उनकी हार हुई और हज़ारों मारे गये।

उदयसिंह की मृत्यु (सन् १५७२) के बाद उसके बेटे राना प्रताप ने मुगलों का ख़ूब मुक़ाबिला किया। उसने प्रण किया कि कभी दिल्ली

---

*जब राजपूत देखते थे कि शत्रु से बचने का कोई उपाय नहीं है तब वे पहले स्त्रियों को आग मे जला देते थे। अबुल्फज़ल लिखता है कि जौहर में कुल ३०० स्त्रियाँ जलकर मरी थीं।

काबुल
काश्मीर
सिन्ध नदी
लाहौर
मुल्तान
पानीपत
देहली
गङ्गा नदी
आगरा
बनारस
गौड
जोधपुर
जयपुर
अजमेर
इलाहाबाद
अहमदाबाद
अहमदनगर
गोलकुण्डा
बङ्गाल की
भारतवर्ष का
सन् १६०५ ई०
मीलों का स्केल

के बादशाह के सामने सिर न झुकाऊँगा। बादशाह ने राजा मानसिंह को राना पर चढ़ाई करने के लिए भेजा। राजपूत और मुसलमान मिलकर वीर राना को दबाने का प्रयत्न करने लगे। हल्दीघाटी की लड़ाई (सन् १५७६) में राना हार गये और मुग़लों ने कई किले जीत लिये। परन्तु उन्होंने हिम्मत न हारी और अनेक कष्ट उठाने पर भी अपनी स्वतंत्रता के लिए युद्ध करते रहे। थोड़े दिनों में उन्होंने अपने किले फिर जीत लिये और वे उदयपुर में रहने लगे। वीर-शिरोमणि प्रताप का नाम भारत के इतिहास में सदा अजर-अमर रहेगा।

मेवाड़ की चढ़ाई के बाद अकबर ने रणथम्भौर और कालिंजर के किले भी जीत लिये।

राजपूताना को जीतकर अकबर ने गुजरात पर (सन् १५७३) चढ़ाई की। बादशाह खुद गुजरात गया। लड़ाई में उसकी जीत हुई और गुजरात का देश मुग़ल-राज्य में मिला लिया गया।

इसके दो वर्ष बाद (सन् १५७५) अकबर ने बिहार और बङ्गाल को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। अफ़ग़ान उड़ीसा की तरफ़ चले गये और वहाँ से लड़ने लगे। सन् १५९२ ई० में मानसिंह ने उनको दबाया और उड़ीसा मुग़ल-राज्य में मिला लिया गया।

पश्चिमोत्तर प्रदेश की जीत—पश्चिमोत्तर प्रदेश की तरफ़ अकबर ने विशेष ध्यान दिया। इसका कारण यह था कि उसे मध्य-एशिया के देशों से सदा डर था। अपने भाई मिर्ज़ा हकीम के मरने पर (सन् १५८५) उसने अफ़ग़ानिस्तान को अपने राज्य में मिला लिया। सन् १५८६ से १५९५ ई० तक बराबर उधर से लड़ाई होती रही।

काबुल
काश्मीर
सिन्धु नदी
लाहौर
मुल्तान
पानीपत
देहली
आगरा
गङ्गा नदी
लखनऊ
जोधपुर
जयपुर
अजमेर
जमुना न
बेनारस
गौड़
इलाहाबाद
अहमदाबाद
नर्मदा न
ताप्ती न
अहमदनगर
गोलकुण्डा
कृष्णा न
गोआ
बङ्गाल की खाडी
कावेरी न
भारतवर्ष का
सन् १६०५ ई०
मीलों का स्केल
० ५० १०० २०० ३०० ४००

सलीम ने उसे मरवा डाला। बादशाह को बड़ा रंज हुआ और दो दिन तक उसने न कुछ खाया न उसे नींद आई। सलीम को सज़ा देने के लिए वह इलाहाबाद की ओर चला परन्तु रास्ते मे अपनी माँ की बीमारी की खबर सुनकर लौट आया। सलीम भी आगरे की तरफ आया और उसने क्षमा माँगी। बादशाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे अपना वारिस बनाया।

अकबर की मृत्यु—अकबर के मित्र अबुलफज़्ल, टोडरमल, बीरबल पहले ही मर चुके थे। इसलिए उसका चित्त दुःखी रहता था। सन् १६०५ ई० मे ६३ वर्ष की अवस्था मे संग्रहणी की बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। आगरे के पास सिकन्दरे के रौज़े मे उसकी लाश दफ़न की गई।

अकबर का चरित्र—अकबर हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर मनुष्य था। वह ५ फ़ुट ६ इंच लम्बा था। उसका रंग गेहुँआ और आवाज़ बुलन्द थी। चाल-ढाल से वह बादशाह मालूम होता था। उसमे बडा शारीरिक बल था। घोड़े की सवारी उसे बहुत प्रिय थी। वह कोसों घोडे पर चढ़ा चला जाता था। जानवरों की लड़ाई देखने का उसे बडा शौक था और शिकार से भी प्रेम था। युद्ध छिड़ने पर वह कभी पीछे नहीं हटता था और बन्दूक चलाने में बड़ा प्रवीण था। बुद्धिमान् ऐसा था कि बड़े-बड़े पेचीदा मामलों को शीघ्र समझ जाता था। उसका स्वभाव नरम था। उसे घमंड छू तक नहीं गया था। छोटे बड़े सबका वह समान आदर करता था।

लड़कपन मे उसे बहुत कम शिक्षा मिली थी। परन्तु ज्ञान प्राप्त करने की उसका ऐसी प्रबल इच्छा थी कि कभी-कभी तो वह सारी

रात शास्त्रार्थ सुनने में बिता देता था। वह धर्म-शास्त्र, इतिहास और साहित्य के ग्रन्थों को पढ़वाकर सुनता था। उसके दर्बार में अनेक विद्वान और गुणी पुरुष रहते थे। फ़ैज़ी अपनी कविता लिखकर बादशाह को सुनाता था और बीरबल अपने चुटकुलों से उसका मनोविनोद करता था। गान-विद्या और चित्रकारी का भी उसे शौक़ था।

वह प्रजा के हित का ध्यान रखता था। उसकी दृष्टि में हिन्दू-मुसलमान सब बराबर थे। हिन्दुओं को अपना धर्म पालने की उसने पूरी स्वतन्त्रता दे दी थी। वह खुद भी हिन्दू-धर्म की बहुत-सी बातों को मानता था। जिस समय अन्य देशों में लोग धर्म के नाम पर घोर अन्याचार कर रहे थे, अकबर ने इस उत्तम नीति से काम लिया। इसी लिए उसकी गिनती संसार के श्रेष्ठ बादशाहों में की जाती है।

अभ्यास

१—हेमू कौन था? अकबर को उससे क्यों लड़ना पड़ा?
२—बैरमखाँ के बारे में क्या जानते हो?
३—अकबर ने राजपूतों के साथ कैसा बर्ताव किया?
४—उत्तरी भारत में किस तरह अकबर ने अपना राज्य बढ़ाया?
५—दक्षिनापथ प्रदेश को जीतने की अकबर ने क्या ज़रूरत समझी?
६—अकबर के समय में दक्षिण में कौन-कौन राज्य थे?
७—अकबर के चरित्र का वर्णन करो।
८—सलीम से बादशाह क्यों अप्रसन्न था?

अध्याय २५

(२) महान् सम्राट् अकबर

शासन-प्रबन्ध

हिन्दुओं के साथ वर्त्ताव—शेरशाह और अकवर के पहले जो मुसलमान बादशाह हिन्दुस्तान मे हुए उनमें बहुत कम ऐसे थे जिन्होंने हिन्दुओं के साथ उदारता का वर्त्ताव किया हो। हिन्दू-मुसलमान में मेल-जोल भी कम रहता था। उन पर कभी जजिया लगता था कभी उनके मन्दिर तोड़े जाते थे। उन्हें अपना धर्म पालने की भी पूरी आजादी न थी। राज्य मे बड़े-बड़े ओहदे मुसलमानों को ही दिये जाते थे। इन सब कारणों से हिन्दू मुसलमान से प्रायः असन्तुष्ट रहते थ। अकवर ने इस नीति को बिलकुल बदल दिया। उसने जजिया आदि कर बन्द कर दिये और धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी। इतना ही नहीं बादशाह ख़ुद हिन्दू-धर्म की बहुत-सी बातों को मानता था। रक्षाबन्धन, दिवाली, होली आदि त्योहारों में वह शरीक होता था और ब्राह्मणों को दान देता था। उसकी इच्छा थी कि हिन्दू-मुसलमानों में मेल पैदा हो। इसलिए उसने हिन्दुओं को राज्य मे बड़े-बड़े ओहदे दिये और उन पर पूरा विश्वास किया। राजा मानसिंह, टोडरमल, वीरबल का वह उतना ही सम्मान करता था जितना मुसलमान अफसरों का। बादशाह क इस बर्त्ताव से हिन्दू बहुत प्रसन्न हुए और पूरे राजभक्त बन गये।

शासन-प्रबन्ध—अकबर का साम्राज्य १५ सूबों* में विभाजित था। पहले कुल सूबे १२ थे परन्तु दक्षिण की विजय के बाद १५ हो गये थे। प्रत्येक सूबे में एक सिपहसालार अथवा सूबेदार रहता था। उसको पूरा अधिकार दिया जाता था। उसकी मदद के लिए एक दीवान रहता था जो भूमि-कर का प्रबन्ध करता था। इसके अलावा फौजदार, आमिल आदि अफ़सर होते थे। बादशाह की तरफ से हर एक सूबे में 'वाक़अनवीस' नामक अफ़सर रहते थे जो सूबों की बाबत रिपोर्ट लिखकर बादशाह के पास भेजते थे। इनके ज़रिये से उसे सब हाल मालूम हो जाता था। अकबर ने जागीर की प्रथा बन्द कर दी थी। राज्य के अफ़सर मनसबदार कहलाते थे। मनसब शब्द का अर्थ है रुतबा अथवा दर्जा। मनसबदारों के ३३ दर्जे थे। हर एक मनसबदार को सवारों की नियत संख्या रखनी पड़ती थी। १० सवारों से लेकर १० हज़ार सवारों तक के मनसब होते थे। सात हज़ार से दस हज़ार तक के मनसब केवल राज्य-वंश के लोगों को दिये जाते थे। उस ज़माने में माल और सेना-विभाग आज-कल की तरह अलग नहीं थे। प्रत्येक अफ़सर दोनों काम करता था। राजा टोडरमल मालगुज़ारी का भी प्रबन्ध करते थे और सेनापति होकर लड़ाई पर भी जाते थे। मनसबदारों को

---

* राज्य के १५ सूबे निम्नलिखित थे :—

(१) काबुल (५) अवध (९) बिहार
(२) आगरा (६) मालवा (१०) दिल्ली
(३) गुजरात (७) मुलतान (११) अजमेर
(४) लाहौर (८) इलाहाबाद (१२) बंगाल

खानदेश, बरार, अहमदनगर पीछे से शामिल हुए थे।

अक़बर की सभा के नव र

अकबर का मक़बरा (सिकन्दरा)

तनख्वाह नकद दी जाती थी। अदालतो मे काजी और मीरअदल मुकदमों का फैसला करते थे। काजी मुकदमा सुनता था और मीरअदल फैसला सुनाता था। हफ्ते मे एक दिन बादशाह खुद दीवान-आम मे बैठकर लोगो की फरियाद सुनता था। पुलिस का प्रबन्ध भी अच्छा था। शहरो में कोतवाल होते थे। वे ही बाजार की देख-भाल करते थे और बदमाशो की निगरानी रखते थे।

राजा टोडरमल ने भूमि-कर यानी लगान के वसूल करने का अच्छा प्रबन्ध किया था। बङ्गाल, काबुल और दक्षिण मे तो जमीन बड़े बड़े जमींदारो को दे दी गई और उनसे नियत कर वसूल किया गया। परन्तु उत्तरी भारत मे उसने नये सिरे से बन्दोबस्त किया। जमीन की पैमाइश हुई और १० वर्ष की वसूलयाबी की औसत के आधार पर हर तरह की फसल के लिए शरह नियत कर दी गई। यह शरह घट-बढ नहीं सकती थी। पैदावार का सरकार एक तिहाई लेती थी। राज्य के अफसर सीधा किसानो से लगान वसूल करते थे। किसानो को अधिकार था कि वे लगान मे चाहे रुपया दें चाहे अनाज। हाकिम घूस नहीं लेने पाते थे। बादशाह को प्रजा की सुविधा का बड़ा खयाल था। अकाल के समय वह तकावी देता था और जब अनाज के सस्ते हो जाने के कारण किसानो को तकलीफ होती तो लगान मे कमी कर देता था।

सेना का प्रबन्ध करने मे भी अकबर ने मनसबदारी प्रथा से काम लिया. सेना के चार भाग थे—(१) घुड़सवार। (२) पैदल। (३) तोपखाना। (४) हाथी। घुड़सवारो की तरफ बादशाह का अधिक ध्यान रहता था। अधिकांश सिपाही मनसबदारों की पलटन के

होते थे। धोखे से बचने के लिए बादशाह ने घोड़ों को दागने की रीति फिर चलाई थी। नियत समय पर हर एक मनसबदार को अपने घोड़े मुआइने के लिए लाने पड़ते थे। सेना के पास अनेक प्रकार के हथियार थे। बादशाह को हथियारों का बड़ा शौक था। उसने बन्दूक चलाने की नई तरकीब चलाई थी। मनसबदारों के अलावा सेना में अहदी भी थे जिनका वेतन ५०० रुपये तक होता था।

साहित्य और शिल्प-कला की उन्नति—अकबर के समय में साहित्य और शिल्प-कला की अच्छी उन्नति हुई। अबुलफ़ज़ल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "आईनअकबरी" और "अकबरनामा" में अकबर के राज्य का पूरा हाल लिखा है। फ़ैज़ी ऊँचे दर्जे का कवि था। उसकी गज़लें अब तक पढ़ी जाती हैं। बादशाह को संस्कृत-भाषा से भी प्रेम था। इसलिए उसने रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थों का फ़ारसी में अनुवाद कराया। इतिहास की भी कई पुस्तकें इस काल में लिखी गईं। हिन्दी-भाषा को अकबर के दरबार में अच्छा प्रोत्साहन मिला। तुलसीदास के रामचरित-मानस और सूरदास के सूरसागर की इसी समय रचना हुई। बादशाह खुद भी हिन्दी खूब समझता था। कभी कभी वह हिन्दी में कविता भी करता था। उसके दरबारी मानसिंह, टोडरमल, बीरबल हिन्दी-काव्य से प्रेम करते थे। मुसलमानों को भी हिन्दी से प्रेम था। अब्दुर्रहीम खानखाना हिन्दी में कविता करता था। उसके दोहे अब भी बड़े प्रेम से पढ़े जाते हैं।

अकबर को इमारतें बनवाने का बड़ा शौक़ था। उसने फतहपुर सीकरी का शहर बसाया और उसमें बड़े-बड़े महल बनवाये। आगरे में उसने लाल पत्थर का किला और सिकन्दरे का रोजा, दो बड़ी इमारतें बनवाई। बादशाह को चित्रकारी से भी प्रेम था। उसके दर्बार में बड़े-बड़े चित्रकार रहते थे। उनके चित्र संसार भर में बढ़िया समझे जाते थे। संगीत-विद्या की भी उन्नति हुई। तानसेन दर्बार का प्रसिद्ध गायक था।

अभ्यास

१—हिन्दुओं के साथ अकबर ने कैसा वर्त्ताव किया?

२—अकबर के धार्मिक विचार क्या थे? दीनइलाही से तुम क्या समझते हो?

३—अकबर ने सामाजिक सुधार के लिए क्या किया?

४—अकबर के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो।

५—राजा टोडरमल ने मालगुजारी वसूल करने का क्या प्रबन्ध किया था?

६—अकबर के समय के साहित्य और शिल्प-कला की उन्नति का वर्णन करो?

७—अकबर के चरित्र के विषय में क्या जानते हो?

८—अकबर की गिनती भारत के श्रेष्ठ शासकों में क्यों की जाती है?

अध्याय २६

विलासप्रिय जहाँगीर

(सन १६०५-२७)

जहाँगीर का राजगद्दी पर बैठना—अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा बेटा सलीम जहाँगीर के नाम से गद्दी पर बैठा। उसने अपने बाप के अफसरों को बड़े-बड़े ओहदों पर रक्खा, बहुत-से कर माफ कर दिये और प्रजा की भलाई के लिए नये कानून बनाये।

ख़ुसरो की बगावत—अकबर सलीम से अप्रसन्न रहता था। इसलिए उसने सलीम के बेटे खुसरो को राज्य देने का विचार किया था परन्तु समझौता होने के कारण ख़ुसरो की इच्छा पूरी न हुई। जब सलीम बादशाह हुआ तब उसने बगावत की। वह आगरे से चुपचाप भागा और मथुरा होता हुआ लाहौर पहुँच गया। जहाँगीर भी फौज लेकर उसके पीछे चला। लाहौर के पास लड़ाई में ख़ुसरो हार गया और पकड़ा गया। उसके साथियों को बादशाह ने कड़ी सज़ा दी। ख़ुसरो कैदखाने में डाल दिया गया और करीब-करीब अन्धा कर दिया गया। सिक्खों के गुरु अर्जुन ने ख़ुसरो को कुछ मदद दी थी। जब बादशाह को यह खबर मिली तो उसने हुक्म दिया कि गुरु को फाँसी दी जाय। इस अत्याचार का सिक्खों पर बुरा प्रभाव पड़ा। सिक्ख मुगल राज्य के शत्रु हो गये।

जहाँगीर

नूरजहाँ

शाहजहाँ

मुमताज बेगम

ख़ुशामद करने लगे। उसने अपनी एक पार्टी बना ली जिसमें उसका बाप और भाई आसफ़ख़ाँ भी शामिल थे। यह सब होते हुए भी नूरजहाँ एक उदार हृदय और दयावती स्त्री थी। वह दीन-दुखियों की सदा मदद करती थी। उसने बहुत-से ग़रीब मुसलमानों की लड़कियों के विवाह कराये थे।

राजकुमार ख़ुर्रम का विद्रोह—जहाँगीर के चार बेटे थे। ख़ुसरो, पर्वेज़, ख़ुर्रम (शाहजहाँ) और शहरयार। ख़ुर्रम सब में योग्य और बहादुर था। इसलिए जहाँगीर ने उसे अपने जीवन-काल में ही शाहजहाँ की उपाधि दे दी थी। पहले तो नूरजहाँ और ख़ुर्रम से ख़ूब पटती थी परन्तु बाद को उनमें अनबन हो गई। नूरजहाँ शहरयार को चाहती थी क्योंकि उसकी लड़की जो शेर अफ़ग़न से थी उसको ब्याही थी।

सन् १६२२ ई० में फ़ारस के बादशाह ने क़न्दहार को जीत लिया। जहाँगीर ने ख़ुर्रम को क़न्दहार पर चढ़ाई करने के लिए नियुक्त किया। परन्तु इसका उसने उलटा मतलब समझा। उसने समझा कि नूरजहाँ उसे राजगद्दी से वंचित रखने के लिए हिन्दुस्तान से बाहर निकालना चाहती है। ख़ुर्रम ने बग़ावत की। बादशाह ने महाबतख़ाँ को उसे दबाने के लिए भेजा। ख़ुर्रम से कुछ न बनी। वह दक्खिन की तरफ़ भागा। परन्तु जब वहाँ भी मदद न मिली तो तेलंगाना होता हुआ बङ्गाल पहुँचा और लूट-खसोट करता हुआ इलाहाबाद आगया। महाबतख़ाँ ने उसका पीछा न छोड़ा। शाहजहाँ की फ़ौज हार गई और उसे फिर दक्खिन की तरफ़ लौटना पड़ा। इस दौड़-धूप और परेशानी से वह बीमार हो गया।

लाचार होकर उसने सन् १६२५ ई० में बादशाह से माफी माँग ली।

महावतखाँ का विद्रोह—महावतखाँ का प्रभाव बढता देख-कर नूरजहाँ उससे जलने लगी। नूरजहाँ का भाई आसफखाँ उसकी बर्बादी चाहता था। इसी लिए सन् १६२६ ई० मे महावतखाँ को हुक्म मिला कि दर्बार मे हाजिर हो। उस पर रुपया मारने का भी दोष लगाया गया। जिससे वह बहुत नाखुश हुआ। जब महावतखाँ आया, जहाँगीर झेलम नदी के किनारे डेरा डाले हुए पड़ा था। महावत ने शाही डेरे को घेर लिया और बादशाह को कैद कर लिया। नूरजहाँ चुपके से नदी के दूसरे पार निकल गई। वहाँ से उसने बादशाह को छुड़ाने की कोशिश की परन्तु लड़ाई में वह न जीत सकी।

महावतखाँ ने नूरजहाँ को बादशाह के पास जाने की आज्ञा दे दी। नूरजहाँ ने बड़ी चालाकी से जहाँगीर को कैद से छुड़ाया और फिर राज्य का काम करने लगी। महावतखाँ भागकर दक्षिण में शाहजहाँ से जा मिला।

सर टामसरो—जहाँगीर के समय में सन् १६१५ ई० में इंगलैंड के बादशाह जेम्स प्रथम की ओर के एक राजदूत सर टामसरो व्यापार की आज्ञा लेने के लिए हिन्दुस्तान आया। वह यहाँ तीन वर्ष ठहरा। जहाँगीर ने अंगरेजों को मुगल राज्य मे व्यापार करने की आज्ञा दे दी।

सर टामसरो ने अपने रोजनामचे मे जहाँगीर के दर्बार का हाल लिखा है। वह लिखता है कि सब लोग शराब पीते थे। बादशाह

लाचार होकर उसने सन् १६२५ ई० में बादशाह से माफी माँग ली।

महावतखाँ का विद्रोह—महावतखाँ का प्रभाव बढ़ना देखकर नूरजहाँ उससे जलने लगी। नूरजहाँ का भाई आसफखाँ उसकी बर्बादी चाहता था। इसी लिए सन् १६२६ ई० में महावतखाँ को हुक्म मिला कि दर्बार में हाजिर हो। उस पर रुपया मारने का भी दोष लगाया गया। जिससे वह बहुत नाखुश हुआ। जब महावतखाँ आया, जहाँगीर झेलम नदी के किनारे डेरा डाले हुए पड़ा था। महावत ने शाही डेरे को घेर लिया और बादशाह को क़ैद कर लिया। नूरजहाँ चुपके से नदी के दूसरे पार निकल गई। वहाँ से उसने बादशाह को छुड़ाने की कोशिश की परन्तु लड़ाई में वह न जीत सकी।

महावतखाँ ने नूरजहाँ को बादशाह के पास जाने की आज्ञा दे दी। नूरजहाँ ने बड़ी चालाकी से जहाँगीर को क़ैद से छुड़ाया और फिर राज्य का काम करने लगी। महावतखाँ भागकर दक्षिण में शाहजहाँ से जा मिला।

सर टामसरो—जहाँगीर के समय में सन् १६१५ ई० में इंगलैंड के बादशाह जेम्स प्रथम की ओर से एक राजदूत सर टामसरो व्यापार की आज्ञा लेने के लिए हिन्दुस्तान आया। वह यहाँ तीन वर्ष ठहरा। जहाँगीर ने अंगरेजों को मुग़ल-राज्य में व्यापार करने की आज्ञा दे दी।

सर टामसरो ने अपने रोजनामचे में जहाँगीर के दर्बार का हाल लिखा है। वह लिखता है कि सब लोग शराब पीते थे। बादशाह

ख़ुद इतनी पीता था कि पीते-पीते बेहोश होकर सो जाता था। लैम्प बुझा दिये जाते थे और दरबारी नशे में झूलते हुए अपने घरों को चले जाते थे। बादशाह दिन में बिलकुल शराब नहीं पीता था और यदि किसी के मुँह से शराब की बू आती तो उसे कोड़ों से पिटवाता था। राज्य-प्रबन्ध के बारे में वह लिखता है कि बड़े-बड़े हाकिम घूस लेते थे। रास्तों में चोर और डाकुओं का डर था परन्तु दस्तकारी की हालत अच्छी थी। बादशाह यूरोपनिवासियों के साथ अच्छा बर्त्ताव करता था।

जहाँगीर की लड़ाइयाँ—उड़ीसा और बङ्गाल में अफ़ग़ानों को हराकर मुगलों ने फिर अपनी धाक जमा ली। सन १६१४ ई० में मेवाड़ के राना अमरसिंह ने भी बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली। इसके बाद सन् १६२० में काँगड़ा की विजय हुई। कन्दहार मुगलों के हाथ से निकल गया परन्तु दक्षिण में बहुत दिन तक लड़ने के बाद सन् १६२१ ई० में अहमदनगर का अधिकांश भाग मुगल-राज्य में मिला लिया गया। हबशी सर्दार मलिक अम्बर मुगलों के साथ लड़ा परन्तु अन्त में उसकी हार हुई।

जहाँगीर की मृत्यु (सन १६२७)—जहाँगीर का स्वास्थ्य अब बहुत ख़राब हो गया था। उसको श्वास का रोग हो गया। वह काश्मीर गया परन्तु कोई लाभ न हुआ। लौटते समय वह रास्ते में मर गया। उसकी लाश लाहौर लाई गई और वहीं दफ़न की गई।

जहाँगीर का चरित्र—जहाँगीर बुद्धिमान् शासक था। इसने अकबर की उस नीति को जारी रक्खा और धर्म के मामले

मे हिन्दू-मुसलमान सबके साथ एक-सा बर्त्ताव किया। वह पीता था और अफीम भी खाता था परन्तु दिन मे नशीली चीजों छूता भी न था। जहाँगीर को शिक्षा अच्छी मिली थी। वह फारसी खूब लिखता था। उसने अपना जीवन-चरित्र स्वयं फारसी मे लिखा है जिसका नाम तुज़कजहाँगीरी है। इसकी भाषा सुन्दर और भी अनोखे हैं। चित्रकला से उसे बड़ा प्रेम था। वह चित्रों बारीकियों को खूब समझता था। बाबर की तरह वह भी प्रकृति-प्रेमी था। फल-फूल, पहाड़, बर्फ, नदी, झरने, तालाब को देखकर उसका रोम-रोम प्रफुल्लित हो जाता था। जहाँगीर न्याय-प्रिय था और कभी-कभी अपराधियो को भयकर दड देता था। किले के बाहर उसने एक ज़ंजीर लगवा दी थी। जजीर के खीचने से बादशाह के कमरे मे घटी बज जाती थी जिससे उसे मालूम हो जाता था कि कोई आदमी फरियाद करना चाहता है।

अभ्यास

१—खुसरो के विद्रोह का क्या कारण था?
२—नूरजहाँ का चरित्र सक्षेप से लिखो।
३—खुर्रम ने क्यो विद्रोह किया? कारण बताओ।
४—महाबतखाँ कौन था? उसने क्यो विद्रोह किया?
५—सर टामसरो कौन था और कब हिन्दुस्तान में आया? उसने हिन्दुस्तान के बारे मे क्या लिखा है?
६—जहाँगीर के समय मे मुगल-राज्य का विस्तार कितना बड़ा?
७—जहाँगीर के चरित्र का वर्णन करो।

अध्याय २७

मुग़ल-साम्राज्य की शान-शौकत

शाहजहाँ (सन १६२८-५८ ई० तक)

शाहजहाँ का बादशाह होना—जिस समय जहाँगीर की मृत्यु हुई शाहजहाँ दक्षिण में था। जब तक वह आया उसके ससुर आसफ़ख़ाँ ने दूसरों के एक बेटे को गद्दी पर बिठा दिया और शहरयार को क़ैद कर उसकी आँखें निकलवा डालीं। शाहजहाँ शीघ्र दक्षिण से आया और उसने एक-एक कर अपने वंश के शाहज़ादों को मरवा डाला। बड़ी धूम-धाम के साथ वह गद्दी पर बैठा और आसफ़ख़ाँ को उसने अपना मंत्री बनाया। नूरजहाँ राज्य के काम से अलग कर दी गई और उसकी पेंशन नियत हो गई।

राज-विद्रोह—गद्दी पर बैठने के थोड़े दिन बाद बुन्देलखंड में ओरछा के राजा ने विद्रोह किया परन्तु मुग़ल सेना ने उसे दबा दिया। इसके बाद ख़ानजहाँ लोदी ने बग़ावत की। वह चुपचाप एक दिन शाही दरबार से भाग गया और दक्षिण को चल दिया। बादशाह ने महाबतख़ाँ को फ़ौज देकर उसके पीछे भेजा। ख़ानजहाँ हार गया और मार डाला गया।

सन १६३१ ई० में पुर्तगालियों का उपद्रव हुआ। कुछ पुर्तगाली व्यापारी हुगली में आ बसे थे और अनाथ हिन्दू-मुसलमान बच्चों को ईसाई बना लेते थे। एक बार उन्होंने शाहजहाँ की बेगम

मुमताजमहल की दो लौंडियाँ पकड़ लीं। इस पर बादशाह बहुत अप्रसन्न हुआ। उसने बङ्गाल के सूबेदार को हुक्म दिया की पुर्तगालियों की कोठी का नाश कर दो। कई हजार पुर्तगाली मारे गये और कई हजार पकड़े गये। उनके साथ बड़ी निर्दयता का बर्त्ताव किया गया।

अकाल—सन् १६३० १६३२ ई० मे गुजरात और दक्षिण भयंकर अकाल पड़ा। लोग भूख मरने लगे। सड़कें लाशों से ढक गई, अकाल और प्लेग से लाखों आदमी मर गये। सूरत में ऐसा भयंकर प्लेग फैला कि २१ में से १७ अँगरेज व्यापारी मर गये। बादशाह ने गरीबों को भोजन बँटवाया और लगान माफ़ कर दिया।

मुमताजमहल—शाहजहाँ का विवाह २१ वर्ष की अवस्था में आसफ़खाँ की बेटी अर्जुमन्दबानू बेगम के साथ हुआ था। इस बेगम को बाद मे मुमताजमहल की पदवी मिली। शाहजहाँ उससे बड़ा प्रेम करता था। सन् १६३१ ई० मे बेगम बच्चा पैदा होते समय दक्षिण में मर गई। मरते समय उसने बादशाह से प्रार्थना की कि मेरा स्मारक ऐसा बनाना जिससे मेरा नाम अमर हो जाय। बादशाह ने जमुना के किनारे पर एक रौज़ा बनवाया जो ताज के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बनने में २२ वर्ष लगे और लगभग ३ करोड़ रुपया खर्च हुआ।

ताज संसार की अद्भुत इमारतों में से है। देखने में ऐसा मालूम होता है कि मानो आज ही बना है। इसकी नक़्क़ाशी और पत्थरों की खुदाई को देखकर बड़े बड़े कारीगर चकित रह जाते हैं।

शाहजहाँ की दूसरी इमारतें—शाहजहाँ को इमारत बनवाने का बड़ा शौक़ था। आगरे के क़िले का मोतीमस्जिद, दिल्ली

का किला, इस किले के दीवान-आम, दीवान-ख़ास; आज तक उसकी शान-शौकत की गवाही दे रहे हैं। दिल्ली का नया शहर शाहजहानाबाद उसी ने बसाया। दिल्ली में उसने जाममसजिद नाम की एक बड़ी मसजिद बनवाई जिसमें आज भी हज़ारों मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

शाहजहाँ का ठाटबाट—शाहजहाँ बड़े ठाट से रहता था। उसने बहुत-सा रुपया जमा किया और बहुमूल्य जवाहिरात ख़रीदे। उसने अपने बैठने के लिए 'तख़्तताऊस' बनवाया जिसकी शक्ल मोर की-सी थी। वह सात वर्ष में तैयार हुआ और उसमें एक करोड़ रुपया ख़र्च हुआ। जब नादिरशाह ने दिल्ली पर हमला किया तब वह इस तख़्त को फ़ारस ले गया।

शाहजहाँ ने लाहौर, काश्मीर, दिल्ली, आगरा में बहुत-से बग़ीचे लगवाये। लाहौर के शालामार नामक बाग़ उसी के समय के बने हुए हैं।

दक्षिण की लड़ाई—जहाँगीर की तरह शाहजहाँ भी दक्षिन के राज्यों को जीतना चाहता था। सन् १६३२ ई० में अहमदनगर-राज्य मुग़ल-साम्राज्य में मिला लिया गया। अब बीजापुर और गोलकुण्डा रह गये। गोलकुण्डा ने शाहजहाँ की अधीनता स्वीकार कर ली। परन्तु बीजापुर ने लड़ाई की तैयारी की। मुग़ल-सेना ने देश को बर्बाद कर दिया। अन्त में उसे भी हार माननी पड़ी। शाहजहाँ ने अपने बेटे औरङ्गज़ेब को (सन् १६३६) दक्षिन का सूबेदार नियत किया।

२० वर्ष बाद फिर औरङ्गज़ेब ने दक्षिन पर चढ़ाई की।

गोलकुण्डा के साथ सन्धि हो गई। बीजापुर मे भी यही हाल हुआ। औरंगज़ेब बीजापुर को जीतने ही को था कि उसे (सन् १६५७) हुक्म मिला कि लड़ाइ बन्द कर दी जाय।

पश्चिमोत्तर देश—अकबर और जहाँगीर की तरह शाहजहाँ ने भी पश्चिमोत्तर प्रान्त की तरफ़ ध्यान दिया। मध्य एशिया के देशो को जीतने की मुग़लो को इच्छा रहती थी क्योंकि उनके पुरखे वहाँ राज्य कर चुके थे। पहले कह चुके है कि फ़ारस के शाह ने कन्दहार को (सन् १६२२) छीन लिया था और वहाँ अपना सूबेदार रख दिया था। इस सूबेदार को लालच देकर शाहजहाँ ने कन्दहार ले लिया। फ़ारस के शाह ने फिर चढ़ाई की और उसे जीत लिया।

बल्ख़ और बदख़्शाँ को भी फौज भेजी गई परन्तु वहाँ भी यही हाल रहा। दो-तीन वर्ष तक मुग़लो ने बड़ी कोशिश की परन्तु कुछ भी नतीजा न निकला। करोड़ो रुपया ख़र्च हो गया और इस हार से मुग़लों की शान मे बट्टा लग गया।

शासन-प्रबन्ध—शाहजहाँ की शासन-पद्धति अकबर और जहाँगीर की-सी थी। मनसब और जागीर की प्रथा अभी तक चली आती थी। राज्य की आमदनी बहुत बढ़ गई थी। अमीरो और सर्दारो के मरने के बाद उनकी सारी दौलत राज्य मे चली जाती थी, इसलिए शाही ख़ज़ाने मे रुपया ख़ूब बढ़ गया था। बादशाह का मन्त्री सादुल्लाख़ाँ बड़ा बुद्धिमान, अनुभवी और परिश्रमशील अफ़सर था। कहते हैं कि एक बार सादुल्लाख़ाँ ने किसी गाँव की मालगुज़ारी बढ़ा दी। जब बादशाह ने पूछा कि यह मालगुज़ारी कैसे बढ़ा दी उसने उत्तर दिया कि नदी के हट जाने से कुछ ज़मीन ख़ाली

हो गई थी उसके कारण आराज़ी बढ़ गई है। बादशाह अप्रसन्न हुआ और उसने कहा कि वहाँ के दीन-अनाथों और विधवाओं के शाप से नदी का पानी हट गया है। यदि मनुष्य का क़त्ल करना बुरा न होता तो मैं उस फ़ौजदार को मरवा देता जिसने इस ज़मीन से लगान वसूल किया है। बादशाह ने सादुल्लाख़ाँ को हुक्म दिया कि जो रुपया वसूल हुआ है वह शीघ्र वापस कर दिया जाय। यह कहानी सच हो या ग़लत, इतना अवश्य मानना पड़ेगा कि शाहजहाँ को प्रजा के सुख-दुख का सदा ध्यान रहता था।

यूरोप के यात्री लिखते हैं कि बादशाह प्रजा से प्रेम करता था और अन्याचारी हाकिमों को कड़ी सज़ा देता था। पुलिस का प्रबन्ध भी अच्छा था।

व्यापारी और दस्तकार लोग उन्नत दशा में थे। सहस्रों मनुष्य राज्य के कारख़ानों में काम करते थे और बढ़िया चीज़ें बनाते थे। सेना की संख्या शाहजहाँ के समय में बहुत बढ़ गई थी और युद्ध की सामग्री भी बहुत-सी इकट्ठी की गई थी जैसा कि उसके युद्धों से प्रकट होता है।

राजगद्दी के लिए युद्ध—शाहजहाँ के चार बेटे थे और दो बेटियाँ—बेटों के नाम थे—दारा, शुजा, औरंगज़ेब, मुराद। बेटियों के नाम थे—जहाँआरा और रोशनआरा। दारा सूफ़ी था। इसमें मज़हबी पक्षपात बिलकुल न था। शाहजहाँ इससे प्रेम करता था और इसी को इसने अपना युवराज बनाया था। शुजा वीर था परन्तु अपना समय अय्याशी में नष्ट करता था। औरंगज़ेब बड़ा बहादुर, चालाक और मज़हब का पाबन्द था। मुराद सूरमा था और

शराब पीता था। बादशाह ने चारों बेटों को बडी बडी जागीरें दे दी थीं। परन्तु दारा दिल्ली मे उसके पास ही रहता था। दारा और औरंगज़ेब में बड़ी शत्रुता थी। सन् १६५७ इ० मे शाहजहाँ बीमार पड़ा। बीमारी की हालत मे उसने राज्य का काम दारा को सौंप दिया। दारा ने बीमारी की खबर छिपानी चाही। इससे भाइयों को संदेह हुआ और उन्होंने समझा कि बादशाह मर गया और दारा सारे राज्य को ख़ुद हड़पना चाहता है। मुराद ने गुजरात में और शुजा ने बंगाल मे बग़ावत की और बादशाह बन बैठे। औरंगज़ेब दक्षिण मे था। वह भी ख़बर पाकर उत्तर की तरफ चल दिया।

औरंगज़ेब ने मुराद से मेल कर लिया और कहा कि मैं जीत होने पर तुम्हें पंजाब, सिन्ध, काश्मीर और काबुल का राज्य दे दूंगा। मुराद इस दमपट्टी मे आगया। दोनों अपनी फौजें लेकर उत्तर की तरफ़ चले। दारा ने राजा जसवंतसिंह को उनका मुकाबिला करने के लिए भेजा। उज्जैन के पास लड़ाई हुई जिसमे राजा हार गया। उज्जैन से दोनों भाइ चम्बल को पार कर आगरे के पास आ पहुँचे। सामूगढ़* के मैदान में दारा से लड़ाई हुई। दारा पंजाब की तरफ़ भाग गया। औरंगज़ेब ने आगरे पर कब्ज़ा कर लिया और शाहजहाँ को वहीं किले मे कैद कर लिया।

---

*प्रोफेसर जदुनाथ सरकार अपने इतिहास में लिखते हैं कि समोगर आगरे से ९ मील पर एक गाँव है। बर्नियर का लेख है कि सामूगढ़ फतहाबाद ही है जो आगरे से २१ मील पर है। कहते हैं यहाँ औरंगज़ेब ने एक सराय और एक मसजिद बनाई थी और एक बाग़ लगाया था जो अब तक मौजूद है।

जब औरङ्गजेब दारा का पीछा करता हुआ दिल्ली जा रहा था, तब मुराद की तरफ से उसे शक हुआ। मथुरा के पास अपने डेरे में उसने मुराद की दावत की और जब वह नशे में बेहोश हो गया तब उसे क़ैद कर लिया। दारा बेचारा इधर-उधर भटकता फिरा परन्तु कहीं मदद न मिली। थोड़ी-सी फ़ौज लेकर उसने फिर अजमेर के पास औरङ्गजेब का मुक़ाबिला किया परन्तु वह हार गया। भागकर उसने सिन्ध में एक बिलूची सर्दार के यहाँ शरण ली। परन्तु इस दुष्ट ने उसे औरङ्गजेब के हवाले कर दिया।

औरङ्गजेब ने उसे फटे-पुराने कपड़े पहनाकर मैले-कुचैले हाथी पर बिठाकर दिल्ली के बाज़ारों में फिराया और फिर क़त्ल करा दिया। मुराद ग्वालियर के क़िले में क़ैद हो गया और वहीं मार डाला गया। शुजा अराकान की तरफ भाग गया और नहीं मालूम फिर उसका क्या हुआ।

औरङ्गजेब अब बादशाह हो गया। शाहजहाँ आठ वर्ष तक आगरे के क़िले में क़ैद रहा। उसकी बड़ी लड़की जहाँआरा उसकी सेवा-सुश्रूषा करती रही। सन १६६६ ई० में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई।

शाहजहाँ का चरित्र—शाहजहाँ बड़ा वीर, बुद्धिमान और न्यायप्रिय बादशाह था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थी, चोर कम होते थे लोग चैन से रहते थे। हफ्ते में एक दिन वह दरबार-आम में सबकी फरियाद सुनता था। वह अपनी प्रजा को अपने बेटों की तरह प्यार करता था और दीन-दुखियों का हमेशा ध्यान रखता था। यूरप के यात्री जो उसके समय में हिन्दुस्तान आये उसके इन्साफ, दौलत और शान-शौकत की प्रशंसा करते हैं। शाहजहाँ के राज्य

अध्याय २८

मुग़ल-साम्राज्य की अवनति

औरंगज़ेब (सन् १६५८-१७०७ ई० तक)

औरंगज़ेब का राजसिंहासन पर बैठना—५ जून १६५९ ई० को औरंगज़ेब राजसिंहासन पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही उसने बहुत से कर बन्द कर दिये। गाना-बजाना और झरोखे में से दर्शन देना भी बन्द कर दिया। वह सुन्नी मुसलमानों की मदद से बादशाह हुआ था। इसलिए उनको प्रसन्न करने के लिए उसने लोगों को क़ुरान के नियमों पर चलने की ताकीद की।

चरित्र—औरंगज़ेब एक वीर, चतुर, सुशिक्षित बादशाह था। वह अपने धर्म का पक्का, सदाचारी और कर्त्तव्यदृढ था। वह क़ुरान के नियमों पर चलता था और अपना अधिकांश समय ईश्वर का नाम लेने में बिताता था। शुक्र के दिन वह रोज़ा रखता और जामामसजिद में नमाज पढ़ता था और कभी-कभी तमाम रात जाग कर भजन किया करता था। उसका जीवन सादा था। भोग-विलास, नाच-रंग, खेल-तमाशों से वह घृणा करता था और राज्य के रुपये को अपने आराम के लिए नहीं खर्च करता था। वह दूसरे बादशाहों की तरह न जेवर पहनता था न जवाहरात। वह अपने हाथ से टोपियों के पल्ले काढ़कर या क़ुरानशरीफ़ की नक़ल कर अपना निजी ख़र्च चलाता था। उसके दर्बार में न तो कोई चुगली खा सकता था

भारतवर्ष सन् १७००
बम्बई यूरोपीय बस्तियाँ
अ र ब
सा ग र
बंगाल की खाड़ी

अध्याय २८

मुग़ल-साम्राज्य की अवनति

औरंगज़ेब (सन् १६५८-१७०७ ई० तक)

औरंगज़ेब का राजसिंहासन पर बैठना—५ जून १६५९ ई० को औरंगजेब राजसिंहासन पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही उसने बहुत-से कर बन्द कर दिये। गाना-बजाना और झरोखे में से दर्शन देना भी बन्द कर दिया। वह सुन्नी मुसलमानों की मदद से बादशाह हुआ था। इसलिए उनको प्रसन्न करने के लिए उसने लोगों को क़ुरान के नियमों पर चलने की ताकीद की।

चरित्र—औरंगजेब एक वीर, चतुर, सुशिक्षित बादशाह था। वह अपने धर्म का पक्का, सदाचारी और कर्त्तव्यदृढ था। वह क़ुरान के नियमों पर चलता था और अपना अधिकांश समय ईश्वर का नाम लेने में बिताता था। शुक्र के दिन वह रोजा रखता और जामामसजिद में नमाज पढ़ता था और कभी-कभी तमाम रात जाग कर भजन किया करता था। उसका जीवन सादा था। भोग विलास, नाच-रंग, खेल-तमाशों से वह घृणा करता था और राज्य के रुपये को अपने आराम के लिए नहीं खर्च करता था। वह दूसरे बादशाहों की तरह न जेवर पहनता था न जवाहरात। वह अपने हाथ से टोपियों के पल्ले काढ़कर या क़ुरानशरीफ की नकल कर अपना निजी खर्च चलाता था। उसके दर्बार में न तो कोई चुगली खा सकता था

और न झूठ बोल सकता था। वह सबकी फ़रियाद सुनता था और इन्साफ़ करता था।

राज्य का काम वह बड़े परिश्रम से करता था। कठिन से कठिन आपत्ति आने पर भी वह धैर्य और गम्भीरता से काम लेता था। राजनीति के दाँव-पेच वह खूब समझता था और जिस काम में हाथ लगाता था उसे पूरा किये बिना न छोड़ता था। उसका आदर्श ऊँचा था। वह कहा करता था कि प्रजा का हित करना बादशाहों का मुख्य कर्तव्य है। ये सब गुण होते हुए भी औरंगज़ेब बिलकुल दोषरहित न था। वह इस्लाम के सिवा किसी धर्म को आदर की दृष्टि से नहीं देख सकता था। उसके हृदय में प्रेम नहीं था। उसके बेटे भी उससे डरते थे। कहते हैं एक तो उसका पत्र पाते ही डर के मारे पीला पड़ जाता था। वह किसी का विश्वास नहीं करता था। राज्य के चारों तरफ़ जासूस लगे हुए थे जो बादशाह को हर तरह की ख़बर देते थे। इन्हीं कारणों से मित्र शत्रु हो गये और राज्य में उपद्रव पैदा होने लगे।

मराठों के साथ युद्ध—औरंगज़ेब ने मराठों को भी तंग किया। मराठे महाराष्ट्र के रहनेवाले थे। यह देश दक्षिणी पठार के पश्चिम में है जहाँ आजकल बम्बई का सूबा है। मराठे बड़े परिश्रमी, लड़ने-भिड़नेवाले और साहसी थे। १५वीं शताब्दी में महाराष्ट्र देश में एकता का भाव धर्म की ओर से फैला। साधु-महात्माओं ने अपने उपदेश-द्वारा मराठा जाति में एक नई जान फूँकी। राजकीय मामलों का अनुभव भी उनको था ही क्योंकि उनमें बहुत से सरदार बीजापुर, अहमदनगर रियासत में बड़े-बड़े ओहदों पर थे। इस ही समय में शाहजी

सूरत
सतपुड़ा पर्वत
ताप्ती न०
अहमदनगर
औरङ्गाबाद
जुनीर
गोदावरी न०
पूना
रायगढ़
सतारा
गोलकुण्डा
रत्नागिरि
कोलापुर
बीजापुर
कोपल
गोआ
बिलारी
सीरा
यलापुर
बँगलौर
वेलौर
अर्नी
जिंजी
तंजौर
त्रिचनापल्ली
सागर
बंगाल की खाड़ी
शिवाजी का राज्य
सन् १६८० ई०

नाराज होकर शायस्ता को बङ्गाल का सूबेदार बनाकर भेज दिया। सन् १६६४ ई० में शिवाजी ने सूरत नगर को लूटा और अँगरेज कोठीवालों से रुपया वसूल किया। अब औरंगजेब ने राजा जयसिंह को शिवाजी से लड़ने के लिए भेजा। राजा जयसिंह ने समझा-बुझाकर शिवाजी को आगरे जाने के लिए राजी किया। जब वह दरबार में पहुँचा तब सलाम के बाद बादशाह ने उसे तीसरे दर्जे के अमीरों में खड़ा करा दिया। इस अपमान से वह बड़ा क्रोधित हुआ। औरंगजेब ने उसके डेरे पर पहरा बिठा दिया। परन्तु चालाकी से वह अपने बेटे शम्भूजी के साथ निकल गया और मुगल देखते रह गये।

लड़ाई फिर छिड़ गई परन्तु राजा जयसिंह के देहान्त (सन् १६६७) के बाद शिवाजी ने मुगलों से सुलह कर ली। यह सुलह अधिक दिन तक न रही और मराठे फिर लूट-मार करने लगे।

सन् १६७४ ई० में शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और बड़ी धूमधाम से अपना राज्याभिषेक किया। सूरत को उसने फिर एक बार लूटा और खानदेश पर चढ़ाई की। वेलौर और जिंजी के किले भी उसने जीत लिये और दूर तक अपना राज्य बढ़ा लिया। सन् १६८० ई० में ५३ वर्ष की अवस्था में शिवाजी का स्वर्गवास हो गया।

शिवाजी का चरित्र—शिवाजी बड़ा वीर पुरुष था। उसने अपनी वीरता से ही राज-पद प्राप्त किया था। हिन्दू-धर्म में उसकी बड़ी श्रद्धा थी। वह ब्राह्मणों का आदर करता था। स्वामी रामदास [illegible] उसके गुरु थे। उन्हीं की आज्ञा से वह प्रत्येक काम करता था। हिन्दू-धर्म का कट्टर पक्षपाती होने पर भी वह दूसरे

सूरत
सतपुड़ा पर्वत
अहमदनगर
औरङ्गाबाद
जुनीर
पूना
रायगढ़
सतारा
गोलकुण्डा
बीजापुर
कोलापुर
कोपल
गोआ
बिलारी
सीरा
बलापुर
वेलोर
बँगलौर
जिंजी
तञ्जौर
त्रिचनापल्ली
बंगाल की खाड़ी
शिवाजी का राज्य
सन् १६८० ई०

नाराज होकर शायस्ता को बङ्गाल का सूबेदार बनाकर भेज दिया। सन् १६६४ ई० में शिवाजी ने सूरत नगर को लूटा और अँगरेज कोठीवालों से रुपया वसूल किया। अब औरंगजेब ने राजा जयसिंह को शिवाजी से लड़ने के लिए भेजा। राजा जयसिंह ने समझा-बुझाकर शिवाजी को आगरे जाने के लिए राजी किया। जब वह दरबार में पहुँचा तब सलाम के बाद बादशाह ने उसे तीसरे दर्जे के अमीरों में खड़ा करा दिया। इस अपमान से वह बड़ा क्रोधित हुआ। औरंगजेब ने उसके डेरे पर पहरा बिठा दिया। परन्तु चालाकी से वह अपने बेटे शम्भूजी के साथ निकल गया और मुगल देखते रह गये।

लड़ाई फिर छिड़ गई परन्तु राजा जयसिंह के देहान्त (सन् १६६७) के बाद शिवाजी ने मुगलों से सुलह कर ली। यह सुलह अधिक दिन तक न रही और मराठे फिर लूट-मार करने लगे।

सन् १६७४ ई० में शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और बड़ी धूमधाम से अपना राज्याभिषेक किया। सूरत को उसने फिर एक बार लूटा और खानदेश पर चढ़ाई की। वेलोर और जिंजी के किले भी उसने जीत लिये और दूर तक अपना राज्य बढ़ा लिया। सन् १६८० ई० में ५३ वर्ष की अवस्था में शिवाजी का स्वर्गवास हो गया।

शिवाजी का चरित्र—शिवाजी बड़ा वीर पुरुष था। उसने अपनी बाल्या में ही राज-पद प्राप्त किया था। हिन्दू-धर्म में उसकी बड़ी श्रद्धा थी। वह साधु-महात्माओं का आदर करता था। [illegible] रामदास उसके गुरु थे। उन्हीं की [illegible] से वह ऐसा [illegible] था। हिन्दुस्तान के बहुत [illegible] होते हुए भी वह दूसरे

(२) जहाँगीर

(३) नूरजहाँ और जहाँगीर

(६) मुहम्मदशाह

(५) औरङ्गजेब

(१) अकबर

(४) शाहजहाँ

उनकी जगह मसजिदे बनाई गई। हिन्दू माल के महकमे से बर्खास्त कर दिये गये। सन् १६७५ ई० मे औरंगजेब ने सिक्खो के गुरु तेगबहादुर को मरवा डाला। इस पर वे आगबबूला हो गये और खुल्लम-खुल्ला बादशाह का विरोध करने लगे। तेगबहादुर के बेटे गुरु गोविन्दसिंह ने मुगलो के नाश का बीड़ा उठाया। चार वर्ष बाद सन् १६७९ ई० मे हिन्दुओ पर फिर से जजिया लगाया गया। इस नीति से वे नाराज हो गये। उनकी श्रद्धा मुगल-राज्य से हट गई। मराठे, राजपूत, जाट, सिक्ख सब मुगलो के साथ लड़ने की तैयारी करने लगे।

राजपूतों के साथ विद्रोह (सन् १६८०-८१)—राजपूत अकबर के समय से मुगलो का साथ देते आये थे। परन्तु औरंगजेब की धार्मिक नीति से वे नाराज हो गये। इसके अलावा एक और भी कारण था। राजा जसवन्तसिंह के काबुल मे मर जाने के बाद जब उसके बेटे लौटे तब बादशाह ने उन्हे दिल्ली मे रोक लिया और मुसलमानी ढङ्ग से रखना चाहा। इस पर राजपूत बिगड़ गये। उदयपुर और जोधपुर मिल गये। केवल जयपुर बादशाह के साथ रहा। औरंगजेब का बेटा अकबर एक बड़ी फौज लेकर अजमेर पहुँचा परन्तु राजपूतों ने उसे राज्य का लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया। जब बादशाह को यह खबर मिली तो उसने एक चाल चली। उसने अकबर को एक चिट्ठी लिखी कि शाबाश बेटे! तुमने राजपूतो को खूब बहकाया। यह चिट्ठी राजपूतो के हाथ में पहुँचा दी गई। उन्होंने फौरन अकबर का साथ छोड़ दिया। अकबर भागा। फारस को चला गया और फिर कभी हिन्दुस्तान मे न आया। मुगल-सेना ने

गांधी

श्रीअरविंद

उनकी जगह मसजिदें बनाई गईं। हिन्दू माल के महकमें से अलग कर दिये गये। सन् १६७५ ई० में औरंगज़ेब ने सिक्खों के गुरु तेगबहादुर को मरवा डाला। इस पर वे आगबबूला हो गये और खुल्लम-खुल्ला बादशाह का विरोध करने लगे। तेगबहादुर के बेटे गुरु गोविन्दसिंह ने मुगलों के नाश का बीड़ा उठाया। चार वर्ष बाद सन् १६७९ ई० में हिन्दुओं पर फिर से जज़िया लगाया गया। इस नीति से वे नाराज़ हो गये। उनकी श्रद्धा मुगल-राज्य से हट गई। मराठे, राजपूत, जाट, सिक्ख सब मुगलों के साथ लड़ने की तैयारी करने लगे।

राजपूतों के साथ विद्रोह (सन् १६८०-८१)—राजपूत अकबर के समय से मुगलों का साथ देते आये थे। परन्तु औरंगज़ेब की धार्मिक नीति से वे नाराज़ हो गये। इसके अलावा एक और भी कारण था। राजा जसवन्तसिंह के काबुल में मर जाने के बाद जब उसके बेटे लौटे तब बादशाह ने उन्हें दिल्ली में रोक लिया और मुसलमानी ढङ्ग से रखना चाहा। इस पर राजपूत बिगड़ गये। उदयपुर और जोधपुर मिल गये। केवल जयपुर बादशाह के साथ रहा। औरंगज़ेब का बेटा अकबर एक बड़ी फ़ौज लेकर अजमेर पहुँचा परन्तु राजपूतों ने उसे राज्य का लालच देकर अपनी तरफ़ मिला लिया। जब बादशाह को यह ख़बर मिली तो उसने एक चाल चली। उसने अकबर को एक चिट्ठी लिखी कि शाबाश बेटे! तुमने राजपूतों को ख़ूब बहकाया। यह चिट्ठी राजपूतों के हाथ में पहुँचा दी गई। उन्होंने फ़ौरन अकबर का साथ छोड़ दिया। अकबर बेचारा फ़ारस को चला गया और फिर कभी हिन्दुस्तान में न आया। मुग़ल-सेना ने

राजपूत विद्रोह को दबा दिया। बादशाह ने जसवन्तसिंह के बेटे को जोधपुर का राजा स्वीकार कर लिया। इस विद्रोह का बुरा नतीजा हुआ। जिन राजपूतों ने मुगल-साम्राज्य के लिए अपना खून बहाया था, उनके दिल को गहरी चोट लगी। वे साम्राज्य के शत्रु हो गये और बादशाह को दक्षिण में मराठों से अकेले ही लड़ना पड़ा।

औरङ्गज़ेब और दक्षिण के मुसलमानी राज्य—औरङ्गज़ेब का राज्य दूर तक फैला हुआ था। परन्तु दक्षिण के मुसलमानी राज्य बीजापुर और गोलकुंडा अभी मुगल-राज्य के बाहर थे। बादशाह उन्हें जीतना चाहता था। सन १६८६ ई० में उसने बीजापुर पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। इसके बाद गोलकुंडा के साथ लड़ाई हुई। गोलकुंडा का सुलतान अबुलहसन बड़ी वीरता से लड़ा। परन्तु रिश्वत देकर मुगल-सेना किले के अन्दर घुस गई। अबुलहसन हार गया और सन १६८७ ई० में गोलकुंडा भी मुगल-राज्य में मिला लिया गया।

इन राज्यों के मिल जाने से मुगल-साम्राज्य का विस्तार तो बढ़ गया परन्तु इसका नतीजा अच्छा न हुआ। ये दोनों राज्य मराठों को रोके रहते थे। अब वे बेखटके चारों तरफ लूट-मार करने लगे।

मराठों के साथ अन्तिम युद्ध—शिवाजी की मृत्यु के बाद उसका बेटा शम्भूजी महाराष्ट्र का राजा हुआ। उसे पकड़ कर औरङ्गज़ेब ने कत्ल करा दिया और उसके बेटे शाहू को दिल्ली में [illegible] दी। परन्तु इससे मराठों की शक्ति कम न हुई। उन्होंने फिर लड़ाई शुरू कर दी। सन १७०७ ई० में औरङ्गज़ेब दक्खिन में मरा और उसका [illegible]।

फिर भी लड़ाई होती रही। मुग़ल-सेना ने बड़ी मुसीबतें उठाईं। अकाल और प्लेग से हज़ारों आदमी मर गये।

औरङ्गजेब मरते दम तक मराठों को न दबा सका। इसके कई कारण थे। मराठे खुल्लम-खुल्ला मैदान मे कभी नहीं लड़ते थे। वे रूखी-सूखी रोटी खाकर अपने टट्टुओं पर चढ़े हुए दुर्गम स्थानों मे मुगलों को हैरान करते थे। मुगल ऐश-आराम चाहते थे। न वे इतना परिश्रम कर सकते थे और न इतना कष्ट उठा सकते थे। मराठों में एकता थी। वे एक होकर अपनी जाति की उन्नति के लिए लड़ते थे। मुग़ल-सेना मे बहुत-सी जातियों के लोग थे। इनका सगठन अच्छा न था। बादशाह को अपने अफ़सरों का विश्वास नहीं था। इसलिए वे अपने काम मे ढील-ढाल करते थे।

औरङ्ग़ज़ेब के अन्तिम दिन—औरङ्गजेब अब बहुत बूढ़ा हो गया था। उसकी अवस्था इस समय ९० वर्ष की थी। सन् १७०७ ई० में अहमदनगर मे उसका देहान्त हो गया।

औरङ्गजेब को मरते समय बड़ा दुःख उठाना पड़ा। राज्य में चारों तरफ़ उपद्रव होने लगे। मुग़ल-सेना दुर्बल हो गई। बादशाह के बेटे उसके पास तक न आये। किसी ने उसका विश्वास नहीं किया।

राज्य-प्रबन्ध—राज्य का विस्तार बढ़ने से सूबों की संख्या २१ हो गई। इतने बड़े राज्य का प्रबन्ध करना कठिन हो गया। बादशाह ने सब अधिकार अपने हाथ मे ले लिया। हिन्दू सरकारी नौकरियों से अलग कर दिये गये और उन पर जज़िया लगाया गया। राज्य की आर्थिक दशा बिगड़ गई। लगान वसूल नहीं हुआ।

दिल्ली के आस-पास जाट अपने हाथ-पैर फैलाने लगे। सूबेदारों ने कर देना बन्द कर दिया। साम्राज्य में चारों तरफ अशान्ति फैल गई।

पेशवा-वंश का उदय—बालाजी विश्वनाथ (सन् १७१४-२० ई०)—तुम पहले पढ़ चुके हो कि औरंगजेब के मरने के बाद शाहू को छुटकारा मिला था। उसने सतारा में अपना राज्य स्थापित किया। शाहू मुगल-दरबार में रहने के कारण आरामतलब हो गया था। उसने राज्य का काम अपने ब्राह्मण मन्त्री के सुपुर्द कर दिया और सन् १७१३ ई० में उसे पेशवा बना दिया।

फर्रुखसियर और सैयद भाइयों की लड़ाई में बालाजी विश्वनाथ ने सैयदों का पक्ष लिया था। इसके बदले में उसे दक्षिण में चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार मिल गया। सन् १७२० ई० में बालाजी की मृत्यु हो गई।

बाजीराव (सन् १७२०-४० ई०)—बाजीराव बड़ा योग्य और वीर पुरुष था। उसके समय में मराठे दूर तक धावा करने लगे। उन्होंने मालवा और [illegible] को छीन लिया और गुजरात को भी जा दबाया। निजाम ने भी डरकर बाजीराव के साथ सुलह कर ली।

[illegible]

बालाजी बाजीराव (सन् १७४०-६१ ई०)—[illegible]

भाई राघोवा ने पञ्जाब पर हमला किया और लाहौर को लूटा। पेशवा ने स्वयं मैसूर और कर्नाटक को तबाह कर डाला। सन् १७६० ई० में चम्बल से गोदावरी तक और अरब सागर से बङ्गाल की खाड़ी तक मराठो की तूती बोलने लगी।

पानीपत की तीसरी लड़ाई (सन् १७६१ ई०)—मराठों का ऐसा ज़ोर था। उधर दिल्ली में मुहम्मदशाह की मृत्यु के बाद उसका बेटा अहमदशाह बादशाह हो गया था। वह भी थोड़े दिन बाद मारा गया और आलमगीर द्वितीय गद्दी पर बैठा। साम्राज्य खोखला हो रहा था। मराठे सिन्ध नदी तक चौथ और सरदेशमुखी वसूल कर रहे थे। इतने में एक दूसरी मुसीबत आ खड़ी हुई।

फ़ारस मे नादिरशाह के मरने के बाद अहमदशाह अब्दाली नामक एक वीर योद्धा बादशाह हो गया था। उसने सन् १७५९ ई० में पञ्जाब पर हमला किया और अपने बेटे को वहाँ का सूबेदार नियत किया। मराठो ने लाहौर को खूब लूटा। इस पर अब्दाली ने लड़ाई की तैयारी की। मराठे अपनी सेना लेकर पानीपत के मैदान में आगये। उनका नेता सदाशिवराव भाऊ था। मराठे हार गये और उनके बड़े-बड़े सर्दार लड़ाइ मे मारे गये। सारे महाराष्ट्र में कोलाहल मच गया। पेशवा भी थोड़े दिन बाद इसी रंज में मर गया।

लड़ाई का परिणाम—इस लड़ाई ने मराठा-संघ की जड़ हिला दी और दिल्ली-साम्राज्य की रही-सही प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया। अब मुगल-राज्य के पनपने की कोइ आशा न रही। मराठों और मुगलों क कमज़ोर होने से यूरोप की जातियों को अपना प्रभुत्व

जमाने का मौका मिला। बंगाल में अंगरेजों की धाक जम गई और अब वे अपना राज्य स्थापित करने की कोशिश में लग गये।

मुगल-राज्य का अन्त—पानीपत की लड़ाई के बाद मुगल-राज्य नाम के वास्ते रहा। अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह ने सन् १८५७ ई० के गदर में विद्रोहियों का साथ दिया। वह कैद कर रंगून भेज दिया गया और मुगल-राज्य की इतिश्री हो गई।

अभ्यास

१—सैयद भाई कौन थे? उनके विषय में क्या जानते हो?

२—मुहम्मदशाह के समय में दिल्ली-साम्राज्य की क्या दशा थी?

३—नादिरशाह के हमले का वर्णन करो। इसका दिल्ली-साम्राज्य पर क्या प्रभाव पड़ा?

४—मराठों ने किस तरह अपनी ताकत बढ़ाई? बालाजी बाजीराव के समय में मराठों का राज्य कहाँ तक था?

५—पानीपत की तीसरी लड़ाई कब और क्यों हुई? इसका क्या नतीजा हुआ?

अध्याय ३०

मुग़ल-काल की सभ्यता

मुग़ल-शासन—मुग़लों ने ही सबसे पहले इस बात का अनुभव किया कि मुसलमानी राज्य की जड़ हिन्दुस्तान में कभी मज़बूत नहीं हो सकती जब तक हिन्दू-धर्म को आदर से न देखा जाय। उन्होंने हिन्दुओं को अपनाया, उन्हें बड़े-बड़े ओहदे दिये। हिन्दू भी पक्के राजभक्त हो गये। उन्होंने बल्ख, बदख्शाँ, काबुल, कन्दहार में जाकर साम्राज्य के लिए अपना ख़ून बहाया। मुग़लों ने बाहर के साथ सम्बन्ध किया और देश में एक शासन स्थापित भाव पैदा किया। हिन्दू-मुसलमान सब एक छत्र के नीचे और एक ही बादशाह को अपना सम्राट् मानने लगे।

मुग़ल-शासन के दो भाग थे—एक तो केन्द्रिक शासन, दूसरा प्रान्तीय शासन। केन्द्रिक शासन बादशाह और उसके बड़े-बड़े अफ़सरों के हाथ में था। इसका काम बहुधा राजधानी में होता था। प्रान्तों (सूबा) में सूबेदार शासन करते थे। प्रान्तीय शासन की ख़ूब देख-भाल रहती थी। राज्य के कर्मचारी, जो 'वाक़अनवीस' कहलाते थे, सूबों का हाल लिख-लिखकर बादशाह के पास भेजते थे। शासन में हिन्दू-मुसलमान सबको ओहदे दिये जाते थे। प्रजा को अपना धर्म पालने की स्वतन्त्रता थी। बहुत-से बुरे रवाज बन्द कर दिये गये थे। परन्तु औरंगज़ेब के समय में यह नीति

उजड़ गई। तब भी हिन्दू-मुसलमान बहुत-सी बातों में एक दूसरे का अनुकरण करने लगे।

शिल्प-कला, आलेख्य और संगीत-विद्या की उन्नति—मुग़लों के समय में हमारे देश में बड़ी सुन्दर इमारतें बनीं। इनका हाल हम पहले लिख चुके हैं। परन्तु यहाँ पर एक बात बता देना आवश्यक है। फारस इस काल में एशिया में कारीगरी के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ की कारीगरी का भारतीय शिल्पियों और चित्रकारों पर बहुत प्रभाव पड़ा। मुग़लों से पहले जो इमारतें बनी थीं वे विशाल और मजबूत थीं। मुग़लों ने सौन्दर्य और सजावट की तरफ़ अधिक ध्यान दिया। पहले लाल पत्थर काम में लाया जाता था। अब संगमरमर का अधिक प्रयोग होने लगा। पच्चीकारी का काम भी ऊँचे दर्जे का हुआ जैसा कि ताजमहल में पाया जाता है। गुम्बजों के बनाने में कारीगरों ने अपना कौशल दिखलाया। विशाल इमारतें भी बनीं। फतहपुर सीकरी का बुलन्द दरवाज़ा भारत की प्रसिद्ध इमारतों में से है। औरंगज़ेब के समय में शिल्प-कला की अवनति हो गई। उसने थोड़ी-सी मस्जिदों को छोड़कर और इमारतें नहीं बनवाईं।

चित्रकारी का भी मुग़ल-काल में [illegible] हुआ। हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर [illegible]

बहादुरशाह

नादिरशाह

अहमदशाह अब्दाली

बालाजी बाजीराव

और कहता था कि मैं एक नज़र डालकर ही बता सकता हूँ कि चित्र किस चित्रकार का बनाया हुआ है।

मुग़ल-काल में दस्तकारी की भी बड़ी उन्नति हुई। चमड़े, धातु, लकड़ी, मिट्टी, काग़ज़, शीशे का बढ़िया काम तैयार हुआ। कपड़े भी अनेक प्रकार के बनने लगे। दुशाले और क़ालीन ऐसे सुन्दर बने कि एशिया के दूसरे देशों में जाने लगे।

गान-विद्या का मुग़लों ने अच्छा आदर किया। अकबर के दर्बार में कई प्रसिद्ध गायक थे। तानसेन सबका शिरोमणि था। जहाँगीर और शाहजहाँ को भी गाना प्रिय था। खुद भी हिन्दी में ग़ज़ल गाता था और रात को सोने से हमेशा गाना सुनता था। औरंगज़ेब गाने-बजाने को नापसन्द करता था। परन्तु ऐसा होने पर भी संगीत-विद्या की उन्नति में अधिक रुकावट न हुई।

साहित्य—मुग़ल-बादशाह साहित्य से प्रेम करते थे। एशिया के देशों के प्रसिद्ध विद्वान् और कवि उनके दर्बार में रहते थे। कवियों में फ़ैज़ी, नज़ीरी, उर्फ़ी आदि ने उच्च कोटि की कवितायें कीं जो अब तक पढ़ी जाती हैं। इतिहास की मुग़ल-काल में अच्छी उन्नति हुई। बाबर ने स्वयं अपना जीवन-चरित्र तुर्की भाषा में लिखा और उसकी बेटी गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा में हुमायूँ के समय की घटनाओं का वर्णन किया है। अकबर के शासन-काल में अबुलफ़ज़्ल ने आईने-अकबरी, अकबरनामा अब्दुलक़ादिर बदायूनी ने मुन्तख़ब-उत्तवारीख़, निज़ामुद्दीनअहमद ने तबक़ात अकबरी आदि पुस्तकें लिखीं। रामायण, महाभारत, गीता आदि संस्कृत के ग्रन्थों का

फारसी में अनुवाद कराया गया। जहाँगीर ने भी बाबर की तरह अपना जीवन-चरित्र फारसी में लिखा और विद्वानों का आदर किया। फ़िरिश्ता ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक गुलशनइब्राहीमी उसी के समय में लिखी। औरंगजेब किसी को इतिहास नहीं लिखने देता था। परन्तु तो भी उसके शासन-काल में कई ग्रन्थ लिखे गये जिनमें मुहम्मद हाशिम उर्फ़ ख्वाफ़ीख़ाँ का 'मुन्तख़बउल्लुबाब' अधिक प्रसिद्ध है।

अकबर के समय से हिन्दी-भाषा की उन्नति होने लगी। संस्कृत का प्रभाव कम हो गया। जनता को धर्म की शिक्षा देने के लिए आचार्यों ने भाषा ही का प्रयोग किया। गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस और विनयपत्रिका, सूरदास का सूरसागर हिन्दी-भाषा में ही लिखे गये। इनके अलावा केशवदास, देव, भूषण आदि और भी कवि हुए जिनकी कीर्ति अब तक अमर है।

मुसलमान भी हिन्दी-भाषा में कविता करते थे। अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना के दोहे अब तक पढ़े जाते हैं। रसखान, नज़ीर आदि ने भी अपनी सुन्दर रचनाओं से हिन्दी-साहित्य का भण्डार बढ़ाया और हिन्दू-मुसलमानों में एक-भाव का विचार करने का प्रयत्न किया। [illegible] उर्दू-भाषा की उत्पत्ति हुई। उर्दू [illegible] है। इसका अर्थ है — [illegible] [illegible]

सामाजिक दशा—मुगल सम्राट् बड़े ठाट बाट से रहते थे। लाखों रुपया खान-पीने, आभूषण और जवाहरात में खर्च होता था। अकबर खुद सादगी से रहता था। परन्तु जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में दर्बार की शान-शौकत अधिक बढ़ गई। इस शान को बढ़ाने के लिए शाहजहाँ ने लाखों रुपया खर्च कर डाला। औरंगज़ेब ने यह राजसी ठाट कम कर दिया परन्तु इसका बिलकुल बन्द होना तो असम्भव ही-सा था।

बड़े बड़े अमीर और सर्दार राज्य से खूब रुपया पाते थे। परन्तु नियम था कि मरने के बाद अमीरों की दौलत उनके बेटों को नहीं मिलती थी। वह राज्य की हो जाती थी। इसलिए अमीर लोग रुपया नहीं बचाते थे। इसका एक और भी कारण था। रुपये को किसी कारबार में लगाने का जरिया ही न था। बैंक भी नहीं थे। व्यापार भी कम था। अधिकांश आमदनी सोने-चाँदी के गहने और जवाहरात ख़रीदने में खर्च होती थी। अमीरों के यहाँ पाँच-पाँच सौ नौकर रहते थे। लाखों रुपया अय्याशी में खर्च होता था।

किसानों की हालत बहुत अच्छी न थी। कारीगरों का भी काफ़ी आदर न था। बाल-विवाह का रवाज मुसलमानों में भी हो चला था। औरंगज़ेब के शासन-काल में अमीरों की हालत ख़राब हो गई, ऐश-आराम ने उन्हें निकम्मा बना दिया। उनके लड़कों को उचित शिक्षा न मिली। ज्योतिषियों का इतना प्रभाव बढ़ गया कि उनसे बिना पूछे कोई काम शुरू नहीं किया जाता था। परन्तु साधारण मनुष्यों की दशा इतनी बुरी न थी। उनमें धार्मिक जोश भी था और उनके सदाचार का आदर्श ऊँचा था।

लाभ का ध्यान रहता था। उनकी स्वार्थपरता, चालाकी और दलबन्दी ने साम्राज्य में फूट फैला दी। देश में अशान्ति फैलने से राज्य की आर्थिक दशा भी बिगड़ गई।

औरंगज़ेब के उत्तराधिकारी निकम्मे थे। उनके आलस्य और अयोग्यता के कारण शासन-प्रबन्ध दिन पर दिन ख़राब होने लगा। देश में राजविद्रोह की आग धधकने लगी। बाहरी आक्रमणों के लिए रास्ता साफ़ हो गया। जहाज़ी बेड़ा न होने के कारण मुग़ल यूरोप के लोगों को भी न रोक सके। वे भी देश में घुसकर नोच-खसोट करने और अपना राज्य बनाने की इच्छा करने लगे। बड़े साम्राज्य धर्म, न्याय, सदाचार और बल से कायम रहते हैं। इनका अभाव होने पर मुग़ल-साम्राज्य के पतन को कौन रोक सकता था?

अभ्यास

१—मुग़ल-शासन में भारत को क्या लाभ हुआ?
२—केन्द्रिक शासन प्रान्तीय शासन की किस तरह देख-भाल करता था?
३—मुग़ल-काल में शिल्प-कला, चित्रकारी और गान-विद्या की क्या दशा थी? संक्षेप में वर्णन करो।
४—मुग़ल-काल की इमारतों की क्या विशेषता है?
५—मुग़लों के समय में साहित्य की अच्छी उन्नति हुई। इस कथन की पुष्टि करो।
६—अकबर के समय से शाहजहाँ के समय तक हिन्दी-साहित्य की क्या हालत रही? इस समय के प्रसिद्ध हिन्दी-कवियों का वर्णन करो।
७—उर्दू का आरम्भ कब से हुआ? उसका अधिक प्रचार होने के कारण बताओ।
८—मुग़ल-साम्राज्य में अमीरों और किसानों की क्या हालत थी?
९—मुग़ल-राज्य के पतन के क्या कारण हैं।

पेशवाओं का वंश
(१) बालाजी विश्वनाथ
चिमनाजी अप्पा
सदाशिवराव भाऊ
(पानीपत की तीसरी लड़ाई में मारा गया)
(२) बाजीराव
(१७२०–४०)
(३) बालाजी बाजीराव
(१७४०–६१)
रघुनाथराव (राघोबा)
विश्वासराव
(४) माधोराव
(१७६१–७२)
(५) नारायणराव (१७७२–७३)
(६) माधोराव नारायण (१७७४–९५)
(आत्महत्या की)
(७) बाजीराव द्वितीय (१७९६–१८१८)
नाना साहब (गोद लिया हुआ)
चिम्मनजी अप्पा